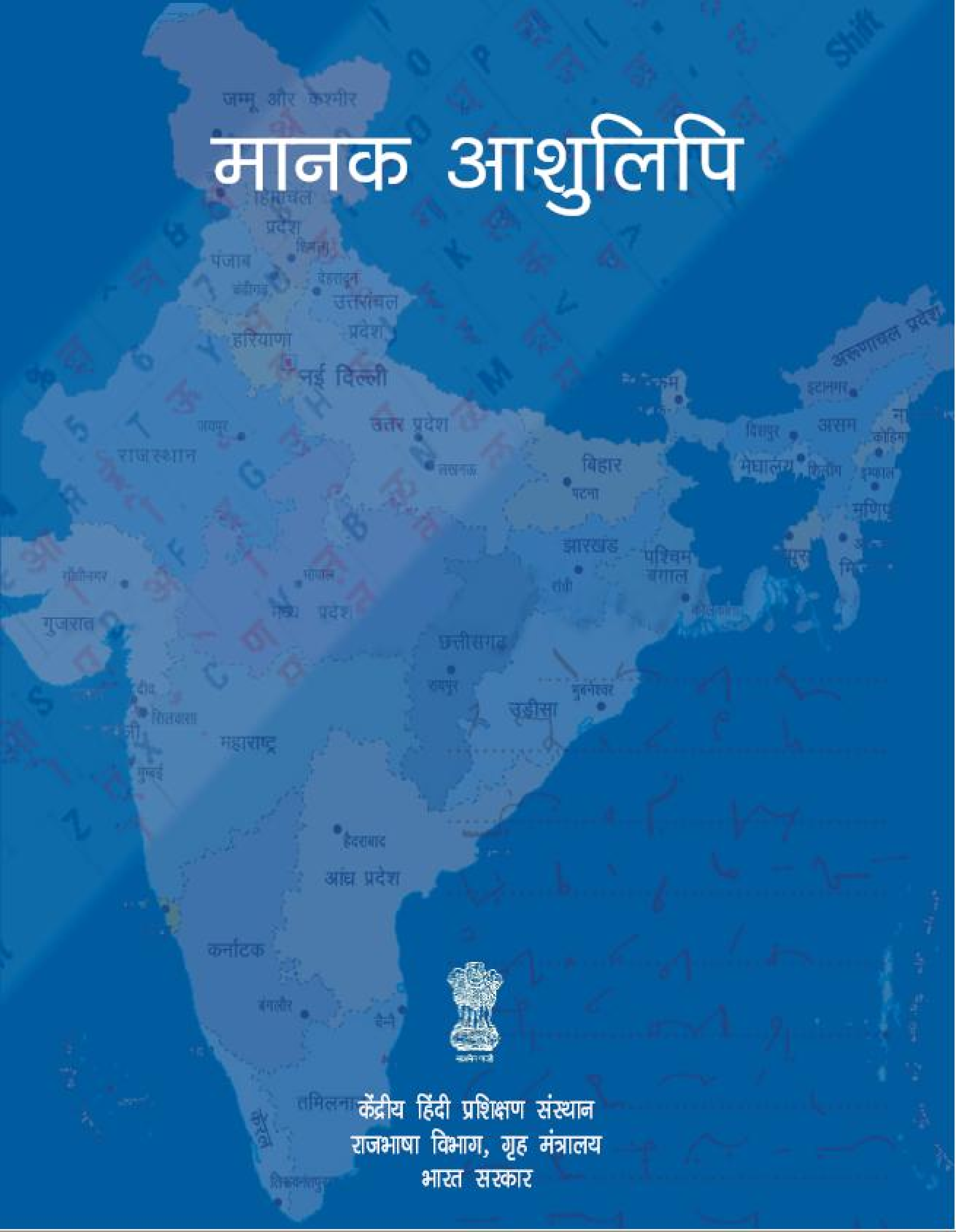

मानक आशुलिपि

केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय
भारत सरकार

मानक आशुलिपि

(संशोधित संस्करण)

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग
केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान
नई दिल्ली

प्रस्तावना

'मानक आशुलिपि' पाठ्य पुस्तक की संरचना से लेकर अब तक इसके सात संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं जिनमें से कुछ संस्करणों में आंशिक संशोधन के अलावा सभी संस्करण केवल पुनर्मुद्रित ही थे। 'मानक आशुलिपि' पाठ्य पुस्तक में आवश्यक संशोधन, परिवर्तन और परिवर्धन कर इसे समसामयिक परिदृश्य में तैयार एवं पुनर्मुद्रित करवाया गया है। इस उद्देश्य के लिए इस क्षेत्र से जुड़े संयुक्त निदेशकों, उप निदेशकों और सहायक निदेशकों की एक समिति गठित की गई थी, जिसके सम्मिलित प्रयास से यह पाठ्य पुस्तक तैयार की गई है।

केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान/हिंदी शिक्षण योजना के हिंदी आशुलिपि प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के लिए निर्धारित पाठ्य पुस्तक 'मानक आशुलिपि' के इस नए संस्करण को संशोधित रूप में प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है।

पुस्तक में आशुलिपि के सभी सिद्धांतों, उदाहरणों और अभ्यासों को नया रूप देने का प्रयास किया गया है ताकि पाठक इसे सहज रूप में ग्रहण कर सकें। इस संस्करण में पाठ्य पुस्तक के साथ ही इसकी आशुलिपि कुंजी (Key) को भी समाहित किया गया है।

इस पुस्तक में सभी अभ्यासों, पत्राचार, शब्द चिह्नों, संक्षिप्त संकेतों के अभ्यासों एवं दिए गए प्रश्न पत्रों का मूल सिद्धांतों के अनुसार अनुवाद किया गया है।

पुस्तक के इस संस्करण को तैयार करने के लिए गठित समिति के सभी सदस्य सर्वश्री सोनेलाल कौल, एम० एस० कठैत, चंद्रकांत बडोला, देवकीनंदन बिष्ट, आर० सी० भट्ट, दिनेश चंद्र, राकेश कुमार वर्मा, स्व० श्री मुकेश कुमार ने बहुत अच्छा काम किया। वे साधुवाद के पात्र हैं। सहायक निदेशकों सर्वश्री चमन सिंह, (श्रीमती) उषा शर्मा, अरुण कुमार चौहान तथा पृथ्वीराज जायसवाल का सहयोग भी उल्लेखनीय रहा। इस पुस्तक के प्रकाशन में विभिन्न स्तरों पर समन्वय कार्य के लिए केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान के श्री नरेन्द्र कुमार प्रसाद, सहायक निदेशक का सराहनीय योगदान रहा।

मुझे आशा है कि इस नए संशोधित संस्करण के प्रकाशन से हिंदी आशुलिपि सीखने वाले प्रशिक्षार्थियों को एक सरल, सुबोध और परिपूर्ण पाठ्य पुस्तक उपलब्ध होगी। संशोधित मानक आशुलिपि पुस्तक के संबंध में आपके सुझावों का स्वागत है।

(डॉ० जयप्रकाश कर्दम)
निदेशक
E-mail: dirchti-dol@nic.in

नई दिल्ली
दिनांक : अप्रैल, 2013

प्राक्कथन

हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के लिए सामान्य आशुलिपि विकसित करने के लिए 1965 में भारत सरकार द्वारा एक समिति गठित हुई। इस समिति के निम्नलिखित सदस्य थे:-

(1) काका साहेब कालेलकर – **अध्यक्ष**

(2) डॉ॰ बाबू राम सक्सेना

(3) प्रो॰ एन॰ एस॰ अग्रवाल

(4) श्री के॰ एन॰ गोविल

(5) डॉ॰ एस॰ एम॰ कत्रे

(6) श्री एल॰ एस॰ चंद्रकांत – **सदस्य-सचिव**

2. समिति ने यह निश्चय किया कि हिंदी आशुलेख की वर्तमान पद्धतियों का निम्नलिखित मानदण्डों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन किया जाए और इस अध्ययन में दक्कन कॉलेज द्वारा किए गए हिंदी के रूप में ध्वनि विश्लेषण का ध्यान रखा जाए:-

(1) ध्वनियों का अधिकाधिक समावेश

(2) संकेतों की उपयुक्तता

(3) आशुलेखन में सरलता और स्पष्टता

(4) सीखने की सरलता

(5) याद रखने की सरलता

(6) शब्दों और वाक्यांशों को लिखने की सरल पद्धति

3. वर्तमान पद्धतियों के मूल्यांकन और उन्हें आदर्श पद्धति बनाने के संबंध में सुझाव देने का कार्य सचिवालय प्रशिक्षण विद्यालय, गृह मंत्रालय को सौंपा गया। सचिवालय प्रशिक्षण विद्यालय ने हिंदी आशुलिपि की वर्तमान प्रणालियों का अध्ययन और विश्लेषण करके अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसके आधार पर विशेष समिति ने यह मानक आशुलिपि स्वीकृत की है। इसे भारत सरकार का भी अनुमोदन प्राप्त हो चुका है। पुस्तिका में दी गई मानक आशुलिपि पद्धति प्रमुख रूप से अंग्रेजी पिटमैन प्रणाली पर आधारित है। हिंदी की अधिकांश वर्तमान प्रणालियां भी पिटमैन प्रणाली पर ही आधारित हैं। सरकारी कार्यालयों में अंग्रेजी आशुलिपिक पिटमैन प्रणाली से परिचित हैं। प्रस्तुत मानक आशुलिपि से उन्हें प्रशिक्षण प्राप्त करने में सुविधा होगी।

4. इस विषय में क्षेत्रीय भाषाओं के लिए मानक पद्धति को यथोचित परिवर्तन करके अपनाना अगला कदम होगा। इस ओर ध्यान दिया जा रहा है।

5. इस कार्य में हमें सचिवालय प्रशिक्षण विद्यालय के निदेशक और उनके अधीनस्थ अधिकारियों का सहयोग तथा विशेषज्ञ समिति के सदस्यों का अमूल्य परामर्श और मार्गदर्शन मिला है। इसके लिये हम आभारी हैं। वर्तमान हिंदी आशुलिपि प्रणालियों के प्रणेताओं और आशुलिपि के क्षेत्र में कार्य करने वाले अन्य सज्जनों ने भी अपने बहुमूल्य सुझाव भेज कर हमारी बहुत सहायता की है, हम उन्हें भी धन्यवाद देना चाहते हैं।

6. पाठकों और आशुलिपि विशेषज्ञों से अनुरोध है कि यदि मानक आशुलिपि के संबंध में उनके कोई रचनात्मक सुझाव हों, तो हमें भेजने की कृपा करें। इन पर विचार किया जाएगा और यदि आवश्यक हुआ तो पुस्तक के अगले संस्करण में उनका समावेश किया जाएगा।

ए॰ चन्द्रहास,
निदेशक,
केंद्रीय हिंदी निदेशालय

दिल्ली:
दिसंबर, 1967

प्रशिक्षार्थियों के लिए निर्देश

हिंदी आशुलिपि विज्ञान एक ऐसा विषय है, जिसमें भाषा के सभी अवयव अर्थात ध्वनि, उच्चारण, वर्ण (स्वर और व्यंजन), शब्द, अर्थ तथा वाक्य आदि समाहित रहते हैं। अत: जिस भाषा की भी आशुलिपि सीखें, सर्व प्रथम उस भाषा का वांछित ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है। किसी भाषा के ज्ञान के लिए उसकी ध्वनियों, उच्चारण, वर्तनी, शब्दों के सही प्रयोग के साथ-साथ उनके अर्थ को समझना भी महत्वपूर्ण है। आशुलेखन के बाद उसके शुद्ध लिप्यंतरण करने की क्षमता ही एक अच्छे आशुलिपिक/रिपोर्टर की पहचान है। इसके लिए निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान देना आवश्यक है।

1. **भाषा** – आशुलिपिक/रिपोर्टर का मुख्य कार्य गति से आशुलेखन के बाद उसका तुरंत लिप्यंतरण करना है और यह कार्य गति और शुद्धता से तभी किया जा सकता है जब संबंधित भाषा के वाक्य-विन्यास, अर्थ, वर्तनी आदि का पूरा ज्ञान हो। अत: जिस भाषा की भी आशुलिपि आप सीख रहे हैं उस भाषा में दक्षता बढ़ाने का निरंतर प्रयास करें। इसके लिए अच्छी पुस्तकों का अध्ययन आवश्यक है। पुस्तक में आए सभी शब्दों के संदर्भ सहित अर्थ को समझें। शब्दों के उच्चारण पर ध्यान देने के लिए आप उस भाषा के जानकार के समक्ष उच्चारण-वाचन का अभ्यास कर सकते हैं अथवा अपने प्रशिक्षक से सहायता ले सकते हैं। आशुलिपि पूरी तरह भाषा के ध्वनि विज्ञान पर आधारित है, जिसमें उच्चारण का बहुत महत्व है। भारतीय भाषाओं में वर्तनी को रटने की व्यवस्था नहीं है। वर्तनी की शुद्धता पूर्णतया उच्चारण पर ही निर्भर करती है। सही उच्चारण से ही किसी शब्द की वर्तनी को ठीक प्रकार से समझा जा सकता है।

2. **आशुलिपि सिद्धांत** – आशुलिपि के सिद्धांतों को पूरी तरह समझते हुए उनके प्रयोग में दक्षता लाने के लिए उनका अध्ययन करने के साथ-साथ व्यावहारिक अभ्यास भी करें। इसके लिए पुस्तक में दिए गए उदाहरणों को बार-बार दोहराना (लिखना और पढ़ना) आवश्यक है। जब तक सभी सिद्धांतों को अपनाने में व्यावहारिक दक्षता प्राप्त न हो जाए, तब तक अच्छी गति से आशुलेखन और उसके लिप्यंतरण में सफलता मिलना कठिन है। मानक आशुलिपि सिद्धांतों में एक ही प्रकार के ध्वनि-वर्ग के अक्षरों/रेखाओं में अंतर करने के लिए उन्हें गहरा अथवा हल्का तथा कहीं-कहीं काट द्वारा दर्शाया गया है। आरंभ से ही हमें गहरी और हल्की रेखाएं लिखने तथा उन्हें काट द्वारा दर्शाने का अभ्यास करना चाहिए। उच्च-गति पर आने के बाद काट अथवा गहरा-हल्का करने की अधिक आवश्यकता नहीं पड़ती। वाक्य विन्यास में सार्थक शब्द/ध्वनि का स्वत: ही पता चल जाता है।

3. **आशुलिपि रेखाक्षरों में समानता** – आशुलिपि सीखते समय प्रारंभ से ही प्रयास करें कि सभी रेखाक्षरों की लंबाई समान रहे तथा उनकी लिखने की दिशा और कोण का विशेष रूप से ध्यान रखा जाए। गहरी और हल्की रेखाएं बनाने का प्रयास भी आरंभ से ही करना चाहिए। शब्द के आरंभ और अंत में आने वाले स्वरों के लिए स्वर चिह्न लगाने का अभ्यास भी शुरू से ही करना आवश्यक है ताकि आशुलेख को पढ़ने में असुविधा न हो।

4. शब्द चिह्न और शब्दाक्षर – प्रत्येक भाषा में कुछ शब्द बार-बार अर्थात् बहुतायत से प्रयुक्त होते हैं तथा उनके रेखाक्षर अन्य अनेक शब्दों के रेखाक्षरों के समान बनते हैं जिस कारण जहां एक ओर उन्हें लिखने में अधिक समय लगता है वहीं दूसरी ओर समान रेखाक्षरों के कारण भ्रांति भी होती है। इस असुविधा से बचने के लिए आशुलिपि में इनके लिए निश्चित चिह्न बनाए गए हैं जिन्हें शब्द-चिह्न कहते हैं। इसी प्रकार ध्वनि के आधार पर लिखते समय अनेक साहित्यिक, तकनीकी और वैज्ञानिक शब्दों के रेखाक्षर लंबे तथा अटपटे बनते हैं और उन्हें गति से लिखने में असुविधा भी होती है। ऐसे शब्दों को लिखने के लिए शब्द की मुख्य ध्वनियों के आधार पर उनके लिए निश्चित रेखाक्षर बनाए गए हैं जिन्हें शब्दाक्षर कहते हैं। आशुलिपि लिखने में शब्द-चिह्न और शब्दाक्षर एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अतः शुद्धता और गति से लिखने के लिए इन शब्द-चिह्नों और शब्दाक्षरों का नियमित अभ्यास आवश्यक है।

5. शीघ्र याद करने की कला–आशुलिपि उच्चारण पर आधरित है। गति से लिखना तभी संभव होगा जब आशुलिपिक/रिपोर्टर प्रत्येक शब्द के उच्चारण को ठीक प्रकार समझे। अतः अभ्यास करते समय यह आवश्यक है कि आप स्वयं भी शब्द को मुंह से उच्चारित करते हुए लिखें। उच्चारित करते समय इतनी ध्वनि अवश्य निकले कि वह आपके कान तक पहुंचे। इससे आपकी लेखनी और ध्वनि में सामंजस्य स्थापित होता है और आप गति से आशुलिपि लिखने में सक्षम होते हैं।

6. लेखन सामग्री – आशुलिपि लिखते समय आरंभ से ही पैंसिल का प्रयोग करना चाहिए ताकि हल्के और गहरे रेखाक्षरों को लिखने में आसानी हो। पैंसिल को हल्के से पकड़ना चाहिए। अंगूठे, तर्जनी और मध्यमा अंगुलियों से पैंसिल पकड़ना एक अच्छी स्थिति है। आशुलिपि लेखन के लिए निर्मित रिपोर्टर पैंसिल का प्रयोग सुविधाजनक होता है। अच्छी गति से लिखने का अभ्यास हो जाने के बाद आप कलम से भी लिख सकते हैं। नोट-बुक में एक-बार एक ही तरफ लिखना चाहिए क्योंकि बाएं पृष्ठ पर लिखने में असुविधा होती है और रेखाक्षर भी अच्छे नहीं बनते। जब एक तरफ नोट-बुक भर जाए तब दूसरी तरफ लिखना चाहिए। लिखते समय हथेली को नोट-बुक अथवा मेज पर न टिकाएं। इससे लिखने की गति अवरुद्ध होती है।

विषय–सूची

		पृष्ठ संख्या
	प्रशिक्षार्थियों के लिए निर्देश	i-ii
अध्याय–1	व्यंजन (Consonant) रेखाएं	01–04
अध्याय–2	व्यंजन रेखाओं का मेल (Joining)	05–05
अध्याय–3	स्वर (Vowels) संकेत	06–09
अध्याय–4	दो व्यंजनों के बीच स्वर	10–12
अध्याय–5	अनुस्वार, बहुवचन तथा य–व का प्रयोग	13–14
अध्याय–6	शब्द चिह्न एवं विराम चिह्न	15–17
अध्याय–7	वैकल्पिक रेखाक्षर	18–23
अध्याय–8	द्विध्वनिक और त्रिध्वनिक स्वर	24–26
अध्याय–9	स वृत्त (Circle) तथा "सं" का प्रयोग	27–30
अध्याय–10	प्रारंभिक तथा अंतिम बड़ा वृत्त	31–33
अध्याय–11	सर्वनाम तथा विभक्तियों का मेल	34–36
अध्याय–12	वाक्यांश (Phraseography)	37–42
अध्याय–13	व्यंजन "ह" के अन्य प्रयोग तथा अर्ध वृत्त – "व"	43–45
अध्याय–14	स्त–स्तर लूप	46–48
अध्याय–15	प्रारंभिक हुक र तथा ल	49–53
अध्याय–16	अंतिम हुक न, य, व, फ तथा अंतिम बड़ा हुक शन	54–58
अध्याय–17	हुक और वृत्त का मेल	59–62
अध्याय–18	यौगिक व्यंजन (Compound Consonant)	63–65
अध्याय–19	आधा (Halving) करने का नियम	66–69

		पृष्ठ संख्या
अध्याय–20	दुगुना (Doubling) करने का नियम	70–73
अध्याय–21	बिंदु ''कम–काम'', ''कन–कान'' ''तथा'' स्वयं वृत्त	74–75
अध्याय–22	समान रेखाक्षरों में भेद	76–80
अध्याय–23	उपसर्ग एवं प्रत्यय	81–85
अध्याय–24	गति बढ़ाने की विधि	86–90
अध्याय–25	संख्या, मुद्रा, माप, तौल एवं अन्य संकेत	91–94
अध्याय–26	शब्द चिह्नों की समेकित सूची	95–100
अध्याय–27	संक्षिप्त रेखाक्षर	101–105
अध्याय–28	सामान्य पदनाम, विभाग, शहर, महीने तथा दिन	106–111
अध्याय–29	व्यावहारिक आशुलिपि अभ्यास	112–123
अध्याय–30	गति अभ्यास	124–142
	सैद्धांतिक अभ्यासों की कुंजी	143–172

अध्याय – 1

व्यंजन **(Consonant)** रेखाएं

व्यंजन

हिंदी आशुलिपि में व्यंजनों के लिए अलग–अलग रेखाएं निर्धारित की गई हैं। संयुक्त व्यंजन क्ष, त्र और ज्ञ दो ध्वनियों के मेल से बने हैं। अतः आशुलिपि में इनको लिखने के लिए अलग व्यवस्था की गई है। व्यंजन य, व तथा ह को छोड़कर शेष सभी व्यंजनों को लिखने के लिए सीधी अथवा वक्र (Curved) रेखाओं का प्रयोग किया गया है। हिंदी भाषा में व्यंजनों को वर्गों में विभाजित किया गया है। ध्वनि समानता के कारण प्रत्येक वर्ग के सरल रेखा व्यंजनों को एक ही रेखा से प्रदर्शित किया गया है। समान ध्वनि वर्ग के व्यंजनों में अंतर करने के लिए रेखाओं को हल्का **(Light)** या गहरा **(Dark)** किया जाता है अथवा बीच में काट द्वारा दर्शाया जाता है। ध्वनि समानता के कारण ही "र" तथा "ड़" के लिए भी एक ही व्यंजन रेखा ली गई है। व्यंजन रेखाओं को लिखने की दिशा तीर (→) द्वारा दर्शाई गई है, जैसे–

सरल रेखा व्यंजन

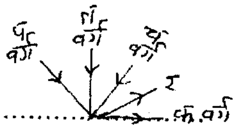

वक्र रेखा व्यंजन

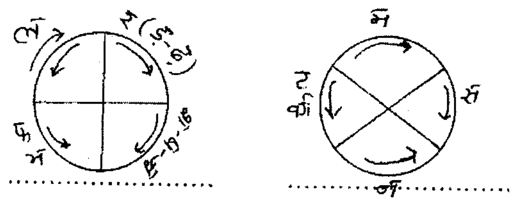

सामान्यतः व्यंजन रेखा की मानक लंबाई 0.75 सेंटीमीटर रखी जानी चाहिए। अभ्यास करते समय इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि सभी व्यंजन रेखाओं की लंबाई बराबर हो ताकि आगे चलकर अधिक गति से लिखने के लिए रेखा को दुगुना तथा आधा करने के नियमों के अनुसार रेखाओं को लिखने में सुविधा रहे। हल्की तथा गहरी व्यंजन रेखाओं में अंतर स्पष्ट होना चाहिए ताकि पढ़ने में अशुद्धि न हो। गहरी वक्र रेखाओं को अकेला लिखते समय इस बात का ध्यान रखा जाए कि पूरी रेखा

समान रूप से गहरी न हो, बल्कि उसके दोनों सिरे पतले हों। गहरी रेखाएं ऊपर को नहीं लिखी जाती हैं।

व्यंजन रेखाओं की स्थिति (सरल रेखाएं)

क–वर्ग (क, ख, ग, घ)	–	बाएं से दाईं ओर धरातल पर 180 डिग्री का कोण बनाती हैं, जैसे क ....
च–वर्ग (च, छ, ज, झ)	–	ऊपर से नीचे की ओर धरातल पर 60 डिग्री का कोण बनाती हैं, जैसे च ....
त–वर्ग (त, थ, द, ध)	–	ऊपर से नीचे की ओर धरातल पर 90 डिग्री का कोण बनाती हैं, जैसे त ....
प तथा ब	–	ऊपर से नीचे की ओर धरातल पर 120 डिग्री का कोण बनाती हैं, जैसे प ....
र–ड़ / ढ़	–	नीचे से ऊपर की ओर धरातल पर 30 डिग्री का कोण बनाती हैं, जैसे र–ड़ .... ढ़..............
ह	–	धरातल पर ऊपर से नीचे की ओर 60 डिग्री और नीचे से ऊपर की ओर 30 डिग्री का कोण बनाती हैं, जैसे ....
य–व	–	धरातल पर नीचे से ऊपर की ओर 30 डिग्री का कोण बनाती हैं, जैसे य .... व..............

व्यंजन रेखाएं

सरल व्यंजन रेखा

क..........ख..........ग..........घ..........च..........छ..........ज..........

झ..........त..........थ..........द..........ध..........प..........ब..........

र-ड़.............. ढ़..............

वक्र व्यंजन रेखाएं

ट ... ठ ... ड ... ढ ... ण(न) ... ङ ...

फ(फ़) ... भ ... म ... र-ड़ ... ढ़ ...

ल ... श-ष ... स ... ज़ ...

हुक या वृत्त युक्त व्यंजन रेखाएं

य ... व ... ह ...

संपूर्ण व्यंजन रेखाएं

क ... ख ... ग ... घ ... ङ ...

च ... छ ... ज ... झ ...

ट ... ठ ... ड ... ढ ... ण ...

त ... थ ... द ... ध ... न ...

प ... फ ... ब ... भ ... म ...

य ... र-ड़ ... ल ... व ... ढ़ ...

श-ष ... स ... ज़ ... ह ...

अभ्यास 1.1

आशुलिपि में लिखकर अभ्यास करें—

र	क	म	ल	स	ह	व	श	झ	ख
ल	ख	ट	ष	ग	न	घ	ग	ज	छ
ड	ढ	ड़	न	द	त	ल	थ	न	प
फ	ब	भ	म	य	र	ढ़	ल	स	ह
व	स	क	श	र	फ	ब	ख	ज	र

अभ्यास 1.2

पढ़ें, लिखें तथा अभ्यास करें—

1)

2) 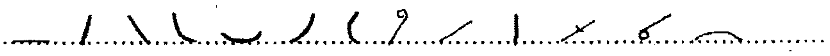

3) 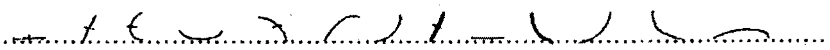

4)

5) 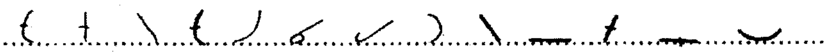

अध्याय – 2

व्यंजन रेखाओं का मेल (**Joining**)

दो या दो से अधिक व्यंजन रेखाओं को मिलाते समय पेंसिल को उठाना नहीं चाहिए। अगली रेखा का आरंभ पिछली रेखा के अंत से होना चाहिए। लिखते समय रेखाओं की दिशा अर्थात्–बाएं से दाएं, नीचे से ऊपर अथवा ऊपर से नीचे का ध्यान रखना अनिवार्य है।

यह भी ध्यान रखा जाए कि व्यंजन रेखाओं को मिलाते समय एक ही ध्वनि वर्ग के एक आधा और एक पूरा व्यंजन एक साथ आ जाएं तो वहां पर मुख्य ध्वनि को लिखा जाता है। जैसे—पक्का–पका किंतु यदि एक आधा और एक पूरा अक्षर एक ध्वनि वर्ग के न हों तो वहां दोनों ध्वनियों को लिखा जाएगा।

अभ्यास 2.1

आशुलिपि में लिखकर अभ्यास करें—

1.	मन	पम	गज	पक	बक	पर	पढ़	फल
2.	जल	कल	मल	नल	चल	पल	मक	घर
3.	पर	चल	कमल	लमक	जनक	लपक	नमक	रहत
4.	ननद	सनद	शपथ	जगत	दमक	चमक	दलक	कप
5.	सनक	मलक	दमक	रपट	भलक	जनक	जप	पनघट

अभ्यास 2.2

पढ़ें, लिखें तथा अभ्यास करें—

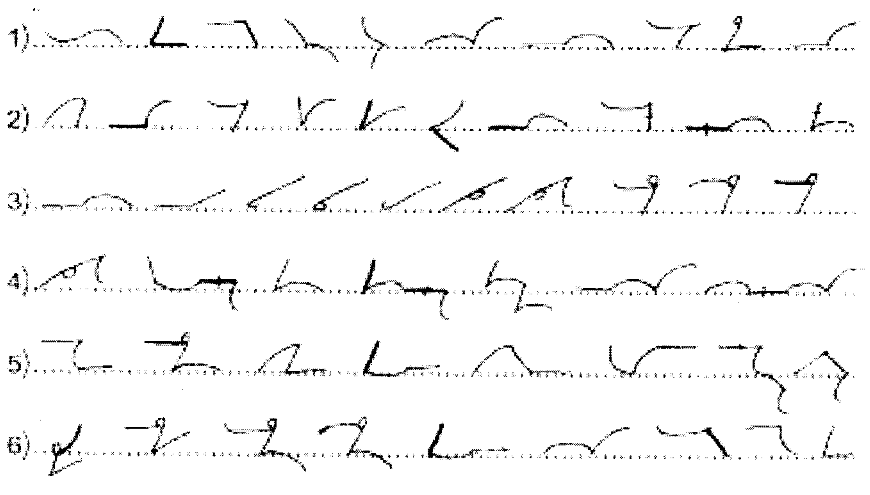

अध्याय – 3

स्वर (Vowels) संकेत

स्वर

मुंह से निकली स्वतंत्र ध्वनि को "स्वर" कहते हैं। हिंदी आशुलिपि में कुल दस स्वर लिए गए हैं जिनमें छः दीर्घ (Long) तथा चार ह्रस्व (Short) हैं।

स्वर संकेत

दीर्घ स्वरों को दर्शाने के लिए गहरे बिंदु (.) तथा गहरे डैश (-) और ह्रस्व स्वरों को दर्शाने के लिए हल्के बिंदु (.) तथा हल्के डैश (-) का प्रयोग किया जाता है।

दीर्घ स्वर

गहरा बिंदु (.) आ ए ई गहरा डैश (-) औ ओ ऊ

ह्रस्व स्वर

हल्का बिंदु (.) ऐ x इ हल्का डैश (-) x अ उ

स्वर स्थान

स्वर संकेतों को दर्शाने के लिए व्यंजन रेखाओं के दोनों ओर तीन–तीन स्थान – प्रथम, द्वितीय और तृतीय, निर्धारित किए गए हैं। स्वर संकेतों में स्थान की गणना रेखा के आरंभ होने के स्थान से की जाती है। नीचे दिए गए विवरण से स्वर स्थानों की स्थिति को समझने में सुविधा होगी।

व्यंजन स्थान

आशुलिपि में स्वरों के अनुसार व्यंजन रेखा को लिखने के भी तीन स्थान निर्धारित किए गए हैं। प्रथम स्थान के स्वर के लिए लाइन से ऊपर, द्वितीय स्थान के स्वर के लिए लाइन पर और तृतीय स्थान के स्वर के लिए लाइन को काटते हुए व्यंजन रेखा लिखी जाती है।

दीर्घ स्वर

स्थान	गहरा बिंदु (.)	गहरा डैश (-)
प्रथम	आ ....·|	औ........‾|
द्वितीय	ए.........·|	ओ.......-|
तृतीय	ई.........|·	ऊ.......|_

ह्रस्व स्वर

	हल्का बिंदु (.)	हल्का डैश (–)
प्रथम	ऐ.........·|	x
द्वितीय	x	अ.......-|
तृतीय	इ.......|....	उ.......|..

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि गहरा बिंदु प्रथम स्थान पर आ द्वितीय स्थान पर ए तथा तृतीय स्थान पर ई स्वर और गहरा डैश प्रथम स्थान पर औ द्वितीय स्थान पर ओ तथा तृतीय स्थान पर ऊ स्वर को दर्शाता है। इसी प्रकार हल्का बिंदु प्रथम स्थान पर ऐ तथा तृतीय स्थान पर इ और हल्का डैश द्वितीय स्थान पर अ तथा तृतीय स्थान पर उ को दर्शाता है। हल्का बिंदु द्वितीय और हल्का डैश प्रथम स्थान पर प्रयुक्त नहीं किया जाता है।

निम्नलिखित तालिका द्वारा भी स्वरों को समझा जा सकता है—

	प्रथम स्थान	द्वितीय स्थान	तृतीय स्थान	प्रथम स्थान	द्वितीय स्थान	तृतीय स्थान
	बिंदु			डैश		
दीर्घ स्वर	आ	ए	ई	औ	ओ	ऊ
ह्रस्व स्वर	ऐ	x	इ	x	अ	उ
उदाहरण						
दीर्घ स्वर	ता	ते	ती	तौ	तो	तू
ह्रस्व स्वर	तै	x	ति	x	अत	तु

व्यंजन रेखा से पहले और बाद के स्वर

पड़ी रेखाओं में ऊपर का स्वर पहले तथा नीचे का स्वर बाद में (व्यंजन रेखा के साथ मिलाकर) पढ़ा जाता है, जैसे–

आग ... इन ... ओम ... गा ... मो ... नू ...

इसी प्रकार ऊपर से नीचे अथवा नीचे से ऊपर को लिखी जाने वाली रेखाओं में बाईं ओर का स्वर पहले और दाईं ओर का स्वर बाद में (व्यंजन के साथ मिलाकर) पढ़ा जाता है, जैसे—

आप ... ओर ... उर ... ता ... रो ... भी ...

शब्द के आरंभ में "अ" आने पर स्वर "अ" का संकेत अवश्य करना चाहिए, जैसे —

अनेक ... अरब ... अधम ... अबला ...

असली ... अमन ... अटल ... अतल ...

किंतु अन्य स्थितियों में व्यंजन रेखा के बाद आने वाले स्वर अ के लिए स्वर चिह्न लगाने की आवश्यकता नहीं होती, जैसे –

कमरा तला पल हवा 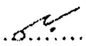

दवा 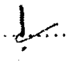 पता लता रज़ा

अभ्यास 3.1

आशुलिपि में लिखकर अभ्यास करें—

1. आग गा एक के ईख औधा ओर रो ऊन नू
2. आज एक ईश और उर जा के को
3. ऐसा इन अब उन आम मा

अभ्यास 3.2

पढ़ें, लिखें तथा अभ्यास करें—

1. 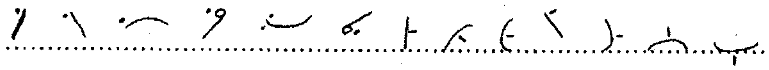
2. 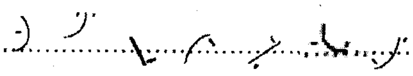

अध्याय – 4

दो व्यंजनों के बीच स्वर

दो व्यंजनों के बीच स्वर आने पर प्रथम तथा द्वितीय स्थान के स्वरों को संबंधित व्यंजन रेखा पर ही उसके निश्चित स्थान पर लगाया जाता है, जैसे –

बाप...... राज...... पेड़...... रोगी......

परन्तु, तीसरे स्थान का स्वर अगली जुड़ने वाली व्यंजन रेखा के पहले **(Preceding)** तृतीय स्थान पर लगाया जाता है ताकि वह उस व्यंजन रेखा से पहले पढ़ा जा सके, जैसे –

जिला...... बीच...... रूप...... भीड़...... चुका......

अभ्यास के लिए प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थानों पर व्यंजन रेखाएं लिखने के कुछ उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं–

प्रथम स्थान रामू...... जाम...... काम...... हाथी......

द्वितीय स्थान पोत...... लोक...... रोग......

तृतीय स्थान वित्त...... ऋतु...... दीप...... पिता......

2. पड़ी व्यंजन रेखाएं (क–वर्ग, म, न तथा ङ) लाइन को काटकर नहीं लिखी जातीं। अतः यदि रेखा शब्द की सभी व्यंजन रेखाएं पड़ी हों तो प्रथम स्थान के स्वर के लिए लाइन से ऊपर तथा द्वितीय अथवा

तृतीय स्थान के स्वर के लिए लाइन पर ही लिखी जाती हैं। रेखाक्षरों पर स्वर उनके स्थान के अनुसार ही (प्रथम, द्वितीय अथवा तृतीय स्थान पर) लगाए जाते हैं, जैसे –

नाना................ नाक................ काम................

मेम................ नोक .... केक ....

मीना................ नीम................ मूक ....

3. पहला स्वर प्रथम स्थान का होने पर पड़ी रेखा के बाद नीचे को लिखी जाने वाली पहली रेखा लाइन से ऊपर, द्वितीय स्थान का स्वर होने पर लाइन पर और तृतीय स्थान का स्वर होने पर लाइन को काटते हुए लिखी जाएगी, जैसे–

काट.............. कोट.............. कीट ....

इसी प्रकार पहला स्वर प्रथम स्थान का होने पर पड़ी रेखा के बाद ऊपर को लिखी जाने वाली रेखा आने पर पड़ी रेखा को प्रथम स्थान के स्वर के लिए लाइन से ऊपर, द्वितीय स्थान के स्वर के लिए लाइन पर और तृतीय स्थान के स्वर के लिए लाइन के नीचे लिखा जाता है, जैसे –

काला.............. कोल.............. किला..............

अभ्यास 4.1

आशुलिपि में लिखकर अभ्यास करें –

1. मीना लेना मेम तोप खाल दही दाम अनेक नीचे
2. मामा काम आदमी पुकार नवाब पति नाती दुम तवा
3. नूपुर बीमारी आलोचना रूप इल्म मानी नीम लोभी
4. कौल मेखला पिरोना फेर फूल नीचता विविध पेड़ लड़का
5. आज़ाद ज़माना फ़ौजी इरादा

अभ्यास 4.2

पढ़ें, लिखें तथा अभ्यास करें–

1. 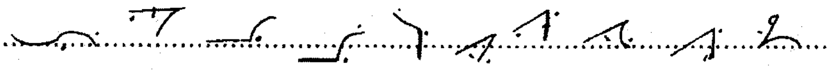

2. 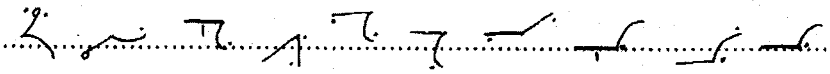

3. 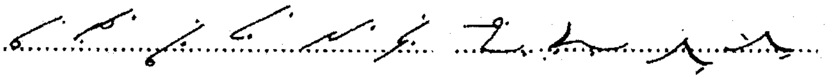

4. 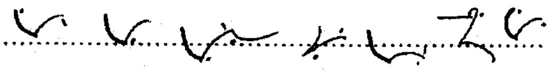

अध्याय – 5

अनुस्वार, बहुवचन तथा य–व का प्रयोग

भाषा में अनुस्वार का बहुत महत्व है। चूंकि आशुलिपि ध्वनि पर आधारित है, अतः अनुस्वार के लिए स्पष्ट व्यवस्था की गई है ताकि किसी प्रकार की भ्रांति न हो।

बिंदु स्वर के साथ अनुस्वार ध्वनि होने पर उसे स्वर के स्थान पर ही एक हल्के डैश से तथा डैश स्वर के साथ अनुस्वार होने पर उसे गहरे डैश से दर्शाया जाता है। डैश को स्वर के निश्चित स्थान पर ही व्यंजन रेखा के समानान्तर लगाया जाता है। इस हल्के और गहरे डैश का प्रयोग सुविधानुसार शब्द के बहुवचन रूप को दर्शाने के लिए भी किया जा सकता है, जैसे–

हल्का डैश जांच.......... लीं.......... दें.......... चीं ....

गहरा डैश भौं.......... चोंच.......... लौंग.......... जूं ....

बेटों .... लोगों .... मर्दों.......... घोड़ों ....

"य" तथा "व" का प्रयोग

कुछ शब्दों में व्यंजन "य" का उच्चरण "ऐ" तथा "व" का उच्चारण "औ" के समान सुनाई देता है। आशुलिपि में ऐसे शब्दों में "य" को "ऐ" तथा "व" को "औ" स्वर से भी दर्शाया जाता है, जैसे–

विषय .... दुःखमय..........

भय .... नवमी..........

अभ्यास 5.1

आशुलिपि में लिखकर अभ्यास करें—

1. का ने नी तौ तो तू लौ लो लू
2. आका ऐनक इच्छा औचक ओठ ऊन इला अब उन
3. पशु काम लेता लोटा मोटा कोट रोटी रोम हानि
4. ओखली अचार आसार रोचक मेखला अटल कोमल
5. कांच पांच छांव गेहूँ हाँ चोंच ओंठ करें
6. आठवीं दांत दीं चीं रांची उठूं उठीं गांवों

अभ्यास 5.2

पढ़ें, लिखें तथा अभ्यास करें—

1. 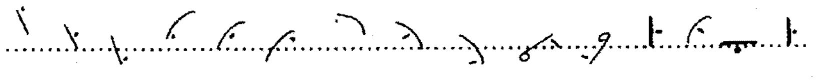

2. 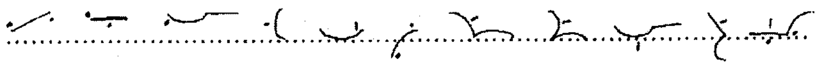

3. 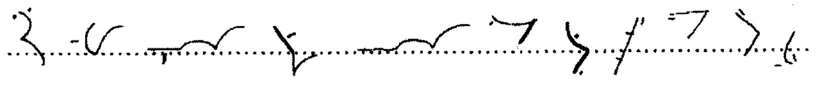

4. 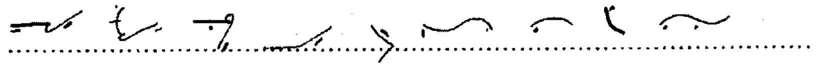

अध्याय – 6

शब्द-चिह्न एवं विराम चिह्न

प्रत्येक भाषा में ऐसे अनेक शब्द होते हैं जिनका बहुत अधिक प्रयोग होता है। हिंदी भाषा में भी ऐसे अनेक शब्द विद्यमान हैं। हिंदी में कारक चिह्नों/विभक्तियों का प्रयोग बार-बार होता है क्योंकि इसी पर भाषा का ढांचा खड़ा रहता है। सरल आशुलिपि के लिए ऐसे कारकों/शब्दों के लिए कुछ निश्चित चिह्न बनाए गए हैं ताकि लिखते समय गति के साथ-साथ शुद्धता भी बनी रहे। ऐसे चिह्नों को ''शब्द-चिह्न'' कहते हैं। शब्द-चिह्नों को लिखने की दिशा और स्थान (लाइन से ऊपर, लाइन पर अथवा लाइन को काटते हुए) निश्चित होता है। अगले प्रत्येक अध्याय के बाद इस प्रकार के शब्द-चिह्न दिए गए हैं। गति और शुद्धता के लिए इन शब्द-चिह्नों का नियमित अभ्यास करना आवश्यक है।

शब्द-चिह्न

कि, की.................के.................ने............ तो, जितना-ने-नी..................

का...................को.................आ...............हो.................हों..................

मैं.................उस.................उसी.................है..............हैं, हूं, ही..............

एक, किया-ए.................कह-हा-हे-ही, अधिक..............

मालूम..............में, तुम-तुम्हें..........आएगा-गी..........होगा-गी..........

जहां...............तहां...............हुआ-ए-ई..............दूसरा-रे-री...............

रह-हा-हे-ही...............हो रहा-हे-ही...............और..................

इधर, जाहिर.................. उधर, उदाहरण...............

किसी भी शब्द का रूप व्याकरणिक नियमों के अनुसार बदले तो भी शब्द-चिह्न मूल रूप में ही लिखा जाएगा, जैसे—

कह–हा–हे–ही........... दूसरा–रे–री............ रह–हा–हे–ही............

विरामं चिह्न

आशुलिपि में सरलता लाने तथा भ्रांति से बचने के लिए विराम चिह्नों को लगाने के लिए संकेत चिह्न बनाए गए हैं। मुख्य चिह्न इस प्रकार हैं—

पूर्ण विराम ...x... अनुच्छेद (Para)...//...डैश..........प्रश्न–वाचक चिह्न (?)

(रेखाक्षर लिखते समय व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्द के नीचे दो हल्के टिक जैसे–राम...........लगाए जाते हैं।)

अभ्यास 6.1

आशुलिपि में लिखकर अभ्यास करें—

1. उस गली में अनेक बच्चे खेलते हैं। रानी उधर बैठी रो रही है।
2. राम ने उस खेत में अधिक अनाज पैदा किया है।
3. उड़ीसा में अन्न की कमी से अनेक आदमी मरे।
4. मैं रोटी अधिक खाता हूँ। तुम्हें भी खाना हो तो अभी खा लो।
5. तुम्हें उस पार जाना है तो चले जाना, रानी को न ले जाना। नदी में अधिक पानी है।
6. रानी अभी बच्ची है। उधर अनेक बच्चे गेंद खेल रहे हैं। रानी उधर ही बैठी है।
7. आज नदी में अधिक पानी बह रहा है। उधर एक अच्छा तमाशा हो रहा है।
8. बच्चों को जहां भी बैठाना हो, बैठा दो। राम और कमला एक दूसरे को जानते हैं। वे बच्चों को भी देखते रहेंगे।
9. आज एक नेता उधर पधारेंगे, जहां एक बैठक भी होगी।
10. राधा उधर जा रही है, तुम भी उधर चले जाना और रानी को इधर बुला लाना।

अभ्यास 6.2

पढ़ें, लिखें तथा अभ्यास करें—

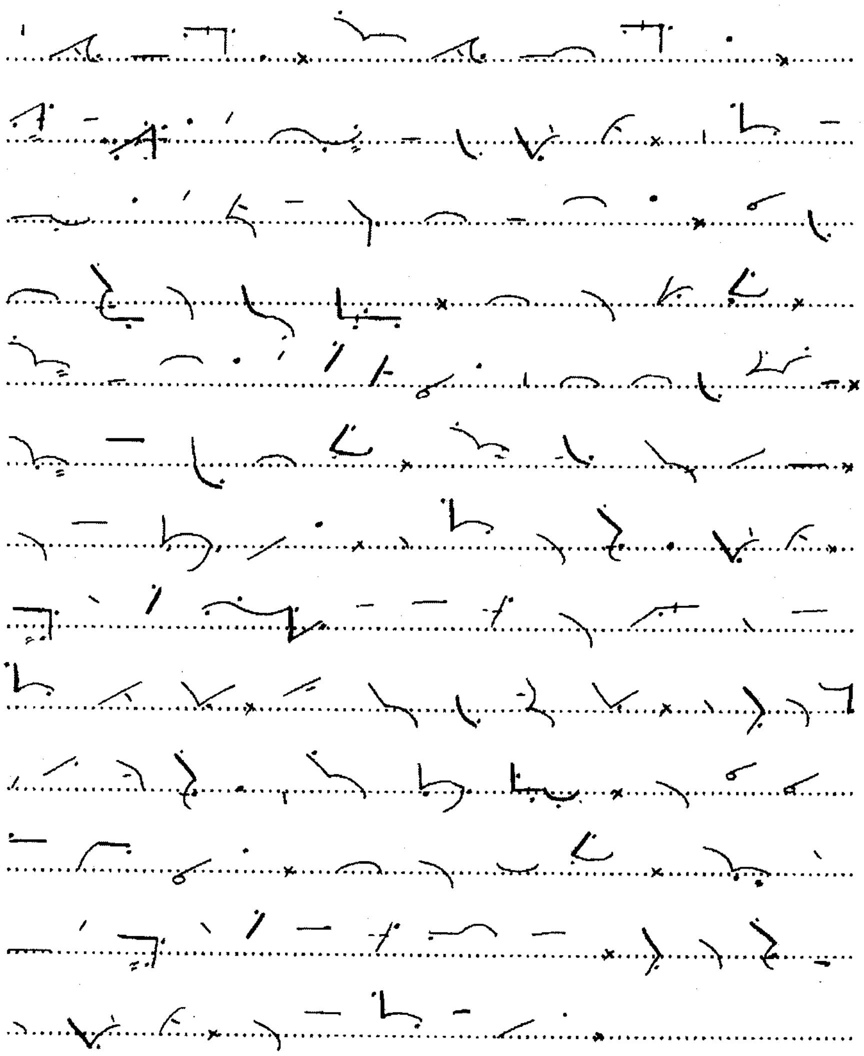

अध्याय – 7

वैकल्पिक रेखाक्षर

हिंदी आशुलिपि में रेखाक्षरों को सुगमतापूर्वक लिखने के उद्देश्य से र–ड़, ढ़, ल, ह तथा श–ष व्यंजन रेखाएं दोनों दिशाओं में (नीचे से ऊपर तथा ऊपर से नीचे की ओर) लिखी जाती हैं। इन व्यंजनों को नीचे अथवा ऊपर की ओर लिखने के कुछ सामान्य नियम इस प्रकार हैं—

व्यंजन रेखा र–ड़, ढ़

1. अकेली रेखा ''र'' से पूर्व यदि स्वर आए तो ''र'' को नीचे की ओर लिखा जाता है, जैसे–

और................ओर................उर................लेकिन री................

2. शब्द के आरंभ में रेखा ''र'' से पूर्व स्वर और बाद में कोई पड़ी रेखा (क–वर्ग) हो तो रेखा ''र'' हमेशा नीचे की ओर लिखी जाती है, जैसे—

अर्क .... आर्गनिक ....

3. ''म'' से पहले आने वाली रेखा ''र'' हमेशा नीचे की ओर लिखी जाती है, जैसे—

राम .... रमणी .... रीमा .... रूमाल ....

4. आरंभिक ''र'' के बाद नीचे को लिखी जाने वाली रेखा हो तो ''र'' हमेशा ऊपर की ओर लिखा जाता है, जैसे—

आरती .... आराधना .... अर्चना .... इरादा ....

5. नीचे की ओर लिखी जाने वाली दो सीधी रेखाओं के बाद रेखा ''र–ड़,ढ़'' ऊपर की ओर ही लिखी जाती है, जैसे—

पापड़ .... तीतर .... दादरी ....

6. ऊपर को लिखी जाने वाली रेखा य, व ह तथा र से पहले अथवा बाद में आने वाला ''र'' हमेशा ऊपर की ओर ही लिखा जाता है, जैसे–

आरोही .... हीरा............... यारी .... आवारा ....

7. आमतौर पर शब्द के बीच में रेखा ''र'' को ऊपर की ओर ही लिखा जाता है, जैसे—

बारीकी .... तारीख .... कराना ....

8. शब्द के अंत में ''र'' के बाद स्वर आने पर ''र'' रेखा ऊपर की ओर लिखी जाती है परन्तु स्वर न होने पर नीचे की ओर ही लिखी जाती है, जैसे—

पर .... परी............... चोर............... चोरी...............

व्यंजन रेखा ''ल''

रेखा ''ल'' आमतौर पर ऊपर की ओर लिखी जाती है लेकिन कुछ स्थितियों में सुविधा एवं स्पष्टता के लिए, इसे नीचे की ओर भी लिखा जाता है। इसके कुछ सामान्य नियम इस प्रकार हैं—

1. यदि रेखा ''ल'' से पहले स्वर हो और उसके पश्चात् कोई पड़ी रेखा (क वर्ग, म, न) हो तो रेखा ''ल'' को नीचे की ओर लिखा जाता है, जैसे—

इलाका............ इल्म............... आलम .... उल्लेख...............

2. फ, भ, र रेखाओं के बाद में ''ल'' आए और उस पर कोई स्वर न हो तो ''ल'' नीचे की ओर लिखा जाता है। किन्तु ''ल'' के पश्चात् स्वर हो तो ऊपर की ओर लिखा जाता है, जैसे—

फल...... फैला.......... रेल .... रेला.......भील......... भालू..........

3. ''न'' के बाद व्यंजन रेखा ''ल'' हमेशा नीचे को ही लिखी जाती है, जैसे–

नीलम .... नाली .... नीला ....

व्यंजन रेखा श, ष

आमतौर पर व्यंजन रेखा श, ष नीचे की ओर ही लिखी जाती है परन्तु कभी–कभी सुविधा एवं स्पष्टता की दृष्टि से इनको ऊपर की ओर भी लिखा जाता है। इसके कुछ नियम इस प्रकार हैं—

1. भ, ल और व से पूर्व ''श–ष'' व्यंजन रेखा ऊपर को लिखी जाती है, जैसे—

शुभ .... अश्व .... शूली..................

2. ''भ'' या ''द'' के पश्चात्, रेखाओं की स्पष्टता के लिए, व्यंजन रेखा ''श/ष'' ऊपर की ओर लिखी जाती है, जैसे—

भाषा.............. दशा.............. दिशा ....

व्यंजन ''ह'' का वैकल्पिक प्रयोग

''ह'' सुविधानुसार दोनों दिशाओं में (ऊपर और नीचे की ओर) लिखा जाता है। कुछ सामान्य नियम इस प्रकार हैं—

1. ''ह'' रेखा अकेली हो और उसके पहले स्वर हो तो नीचे की ओर (↙) लिखी जाती है, जैसे—

आहा ....लेकिन हा .... ऊह .... लेकिन हू ....

2. क, ख, ग, घ, म, न, ङ और ल व्यंजन रेखाओं के बाद व्यंजन रेखा "ह" हमेशा नीचे की ओर लिखी जाती है, जैसे—

कहानी............ महक............ नहाना .... लोहा..................

लाहौर .... रंगहीन .... महीना............ नेहरू..................

3. व्यंजन रेखा श, ष अथवा ज़ के बाद व्यंजन रेखा "ह" नीचे की ओर लिखी जाती है, जैसे—

शाही .... शहरी ....

शब्द-चिह्न

अब............जब............तब............ यद्यपि............ पहुंच............

आएंगे-गी, आऊंगा-गी............... होंगे-गी...............

छोटा-टे-टी-छूट...............निकट, चिट्ठी...........दृष्टि, छुट्टी...........

पहला-ले-ली.............लेकिन...........लिया-लिए, लोग...........

न, इन, इतना-ने-नी........... उन, उतना-ने-नी........... होना-ने-नी...........

यहां.........यह..........यहीं........चाह-चाहे-चाहिए...........ऊंचा-चे-ची...........

पीछे, चोटी.......... वहां, अथवा.......... वर्ष.......... वहीं, द्वारा..........

कब्जा.......... ज्यादा............ जिंदगी..........

अभ्यास 7.1

आशुलिपि में लिखकर अभ्यास करें –

1. इरादा मेहर नहर मंजूर दीवार राठौर रबर
2. अनवर अलचर अर्चना गिरा मीरा अमीर
3. लारी फेरी तरु तार गाड़ी मोर भेड़ रोटी
4. अर्क अमर रूमाल उर्मिला आराम रोम राशि रद्दी
5. मेल खेल रेल काल गलना मिलना
6. टीला टोली बुलाना गला कमल नीला
7. माला लिखना उल्लेख ऐलान इल्म नाला
8. दशा शैली भाषा आशा शुभ शोभा
9. शिवालय नवल फसल बंसल कंसल शिव शादी अश्व

अभ्यास 7.2

पढ़ें, लिखें तथा अभ्यास करें –

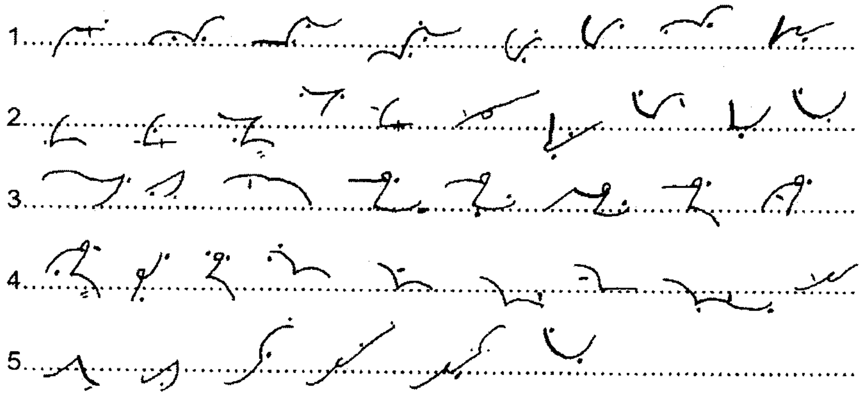

अभ्यास 7.3

आशुलिपि में लिखकर अभ्यास करें –

1. जब मैं और अशोक यहां आएंगे तब आपको एक छोटी और अच्छी कहानी कहेंगे, जो आपके काम आएगी।
2. यह कहना ठीक है कि छोटे लोगों में भी दूसरों के लिए कुछ अच्छी भावना देखने को मिलती है।
3. खुलासा करें कि आपकी दृष्टि में यह आदमी अच्छा है या बुरा।
4. आज छुट्टी है लेकिन बच्चे यहां बैठे हुए हैं। बच्चों को खेलने की छूट भी देनी चाहिए।
5. यह दीवार ऊंची है। दीवार के पीछे कुछ आदमी छिपे हैं। मेरी दृष्टि में ये लोग चोर लगते हैं। यहां के लोगों को बता देना चाहिए।
6. यह इलाका अच्छा है। यहां की भूमि अच्छी है। यहां ऊंचे पहाड़ भी हैं। जंगली पशु यहां अधिक हैं। यहां अच्छी अरहर पैदा हो रही है।
7. यह पहला लड़का है जो अच्छी चिट्ठी लिखता है लेकिन आज बीमार है। उधर पेड़ के निकट कुछ और लड़के बैठे होंगे। एक लड़के को बुला लो।
8. निकट ही एक बगीचा है जहां अच्छे फूल खिले होंगे। लोग फूल लेने के लिए यहीं आते हैं।
9. पहाड़ की ऊंची चोटी पर एक बिल्ली बैठी है। उसके निकट ही एक आदमी भी सो रहा है।
10. अब यह कहना ठीक है कि सभी लोगों ने अच्छा काम किया है और ईमानदारी का भी अच्छा उदाहरण रखा है।

अध्याय – 8

द्विध्वनिक और त्रिध्वनिक स्वर

द्विध्वनिक स्वर

(क) हिंदी भाषा में कभी–कभी दो स्वरों का प्रयोग एक साथ होता है इन्हें द्विध्वनिक स्वर कहते हैं। इसके अतिरिक्त किसी व्यंजन के साथ "यु–यू" आने पर भी द्विध्वनिक संकेत का प्रयोग किया जाता है। इन सभी द्विध्वनिक स्वरों को प्रकट करने के लिए निम्न व्यवस्था की गई है।

आई .... आए .... आऊ .... यु-यू ....

आई तथा आए को प्रथम स्थान पर एवं आऊ और यु–यू को तृतीय स्थान पर लिखा जाता है, जैसे –

दाई .... पाई .... खाई .... मलाई ....

लाए .... जाए .... फायदा .... कायदा ....

दाऊ .... ताऊ .... टिकाऊ .... कमाऊ ....

विद्युत .... द्यूत .... दस्यु .... क्यू ....

यदि द्विध्वनिक स्वर के पश्चात अनुस्वार आए तो उसे प्रथम स्थान के लिए रेखा को छूकर तथा तृतीय स्थान के लिए स्वर को रेखा के अंत में उसके साथ ही लिखा जाता है, जैसे–

लाईं .... चलाईं .... खाईं .... दिखाईं ....

लाएं .... बालाएं .... खाएं .... दिखाएं ....

लाऊं .... चलाऊं .... खाऊं .... दिखाऊं ....

(ख) आई, आए, आऊ तथा यु–यू को छोड़कर यदि कोई दो स्वर एक साथ आएं तो प्रथम स्वर ध्वनि को मुख्य मानते हुए बिंदु स्वर होने पर .... चिह्न और डैश स्वर होने पर ..... चिह्न दर्शाया जाता है, जैसे –

बिंदु स्वर चिह्न ....

खाया .... मचाया .... नैया .... भैया ....

लेआ .... जनेऊ .... उपमेय ....

लिया .... कीजिए .... वित्तीय .... नियम ....

डैश स्वर चिह्न ....

हौआ .... कौआ ....

रोई .... रसोई .... कतई .... बढ़ई ....

बटुआ .... कछुआ .... रुई .... सुई ....

त्रिध्वनिक स्वर

यदि किसी शब्द में तीन स्वर एक साथ आएं तो द्विध्वनिक स्वर में ही विपरीत दिशा में एक टिक लगाकर तीसरे स्वर को दर्शाया जाता है, जैसे –

लाइए .... चलाइए .... खाइए .... लिखाइए ....

एशियाई .... रियाया .... रसोइया .... मुआयना ....

शब्द-चिह्न

कौन,आओ.............. तमाम,आयु .... आऊं ....

कई.............. मुझे,आया .... उसे,कोई ....

आई .... आईं............ आइए .... आय-आए..........

आएं............ क्या, गया-ए-ई............ यही............

अभ्यास 8.1

आशुलिपि में लिखकर अभ्यास करें–

1. राई लड़ाई विदाई गहराई पढ़ाई
2. बनाए बुलाए कायम किराए भाए
3. चलाऊ टिकाऊ कमाऊ भड़काऊ
4. ड्यूटी म्युनिसिपल म्युज़ियम
5. चलाईं हटाईं दिखलाएं हटाएं नदियां दिखलाऊं
6. गाया जलाया हेय पेय शिया कहिए
7. बोई खोया बुआ जुआ

अभ्यास 8.2

आशुलिपि में लिखकर अभ्यास करें–

आप को इस नियम के विषय में कुछ कहना है। कोई भी कुछ कहना चाहे तो उसे बुला लीजिए। मुझे पढ़ाई के लिए धन चाहिए। तमाम लोग इस विषय पर मुझे राय तो देते हैं लेकिन धन कोई नहीं देता। ज्यों ही मुझे धन मिलता है मैं पढ़ाई शुरू कर दूंगा। वित्तीय नियोजन से लोगों की भलाई व उन्नति दिखाई देने लगी है।

अध्याय – 9

स वृत्त (Circle) तथा ''सं'' का प्रयोग

व्यंजन स, श, ष तथा ज़ को केवल रेखा से ही नहीं वरन् एक छोटे वृत्त (o) से भी दर्शाया जाता है। ''स'' व्यंजन के लिए वृत्त का प्रयोग शब्द के आरंभ मध्य तथा अंत में किया जाता है जबकि ''श'', ष'' तथा ज़ के लिए वृत्त का प्रयोग केवल शब्द के मध्य और अंत में ही किया जाता है। यह वृत्त सुविधानुसार बाईं (○) तथा दाईं (○) गति से लिखा जाता है। वृत्त लगाने के सामान्य नियम इस प्रकार हैं–

1. सरल रेखाओं के आरंभ तथा अंत में वृत्त बाईं गति (○) से लगाया जाता है, जैसे–

सदा.................. दास.................. सूची.................. सरल..................

साख.................. सीखना.................. सुगम.................. दिवस..................

2. दो समान सीधी सरल रेखाओं के मध्य में भी वृत्त बाईं गति (○) से लगाया जाता है, जैसे–

कसक .... पुष्प .... यासर.................. हौजरी ....

3. वृत्त ''स'' दो सरल रेखाओं के बीच बनने वाले कोण के बाहर की तरफ लगाया जाता है, जैसे–

दशक.................. बस्ता.................. पोषक.................. चस्का.................. रसिक..................

4. वक्र रेखाओं में यह वृत्त कर्व के अन्दर की ओर लगाया जाता है, जैसे–

सभा.................. मास.................. नाश.................. मौसम.................. मज़ाक..................

5. ''स'' वृत्त अकेले में बाईं गति से लिखा जाता है।

6. शब्द के आरंभ में व्यंजन ''स'' से पहले तथा शब्द के अंत में स, श, ष अथवा ज़ के बाद स्वर आने पर पूरी व्यंजन रेखा लिखी जाती है, जैसे–

असम........आस्था.........दासी.......... रोज़ी.......... पशु..........

7. यदि वृत्त के पश्चात व्यंजन ''ल'' अथवा ''र'' आए तो ''ल'' अथवा ''र'' को वृत्त की दिशा में लगाया जाता है, जैसे–

फसल..........नस्ल.......... मंजूरी.......... नज़र.......... मसूर..........

8. वृत्त से आरंभ होने वाली रेखा का स्थान व्यंजन ''स'' के साथ आए स्वर के अनुसार तय किया जाता है, जैसे–

सारथी..........सच..........सूची.......... सीमा.......... सभा..........

9. यदि शब्द के आरंभ में ''स'' अगले व्यंजन से संयुक्त हो (जैसे स्थ, स्न आदि) तो लिखने के स्थान का निर्धारण संयुक्त व्यंजन के स्वर से ही किया जाता है, जैसे–

स्फटिक..........सृष्टि.......... स्थाविर.......... स्फीति ....

10. क, ख, ग, घ अथवा ऊपर की ओर लिखी जाने वाली व्यंजन रेखा ''ह'' (....) से पहले ''स'' आने पर वृत्त की दिशा में एक छोटा हुक लगाया जाता है, जैसे–

संघ.......... संक्षेप .... संकोच.......... सिंह.......... संहार..........

11. वाक्यांशों में इस छोटे वृत्त का प्रयोग ''पास'' शब्द को जोड़ने के लिए किया जाता है, जैसे

आपके पास..........सबके पास..........मेरे पास..........उनके पास..........

शब्द-चिह्न

से, इस, इसे............इसी..............महाशय................मुश्किल..................

सहायता................सहमति..................समिति.........आवश्यक................

सहयोग.........सवाल.........प्रशंसा .... सदस्य................परामर्श..........

कैसा-कैसे-कैसी, क्षेत्र..................किस, किसे..................किसी..................

सार्वजनिक...............समाज................ सुझाव..........सहानुभूति ....

स्पष्ट..........संगठित.........संकट..........समझ..........समय..............

अभ्यास 9.1

आशुलिपि में लिखकर अभ्यास करें–

1. महाशय आप कहां जा रहे हैं? रमेश ने समिति के सामने आज एक अच्छा परामर्श दिया है। सभी की सहमति और सहयोग से काम पूरा होगा।
2. सबसे पहले मैं बोलूंगा। मेरा एक सुझाव है कि आप चुप रहें, कम बोलें।
3. सहयोग से सभी काम पूरे होते हैं। आवश्यक कामों को पहले करें।
4. आज इधर एक सभा होगी। सभा के नेता यहां समय से पहुंचेंगे। सभी सदस्य भी समय से पहुंचें तो अच्छा होगा।
5. सार्वजनिक कामों में सबकी सहमति लेनी चाहिए। सभी कामों में समाज का सहयोग आवश्यक है। सवाल यह है कि सभी संगठित हो कर काम करें।
6. समाज में लोगों को यह सुझाव याद रखना चाहिए कि संकट के समय संगठित रहने से लाभ होगा और सब को सभी का सहयोग मिलेगा।

7. आपकी सहायता से मैं सभी काम लोगों के परामर्श और सहयोग से चलाना चाहता हूं। सवाल यह है कि समाज से भी स्पष्ट सहयोग मिलना चाहिए।

8. आज जब मैं इस नदी के पास से गुज़रा तो सामने एक जानवर को बैठे देखा। मुझे लगा कि मैं मुश्किल में पड़ूंगा लेकिन जानवर चुप बैठा रहा।

9. इस देश में लोग दूसरों को परामर्श देने में आगे रहते हैं लेकिन खुद किसी को सहयोग नहीं देते, इसीलिए परेशान रहते हैं।

अभ्यास 9.2

पढ़ें, लिखें तथा अभ्यास करें—

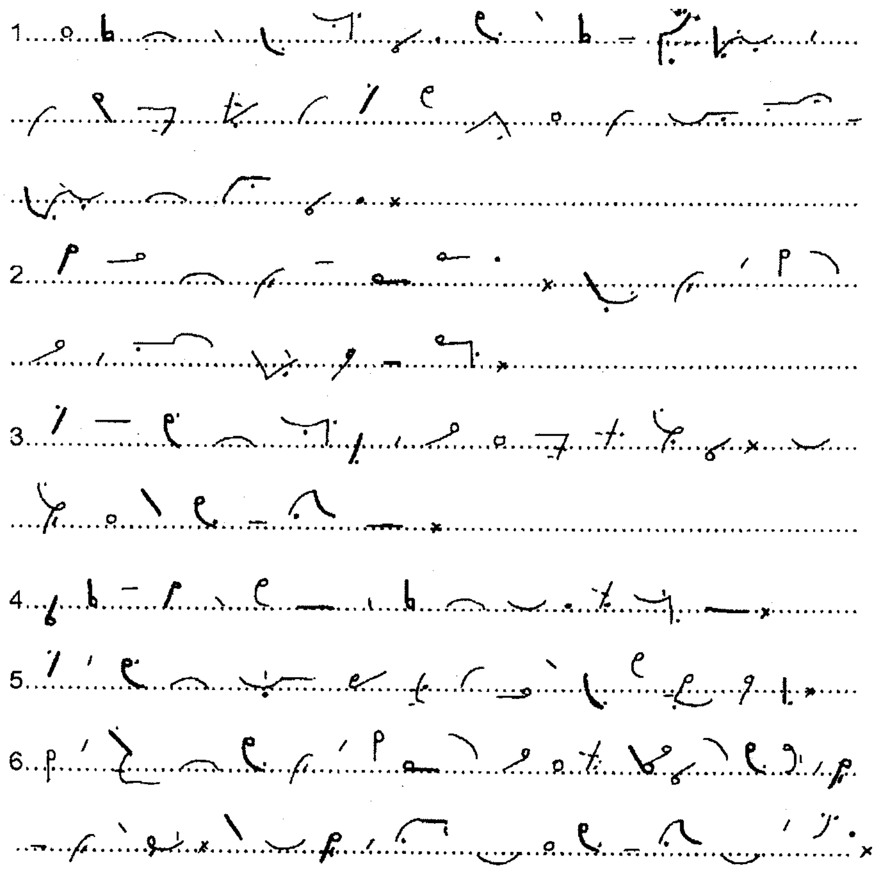

अध्याय – 10

प्रारंभिक तथा अंतिम बड़ा वृत्त

1. बड़ा वृत्त "स्व"

किसी शब्द के आरंभ में "स्व" आने पर उसे एक बड़े वृत्त से दर्शाया जाता है जो कि वृत्त "स" की भांति सीधी रेखाओं के आरम्भ में बाईं गति (Left motion) से तथा वक्र रेखाओं के आरम्भ में कर्व के अंदर की ओर लिखा जाता है, जैसे—

स्वागत ....स्वरूप ....स्वेच्छा ....स्वदेश ....

स्वामी ....स्वाभिमानी ....स्वर्ग ....

2. बड़ा वृत्त "सस" "शष" "शश"

किसी शब्द के मध्य या अंत में स, श या ष में से कोई भी दो वर्ण एक–साथ आएं तो उन्हें "स" वृत्त की तरह लगाए गए एक बड़े वृत्त से दर्शाया जाता है। सीधी रेखाओं के अंत में यह वृत्त बाईं गति से तथा वक्र रेखाओं के अंत में कर्व के अंदर की ओर लिखा जाता है। सस, शष अथवा शश के बीच अ अथवा ए को छोड़कर अन्य स्वर आए तो स्वर को वृत्त के अंदर लिखा जाता है, जैसे—

अफसोस ....जासूस ....अवशेष ......राक्षस 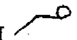 .... विशेष ......

बहुवचन संकेत के लिए वृत्त के समानांतर डैश लगाया जाता है, जैसे—

कोशिशों 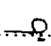 ....अवशेषों .... जासूसों .... राक्षसों ....

शब्द-चिह्न

स्वावलंबी ....स्वायत्त ....स्वतंत्र-स्वतंत्रता ....

निष्पक्ष .... निष्कर्ष ....

वाक्यांश

विशेष रूप से...... .... विशेष रूप में ....

अभ्यास 10.1

अशुलिपि में लिखकर अभ्यास करें—

1. स्वार्थी स्वामी स्वामिनी अवशेष कोशिश अनुशासन कुशासन
2. अफसोस विशेष कोशिश जासूस तक्षशिला महसूस स्वापक

अभ्यास 10.2

पढ़ें, लिखें तथा अभ्यास करें—

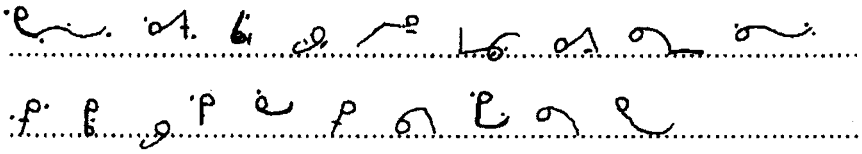

अभ्यास 10.3

पढ़ें, लिखें तथा अभ्यास करें—

आज इस देश के सामने सबसे मुश्किल और आवश्यक मसला अनाज की उपज को ज्यादा से ज्यादा बढ़ाना है। सरकार, सार्वजनिक संस्थाएं तथा किसान देश को अन्न के विषय में स्वावलंबी रखने के उत्सुक हैं। इस हेतु निष्पक्ष रूप से समीक्षा करने वाले इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि यह देश निजी कोशिशों से इस समस्या को सुलझा लेगा। जो भी काम किया जाए उसमें देश के स्वाभिमान का सवाल सबसे पहले रहना चाहिए। इतिहास को समझने के लिए अवशेषों की तलाश आवश्यक है। देश और समाज की उन्नति के लिए अनुशासन आवश्यक है। किसी देश की उन्नति के लिए उसका स्वतंत्र और स्वायत्त होना आवश्यक है। विशेष रूप से स्वच्छ अनुशासन के लिए शासकों का निष्पक्ष रहना भी आवश्यक है।

अध्याय – 11

सर्वनाम तथा विभक्तियों का मेल

हिंदी भाषा में सर्वनाम और विभक्तियों को साथ–साथ जोड़कर लिखने की व्यवस्था है। अतः आशुलिपि में भी विभक्तियों जैसे का, के, की, ने से, के लिए, रा, रे, री आदि को सर्वनामों के साथ जोड़कर लिखने की व्यवस्था की गई है ताकि उन्हें सुविधा और गति से लिखा जा सके। सर्वनामों के साथ विभक्तियों के योग के कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं जिनके अभ्यास से इनको समझने और लिखने में आसानी होगी–

मैं............... मैंने.............. मुझको............... मुझसे..............

मुझमें............... मुझपर................मेरा-रे-री.................

उस.............उसने..........उसको............उससे............

उसमें.............. उसपर............ उसका-के-की...............

इस..............इसने..........इसको..........इससे...........इसमें...........

इसपर.............. इसका-के-की..............

तुम............. तुमने................... तुमको.............. तुमसे..................

तुममें................ तुम्हारा-रे-री................इन.............. इन्होंने ....

इनको.......... इनसे............इनमें............इनपर......... इनका-के-की...........

उन............. उन्होंने .... उनको............

उनसे...........उनमें............... उनपर...............

किस................किसने..........किसको.................किसरसे...............

किसमें................. किसपर.............. किसका-के-की.................

किसी...........किसी ने..............किसी को..................किसी से..............

किसी में.............. किसी पर ....किसी का-के-की ....

जिस.............जिसने............. जिसको..................जिससे.................

जिसमें............. जिस पर .... जिसका-के-की...................

शब्द-चिह्न

ऐसा-ऐसे-ऐसी ....समस्या .... स्थिति..........

नुकसान, उनसे............जो, होजा..............जीवन ....

तथा ....होता-ते-ती ....तथापि..........

आदि............यदि.............इत्यादि..............अध्यक्ष.............

सांस्कृतिक.............संस्कृति..........सरकार...........

सहर्ष ....संरक्षक.................

अभ्यास 11.1

आशुलिपि में लिखकर अभ्यास करें–

आज जब मैं बाजार जा रहा था तो रास्ते में एक भिखारी पर मेरी नज़र पड़ी। उसकी स्थिति इतनी नाजुक थी कि उसको देखते ही मेरा दिल पसीजने लगा। पिताजी की सीख याद आते ही मैंने उसकी कुछ सहायता करनी चाही। मैंने उसी समय उसको कुछ राशि दी। राशि पाते ही वह झूम उठा। उसको सहायता देने से मेरे दिल में भी कुछ संतोष हुआ। हम सब को भी सदा गरीबों की सहायता में आगे आना चाहिए। आप सब लोगों के लिए मेरा एक सुझाव है कि आप किसी न किसी गरीब की सहायता अवश्य करें ताकि समाज सुखी रह सके। आपसी सहयोग से विषमता कम होती है और अलग रहने का भाव कम होता है।

अभ्यास 11.2

पढ़ें, लिखें तथा अभ्यास करें–

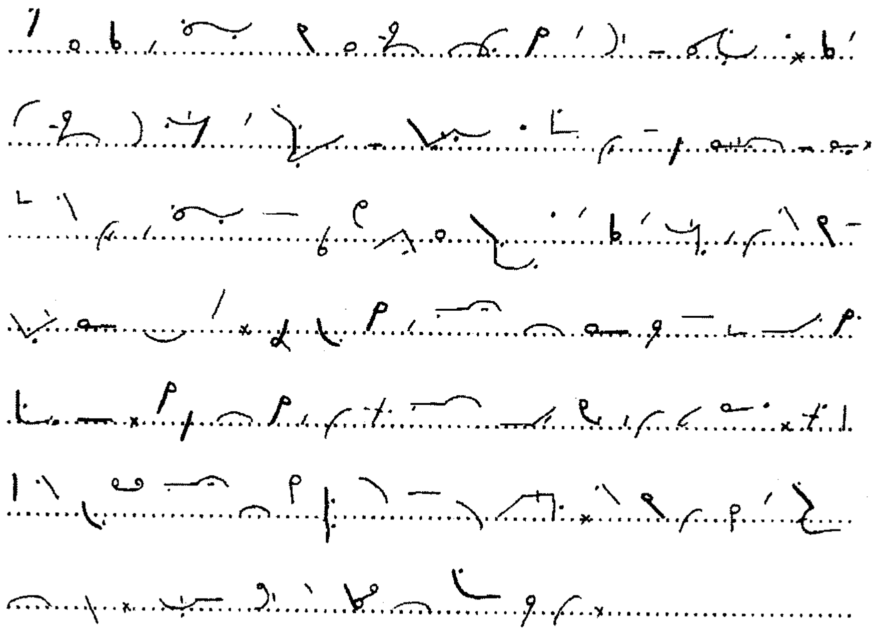

अध्याय – 12

वाक्यांश (Phraseography)

दो या दो से अधिक शब्दों को मिलाकर लिखने की कला को वाक्यांश कहते हैं। वाक्यांशों की रचना इस प्रकार की होनी चाहिए कि वे आसानी से लिखे जा सकें और उनको पढ़ने में भी आसानी हो। इसमें अस्पष्ट और असुविधाजनक योग से बचना चाहिए। इसके लिए कुछ सामान्य नियमों का हमेशा ध्यान रखा जाना आवश्यक है।

2. वाक्यांश का प्रथम शब्द अथवा शब्द-चिह्न सामान्य नियमों के अनुसार अपने निश्चित स्थान पर ही (लाइन से ऊपर, लाइन पर अथवा लाइन को काटते हुए) लिखा जाना चाहिए। जैसे इसलिए .... लाइन पर लिखा जाएगा और इसीलिए .... लाइन को काटते हुए। किंतु सुविधानुसार इसे कुछ ऊपर या नीचे भी लिखा जा सकता है। जैसे "इस आशा से"............कभी-कभी अधिक शब्दों या शब्द-चिह्नों के योग के समय इसमें थोड़ा–बहुत परिवर्तन किया जा सकता है। वाक्यांशों में स्वर संकेत गौण हो जाते हैं परन्तु कुछ स्थानों पर संकेतों में समानता के कारण स्वर लगाने बहुत आवश्यक होते हैं जैसे के लिए .... और के पहले .... में अंतर करने के लिए 'ल' रेखा पर 'ए' का स्वर लगाया जाता है। निम्नलिखित वाक्यांशों पर विशेष ध्यान दें–

इनके लिए............ उनके लिए............ मुझ से पहले..................

उससे पहले............ कौन लोग................ तमाम लोग ....

इस काम............ उस काम............ इस कमी............

3. वाक्यांशों में शब्द-चिह्नों को अन्य शब्दों के साथ भी जोड़ा जाता है परन्तु असुविधाजनक योग से बचना चाहिए।

इस काम......... उस काम......... ऐसे आदमी......... इस कमी.........

सारा काम............ मेरा नाम .... पहला विषय ....

संज्ञा शब्द के साथ किसी विभक्ति को नहीं जोड़ा जाना चाहिए। राम ने हमेशा अलग-अलग लिखा जाएगा।

4. वाक्याशों में वृत्त ''स'' का प्रयोग वाक्यांशों में सा, से, सी को जोड़ने के लिए भी किया जाता है जैसे–

सरकार से............ उस दृष्टि से.............. इस दृष्टि से..........

छोटा सा काम...............धीरे से........... थोड़े से लोग..............

थोड़ा सा काम.............थोड़ी सी कमी.............इससे पहले ....

5. वाक्यांश में एक या एक से अधिक शब्द-चिह्नों अथवा शब्दों को भी एक साथ मिलाया जा सकता है, जैसे–

इस देश में............. जीवन में............... मेरी समझ में................

सार्वजनिक सभा में.................

6. कई बार वाक्यांशों में शब्द अथवा शब्द-खण्डों, कारकों आदि को 'छोड़ दिया जाता है क्योंकि वे वाक्य–विन्यास में आसानी से पढ़े जा सकते हैं, जैसे–

उन्होंने कहा कि................ देश के सामने.............

एकता की दृष्टि से...............

7. किसी वाक्य में ढंग से को जोड़ने के लिए ''ढस'' (.......) तथा तरफ जोड़ने के लिए व्यंजन रेखा ''फ'' (.....) को मूल रेखा से मिला कर लिखा जाता है, जैसे–

इस ढंग से.............उस ढंग से.............मुनासिब ढंग से...............

मेरी तरफ से.................. सब की तरफ से...............

आपकी तरफ से............... इनकी तरफ से....................

8. इसी प्रकार ''के लिए'' को जोड़ते समय व्यंजन रेखा ''ल'' (........) को सुविधानुसार ऊपर अथवा नीचे की ओर लिखा जाता है, जैसे–

जाने के लिए...............देश के लिए............... देखने के लिए...............

है, हूँ, हैं, था, थे, थी के प्रयोग

(क) अभी तक हम है अथवा हैं को लिखने के लिए शब्द-चिह्न का प्रयोग कर रहे हैं। अधिक सुविधा और गति से लिखने के लिए वाक्यांशों में ''है'' को एक टिक से दर्शाया जाता है जो कि सुविधानुसार व्यंजन रेखा पर विपरीत दिशा में लगाया जाता है, जैसे–

जाना है............... बोलना है............... कहा है............... नाचा है...............

आशा है............... फैला है............... पता है............... देखना है...............

(ख) इसी प्रकार हैं अथवा हूं को दर्शाने के लिए सुविधानुसार बाईं अथवा दाईं गति से वृत्त युक्त टिक लगाया जाता है, जैसे–

समझनी हैं............... कही हैं............... सीखते हैं............... ऐसे हैं...............

जाता हूँ............... कम हैं............... फैले हैं............... खाता हूँ ....

(ग) लिखते समय है, हैं अथवा हूँ के साथ आमतौर पर ''कि'' का प्रयोग होता है। अतः लिखने की गति को बनाए रखते हुए ''कि'' को दर्शाने के लिए है अथवा हैं टिक के साथ ही विपरीत दिशा में एक टिक लगाया जाता है, जैसे–

किया है कि............... कह रहा है कि.................. कहते हैं कि...................

देखता हूँ कि .... बोलना चाहता हूँ कि ....

(घ) क्रिया-वाचक शब्दों के साथ ''ही'' को दर्शाने के लिए भी इस वृत्त युक्त टिक का प्रयोग किया जाता है, जैसे–

देखते ही........ सुनते ही.............. बोलते ही............जाते ही..............

(च) अंतिम व्यंजन रेखा के बाद ''था'', ''थे'' तथा ''थी'' को क्रमशः डॉट, डैश तथा व्यंजन रेखा ''थ'' (...।...) से दर्शाया जाता है। ये चिह्न व्यंजन रेखा से हटाकर लगाए जाते हैं, जैसे–

जा सका था .... जा सके थे................. जा सकी थी ....

देखता था.............. देखते थे.............. देखती थी..........

बोला था.............. बोले थे.............. बोली थी.............

(छ) बार-बार प्रयुक्त होने वाले कुछ बहु प्रचलित वाक्यांशों में प्रथम शब्द के बाद केवल सांकेतिक रूप दर्शाते हुए लिखा जाता है ताकि उनको गति से लिखने में सुविधा हो, जैसे–

मैं समझता हूँ कि................ मैं आशा करता हूँ कि.................

उन्होंने कहा कि.................

(ज) वाक्यांशों का निरंतर अभ्यास करने के लिए आगे के पाठों में और अधिक उदाहरण दिए गए हैं। यहां पर अभ्यास के लिए केवल कुछ छोटे-छोटे वाक्यांश दिए जा रहे हैं जिनका बार-बार अभ्यास करने से वाक्यांश लिखने की गति स्वतः बढ़ जाएगी।

किया गया है................ कहा गया है.............. समय में..............

समझ में............... की समझ में.................... मेरी दृष्टि में.............

की है कि........../........... की गई है कि.............कहा है कि...........

मुझे आशा है कि............... इस काम से ....

अवसर पर .... की ओर से .... सब ओर से ....

इस देश के.......... ऐसी स्थिति में.......... ऐसी अवस्था में ....

शब्द-चिह्न

आशा............ अवश्य............ शिक्षा..........

कहां.............. कहीं............ नहीं...........

हफ्ता-ते.............. काफी............ तरफ............

इन्हें .... उन्हें.......... वास्तव.......... सवाल..........

अभ्यास 12.1

आशुलिपि में लिखकर अभ्यास करें-

नेहरू जी ने एक समय लोक सभा में कहा था कि उनकी सरकार की मंशा देश को तीव्र गति से समृद्धि तथा उन्नति की ओर ले जाना है। उन्होंने तीसरी योजना की सफलता के लिए लोगों से पूरी सहायता देने और उसे अपनी निजी योजना समझने की भी अपील की। इस योजना को योजना आयोग ने संसद के सामने रखा है। नेहरू जी ने इस विषय पर संसद की एक समिति भी बनाई थी। सरकारी काम को मुनासिब ढंग से चलाने के लिए देश को सूबों, जिलों और तहसीलों जैसे छोटे-छोटे हिस्सों में तकसीम किया गया है। किसी देश की कोई भी योजना तब तक पूरी नहीं हो सकती जब तक देश के तमाम लोग उसमें सहयोग न दें। इस काम के पूरा होने से ही किसानों की पुरानी मांग को पूरा किया जा सकेगा। इस योजना में कावेरी पर एक नया पुल बनाने की योजना है।

अभ्यास 12.2

पढ़ें, लिखें तथा अभ्यास करें–

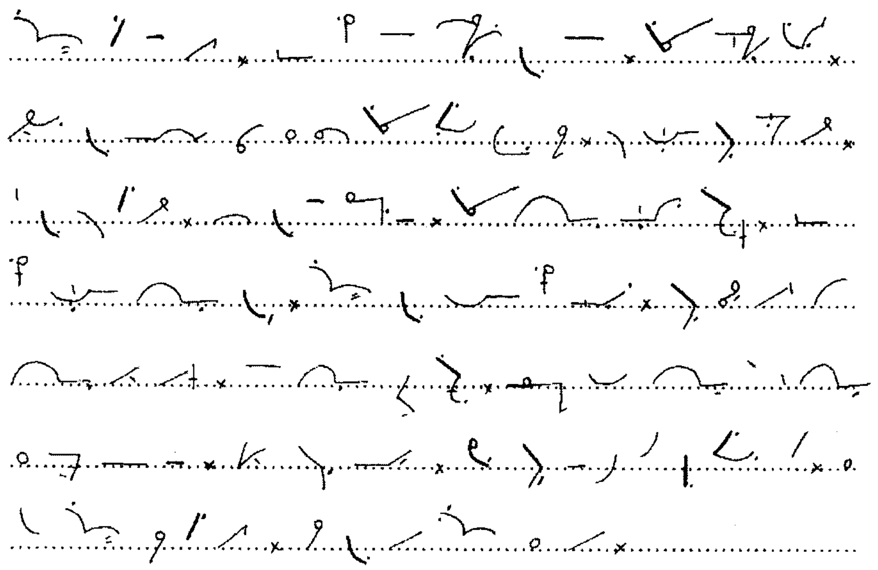

अध्याय – 13

व्यंजन ''ह'' के अन्य प्रयोग तथा अर्ध–वृत्त ''व''

सह अथवा साह

व्यंजन रेखा ''ह'' के वृत्त को बड़ा करने पर उसमें व्यंजन ''ह'' से पहले स अथवा सा का योग होता है, जैसे–

सही .... सहारा .... सहसा ....

उत्साह........ दुस्साहस........

टिक ''ह''

किसी शब्द के आरंभ में ह के बाद म, ल अथवा नीचे को लिखी जाने वाली व्यंजन रेखा र आए तो उसे एक छोटे टिक से दर्शाया जाता है, जैसे–

हमला........ हल्दी .... हरेक........ हरम........

बिंदु ''ह''

किसी शब्द के मध्य में यदि ''ह'' रेखा लिखने में कठिनाई हो तो उसे अगली रेखा से पहले आने वाले स्वर के साथ बिंदु लगाकर दर्शाया जाता है, जैसे–

इज़हार .... भूमिहीन .... मजहब .... जगह........

अर्धवृत्त ''व''

यदि क, ख, ग, घ, म, र और ल व्यंजन रेखा से पूर्व ''व'' व्यंजन आए तो उसे दाईं गति से लगाए गए एक अर्धवृत्त से दर्शाया जाता है, जैसे–

विकास........ विमुख........ विराट........

वेग........ वर्ग........

यदि शब्द के आरंभ में ''ल'' व्यंजन से पूर्व ''व'' आए तो उसे कर्व के अंदर की ओर लगाए गए एक छोटे हुक से दर्शाया जाता है, जैसे–

विलाप............ विलास........ वाल्मीकि................. विलग..........

यदि व्यंजन ''व'' से पूर्व स्वर हो तो अर्धवृत्त का प्रयोग नहीं किया जाता, जैसे–

अवकाश ....आवारा ....

इस हुक (**वल**......) का प्रयोग शब्दों में वाला–वाले–वाली शब्द को जोड़ने के लिए भी किया जाता है, जैसे–

कहने वाला.......... बोलने वाले............ रहने वाली.............

शब्द-चिह्न

असंतोष...... हरगिज....... हृदय....... व,वह........ वे....... वही.......

एवं.......... अन्य....... केवल......... साहित्य........... साहित्यिक.........

अभ्यास 13.1

आशुलिपि में लिखकर अभ्यास करें–

1. साहस उत्साह दुस्साहस महसूस सहपाठी सहज
2. सहना साहू सहभोज सहचरी इज़हार भूमिहीन सराहना
3. अवहेलना हमराही हर्ष हरकारा हिमालय हलवा हलवाई हलका
4. सुहावना मज़हब लहर हिलना शाही हलचल लाहौर मेहरा
5. विकसित विमाता वाकिफ वर्षा वैरागी विलग विलासी
6. आवारा अविकसित आवेग अवरुद्ध

अभ्यास 13.2

आशुलिपि में लिखकर अभ्यास करें–

1. हमने यह इरादा किया है कि हम सब एक साथ रहेंगे और हर आदमी का सहयोग लेंगे।
2. पहली बार हमें कुछ अच्छे लोग मिले हैं इसलिए हमें साहस और सहयोग से काम लेना चाहिए।
3. हम लोगों के लिए सब कुछ अच्छा ही होगा, यह सोचते हुए ही हमें सारे काम करने होंगे।
4. राम ने उससे कहा कि वह दूसरे की गाड़ी हरगिज़ न ले।
5. तुमने ऋषि वाल्मीकि की कहानी सुनी होगी। वे एक पहुंचे हुए ऋषि थे।
6. साहसी लोग सहनशील होने के साथ-साथ बेसहारा लोगों की सहायता में आगे रहते हैं। भूमिहीन लोगों की पूरी सहायता होनी चाहिए।
7. आज किसी देश पर किसी अन्य देश द्वारा हमला उसके लिए संकट की स्थिति ला सकता है।
8. हर मज़हब एकता सिखाता है। यदि विकसित देश विकासशील देशों को सहायता दें तो इससे समाज के सभी वर्गों को एक साथ लाने में सहायता मिलेगी।
9. हमारा यह पक्का इरादा है कि हम दूसरे लोगों के काम आएं। यह हम हृदय से सोचते हैं कि हम अपनी संस्कृति को हमेशा अपनाएं।
10. मज़हब के नाम पर लड़ने वाले लोग मज़हब का मज़ाक उड़ाते हैं। राग और द्वेष का मज़हब से कुछ लेना-देना नहीं है। वह तो जीने की कला सिखाता है।

अध्याय – 14

स्त–स्तर लूप

1. छोटा लूप स्त, श्त, स्ट, ष्ट आदि

क. शब्द के आरंभ या अंत में स्त, श्त, स्थ, ष्ट, ष्ठ आए तो उसे एक छोटे लूप से दर्शाया जाता है। यह लूप व्यंजन रेखा की लम्बाई के आधे से कुछ कम होता है। वृत्त "स" (o) की भांति लूप सरल रेखाओं के आरंभ या अंत में बाईं गति से तथा वक्र रेखाओं के आरंभ या अंत में कर्व के अंदर की ओर लगाया जाता है, जैसे–

स्तर............ गश्त............ स्टेट............ कष्ट............कुष्ठ............

स्टॉक ....स्थान .... मस्त ....नष्ट .... दुष्ट............

ख. कभी-कभी शब्द के मध्य में भी लूप का प्रयोग किया जाता है, जैसे–

पुस्तक............ दस्तकारी............राजस्थान .... दोस्ताना............

ग. यदि शब्द के अंत में स्तष्ट आए और उसके अंत में स्वर हो तो लूप का प्रयोग नहीं किया जाता, जैसे–

हस्त........हस्ती........मस्त........मस्ती........पुष्ट........ पुष्टि........

दोस्त........दोस्ती........ रुष्ट........रिश्ता........चुस्त........चुस्ती........

2. बड़ा लूप स्तर, श्तर, ष्ट्र

शब्द के अंत में स्तर, श्तर, ष्ट्र / स्टर आए तो उसे एक बड़े लूप से दर्शाया जाता है जिसकी लंबाई व्यंजन रेखा की लंबाई के आधे से कुछ अधिक होती है। छोटे लूप की भांति यह लूप भी सरल रेखाओं

के अंत में बाईं गति से तथा वक्र रेखाओं के अंत में कर्व के अंदर की ओर लगाया जाता है। यदि शब्द के अंत में स्तर के बाद स्वर हो तो लूप का प्रयोग नहीं किया जाता, जैसे–

बिस्तर......... नश्तर......... मास्टर.......... पोस्टर......... राष्ट्र...........

मिनिस्टर.........मिनिस्टरी.........बैरिस्टर............. बैरिस्टरी..............

विस्तार..............

बहुवचनों का संकेत सामान्य नियमों के अनुसार ही डैश से किया जाता है, जैसे–

बिस्तरों.............पोस्टरों..............मिनिस्टरों.............बैरिस्टरों...........

वाक्यांशों में "स्त" लूप का प्रयोग "साथ" शब्द को जोड़ने के लिए किया जाता है, जैसे–

इसके साथ......... मेरे साथ..........उसके साथ.......... साथ-साथ...........

साथ ही साथ..........

शब्द चिह्न

संतुष्ट-संतुष्टि..........असंतुष्ट-असंतुष्टि.............जबरदस्त- जबरदस्ती..........

अभ्यास 14.1

आशुलिपि में लिखकर अभ्यास करें–

स्वस्थ, परास्त, पुष्ट स्टॉक, सचेष्ट, कंठस्थ, गश्त, अपदस्थ, यथेष्ट, चुस्त, बैरिस्टर, राष्ट्र, मिस्टर, वस्त्र, सौराष्ट्र, कष्ट, बस्ती, सुस्त, सुस्ती, मस्ती, शिकस्त दोस्ती

अभ्यास 14.2

आशुलिपि में लिखकर अभ्यास करें–

इस पुस्तक के सभी पाठ सरल और स्पष्ट हैं लेकिन पुरानी पुस्तिका में जो भाषा है वह काफी अस्पष्ट है। बच्चों को ऐसी पुस्तकें देना ठीक होगा जो कि उनके लिए मानसिक बोझ न बनें। बच्चों के बस्ते जितने छोटे होंगे उतना ही उनको आराम मिलेगा। पहले समय में समस्त माता-पिता, भाई-बहन आदि पांच साल की आयु से पहले बच्चों पर बोझ नहीं डालते थे। बच्चे मस्ती में खूब खेलते थे इसीलिए वे पुष्ट रहते थे लेकिन आज दो वर्ष की आयु में ही उन पर पढ़ाई का बोझ डाल दिया जाता है। इससे उनका विकास रुक जाता है। इस दिशा में समस्त समाज को सोचना चाहिए। सभी चीजें समय पर ठीक होती हैं। समय पर किया गया काम ही राष्ट्र को उन्नति की ओर ले जाता है।

अभ्यास 14.3

पढ़ें, लिखें तथा अभ्यास करें–

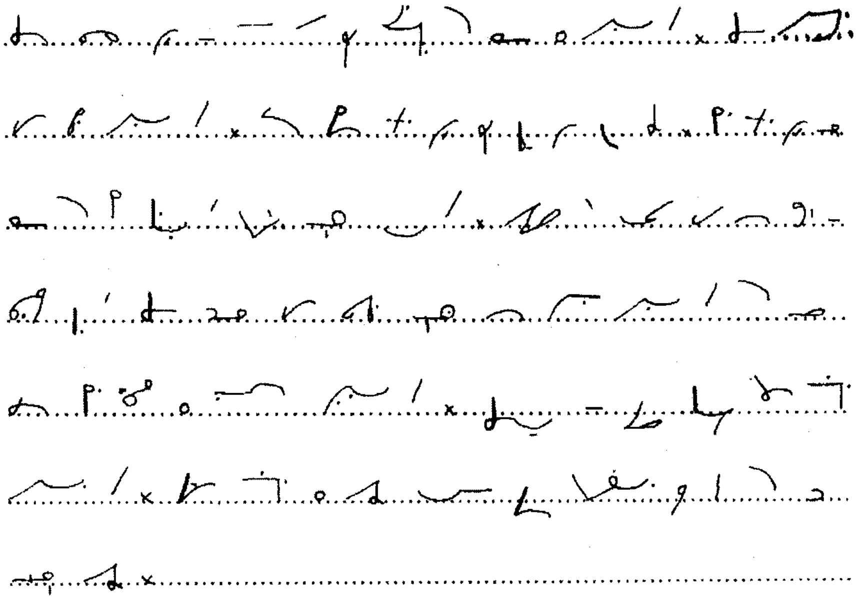

अध्याय – 15

प्रारंभिक हुक र तथा ल

किसी भी रेखा के बाद आने वाले र–ड़/ढ़ तथा ल को रेखाक्षर के आरंभ में हुक लगाकर भी प्रकट किया जाता है। य, र, ल, व, स तथा ह रेखाओं के आरंभ में हुक का प्रयोग नहीं किया जाता। आरंभिक हुक लगाने के सामान्य नियम इस प्रकार हैं–

1. र–ड़/ढ़ हुक

सरल रेखा के आरंभ में दाईं गति (↻) से लगाए गए एक छोटे हुक से व्यंजन र, ड़ या ढ़ का योग होता है, जैसे–

कर...... चर...... जड़...... पर...... बढ़ ......

वक्र रेखाओं में र–ड़/ढ़ हुक कर्व के अंदर की ओर लगाया जाता है, जैसे–

टर...... मर...... नर...... फर...... शर ......

2. ल हुक

सरल रेखाओं के आरंभ में बाईं गति (↺) से लगाए गए छोटे हुक से व्यंजन ''ल'' का योग होता है, जैसे–

कल...... गल...... बल...... चल ...... पल......

वक्र रेखाओं के आरंभ में कर्व के अंदर की ओर लगाए गए एक बड़े हुक से व्यंजन ''ल'' का योग होता है, जैसे–

टल...... डल...... नल...... फल...... मल......

र–ड़/ढ़ अथवा ल हुक का प्रयोग शब्दों के मध्य में भी किया जाता है, जैसे–

मगर ...... नम्रता ...... विक्रम ...... असफलता......

स्पष्टता और शुद्धता के लिए ''शर'' हमेशा नीचे तथा ''शल'' हमेशा ऊपर की ओर लिखा जाता है, जैसे–.

शर............ शल............ कुशल............ शुल्क............ श्रीगणेश............

3. र–ड़/ढ़ अथवा ल हुक के साथ स्वर

स्वर लगाने के साधारण नियमों के अनुसार ही हुक युक्त व्यंजन रेखाओं पर भी स्वर अपने स्थान के अनुसार ही लगाए जाते हैं, जैसे–

त्रि............ त्रिशूल............ पुत्री............ क्लेश............ क्लिष्ट............

किंतु स्वर युक्त अकेली रेखा के बाद र अथवा ल व्यंजन आने पर हुक के स्थान पर र तथा ल की पूरी व्यंजन रेखा लिखी जाएगी, जैसे–

तर...... किंतु तार...... बल...... किंतु बाल...... दर...... किंतु देर......

4. रेखा तथा हुक के मध्य स्वर

व्यंजन रेखा और र–ड़/ढ़ अथवा ल हुक के बीच स्वर होने पर भी रेखाओं को संक्षिप्त बनाए रखने के उद्देश्य से, जहां संभव हो, प्रारंभिक हुक का प्रयोग किया जाता है। स्वर को दर्शाने के लिए बिंदु स्वर के स्थान पर हुक की विपरीत दिशा में एक छोटा वृत्त लगाया जाता है, जैसे–

स्वर चिह्न बिंदु के लिए वृत्त (•) का प्रयोग

पार्क............ मार्ग............ तारीख............ तिलक............

डैश स्वर चिह्न के लिए डैश (–) का प्रयोग

प्रथम स्थान के स्वर के लिए रेखा से पहले तथा द्वितीय एवं तृतीय स्थान के स्वर के लिए रेखा को काटकर लिखा जाता है, जैसे–

मौलवी............ मूर्ख............ अनुकूल............ फौलाद............ गोलक............

5. दो रेखाओं को मिलाते समय फर, भर, टर, डर, फल, भल (.........) आदि के लिए सुविधानुसार वैकल्पिक दाई वक्र रेखा का प्रयोग किया जा सकता है, जैसे–

दायां वक्र - फर........ भर........ टर........ फल........ भल........

दाई से बाई दिशा की ओर लिखी जाने वाली रेखाओं के प्रारंभ तथा अंत में बाएं वक्र का प्रयोग तथा बाई से दाई दिशा की ओर लिखी जाने वाली रेखाओं से पहले और बाद में दाएं वक्र का प्रयोग स्पष्ट तथा सुविधाजनक होता है। जैसे–

फर्क........ टर्क........ कट्टर........ चटर........ कुफ्र........

श्रीफल........ पीटर........

हुक युक्त '''र'' तथा ''श'' का ऊपर–नीचे का प्रयोग

1. न, फ तथा भ के बाद आने वाले स, श–ष वृत्त के बाद रेखा ''र'' हमेशा ऊपर की ओर लिखी जाती है, जैसे–

अफसर........ नजर........ अभिसार........

2. यदि श–ष रेखा के बाद आरंभिक हुक युक्त क, ख, ग, घ का कोई व्यंजन आए तो श–ष रेखा ऊपर की ओर लिखी जाती है, जैसे–

शुक्रिया........ शक्ल........ शेखर........ शीघ्रता........

3. शब्द के अंत में ''शल'' हमेशा ऊपर की ओर लिखा जाता है, जैसे–

ऑफिशियल........ बलशाली........ कुशल........

शब्द-चिह्न

काल...........ख्याल, खिलाफ..............अगला-ले-ली...........पिछला-ले-ली..........

जल्द..........जल्दी..............विचार.................छोड़..........पिछड़ा-ड़े-ड़ी..........

निर्वाचन, निर्वाचित..........निर्णय................ निरर्थक.................मजबूर-री..........

तरह, तैयार.......................बेहतर, तौर.....................उत्तर, अतिरिक्त....................

आदर-आदरणीय, आधार...................कार्य..............अधिकार..............मशहूर..............

सर्वनाम

हम, हमें.......... हमको.......... हमारा-रे-री.......... हमने..........

हमसे.......... हममें.......... हम पर..........

वाक्यांश

के बारे में.............. लम्बाई-चौड़ाई.............. जल्दी से जल्दी..............

अभ्यास 15.1

आशुलिपि में लिखकर अभ्यास करें–

आदरणीय मिनिस्टर ने अगले बजट के बारे में जो विचार यहां रखे हैं, बेहतर होता यदि वे देश की लम्बाई-चौड़ाई और इसकी आवश्यकताओं का ख्याल रखते हुए इस बजट को बनाते। आज देश को इस चीज की आवश्यकता है कि महंगाई कम हो, रोजगार बढ़े और लोग मजबूर न हों तभी हम सही मार्ग पर चलते हुए अनुकूल दिशा में बढ़ सकते हैं। लोगों को रोटी-कपड़े का अधिकार मिले। इसके बिना यह बजट निरर्थक ही होगा। पिछला बजट पेश करते समय सदस्यों ने कहा था कि बेरोजगारी दूर करने के लिए जल्दी से जल्दी साधन जुटाने होंगे, पर ऐसा लगता है कि इस तरह का निर्णय लेने में काफी

देर हुई है। आपसी सहयोग और बेहतर तालमेल से यह कार्य किया जा सकता है। सभी सदस्य इसके लिए तैयार हैं लेकिन सरकार को अपनी ओर से भी पहल करनी चाहिए। देश का विकास और लोगों के जीवन-स्तर को अच्छा बनाना ही हम सब का पहला कार्य है। यह सरकार पर निर्भर करता है कि वह कैसे सभी का सहयोग लेना चाहती है।

अभ्यास 15.2

पढ़ें, लिखें तथा अभ्यास करें–

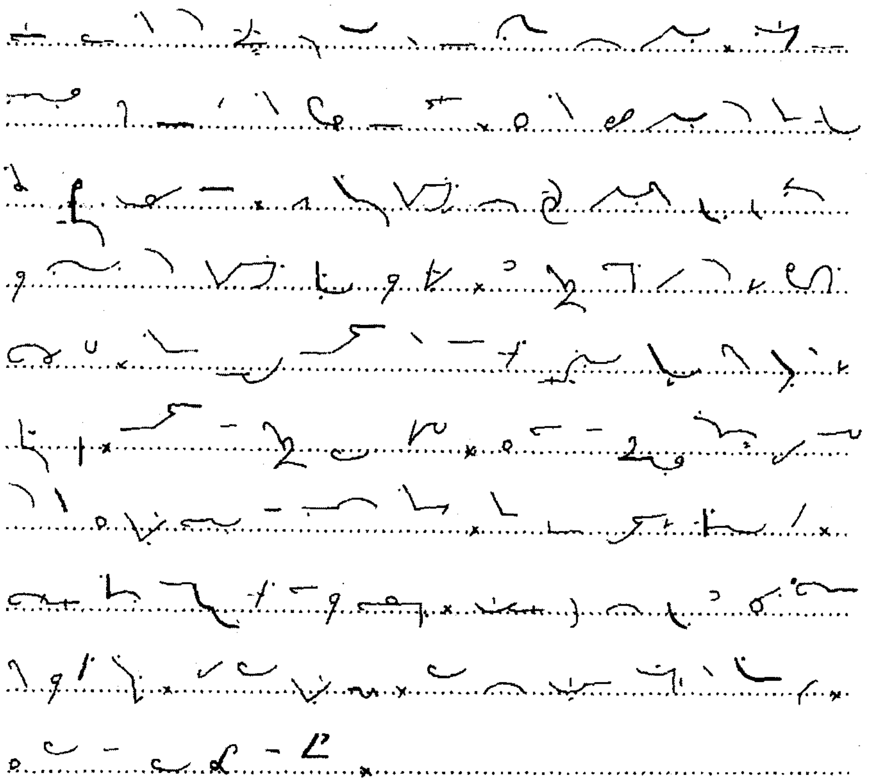

अध्याय – 16

अंतिम हुक न, य, व, फ तथा अंतिम बड़ा हुक शन

व्यंजन के बाद आने वाल न–ण अथवा य, व, फ के लिए अंतिम छोटे हुक का प्रयोग किया जाता है। अंतिम हुक लगाने के सामान्य नियम इस प्रकार हैं–

हुक न–ण

सीधी रेखा के अंत में दाई गति **(Right motion)** ( ) से लगाए गए छोटे हुक से न–ण का योग होता है, जैसे–

बन............कान...............ऋण...........हीन............ गण...............

वक्र रेखाओं के अंत में यह हुक वक्र (Curve) के अंदर की ओर लगाया जाता है, जैसे–

फन...........मन...............शान................ टन............ नैन................

हुक य, व, फ

सीधी रेखाओं के अंत में बाई गति **(Left motion)** ( ) से लगाए गए एक छोटे हु से य, व तथा अंग्रेजी के शब्दों में व्यंजन फ का योग होता है, जैसे–

पाव...........जीव...........राज्य...........बाह्य...........चीफ़...........कफ़...........

वक्र रेखाओं में य, व, फ हुक नहीं लगाया जाता, जैसे–

फावड़ा.............. नाव............... भावना.................. मवेशी...............

न–ण, तथा य, व अथवा अंग्रेजी के शब्दों में फ के लिए हुक का प्रयोग सुविधानुसार शब्द के मध्य में भी किया जाता है, जैसे–

चंचल................पंचशील................उज्ज्वल................उपयोग................रैफ़री................

शब्द के अंत में व्यंजन न–ण, य, व अथवा फ के बाद स्वर आने पर हुक का प्रयोग नहीं किया जाता, जैसे–

मन................ किंतु माने................ दान................किंतु दानी................

पान................किंतु पानी................ रफ़ .... किंतु रफ़ी................

"न" हुक युक्त "र" रेखा से पूर्व कोई रेखा हो तो रेखा "र" ऊपर की ओर लिखी जाती है, जैसे–

धारण................ मरण................ उच्चारण................

वाक्यांशों में न–ण हुक का प्रयोग नहीं, दिन और पूर्ण को प्रकट करने के लिए भी किया जाता है, जैसे–

यह नहीं कहा गया है................कुछ दिन................पिछले दिन................

मूर्खतापूर्ण................सहानुभूतिपूर्ण................ शांतिपूर्ण................

सन, शन, षण हुक

किसी शब्द के अंत में सन, शन अथवा षण आने पर उसे एक बड़े हुक से प्रकट किया जाता है। इसके सामान्य नियम इस प्रकार हैं–

क. अकेली सीधी रेखा में स्वर की विपरीत दिशा में लगाया जाता है, जैसे–

पोषण............... रोशन............... ऐक्शन.................. दूषण...............

ख. सन, शन, षण हुक वृत्त या हुक युक्त सीधी रेखाओं के अंत में हुक या वृत्त की विपरीत दिशा में लगाया जाता है, जैसे–

सेक्शन.......... घर्षण.......... दर्शन.......... निर्वासन..........

जहां तक हो सके अन्य स्थितियों में भी शन हुक लगाते समय रेखा के सीधेपन को कायम रखने की कोशिश करनी चाहिए, जैसे–

लक्षण................ भक्षण................

ग. वक्र रेखाओं के अंत में सन, शन अथवा षण हुक कर्व के अंदर की ओर लगाया जाता है, जैसे–

भाषण................कमीशन...........शासन................फैशन.............

घ. यदि अंतिम व्यंजन न–ण पर स्वर हो तो स्वर को स्थान देने के लिए पूरी व्यंजन रेखा लिखी जाती है, जैसे–

प्रदर्शन...........परंतु प्रदर्शनी...........रोशन.......... परंतु रोशनी..............

शब्द-चिह्न

उद्घाटन..........कठिन.........दृष्टिकोण.........परिवर्तन.........कल्याण..........

कारण............ किन, किंतु.......... केंद्रीय.......... चुनाव.......... पुनः..........

आपने......... अपना-ने-नी.......... ज़नाब............ प्रयोजन, जनता..........

जिन, जिन्हें.......... ज्यों.......... त्यों..........

स्पष्टीकरण.......... संगठन.......... संकटपूर्ण..........

नामुमकिन............ नौजवान.......... मामला, मामूली.......... मिल..........

फिलहाल.......... आश्वासन........... शिक्षण.......... संरक्षण...........

सर्वनाम

किन्हें.......... किन्होंने..........

अभ्यास 16.1

आशुलिपि में लिखकर अभ्यास करें–

कुछ दिन पहले देश के सामने एक प्रमुख प्रश्न यह उपस्थित हुआ कि संकटपूर्ण स्थितियों से देश को कैसे बचाया जा सकता है। परिवर्तन के इस युग में सही चीज़ का चुनाव करना कठिन कार्य है। जनता चुनाव में जिन्हें चुनती है, वे कोई मामूली लोग नहीं होते हैं। इस कठिन विषय पर पिछले कुछ सालों से विचार किया जा रहा है। किसी भी काम के बारे में यह कहना कि यह नामुमकिन है, यह नहीं हो सकता, यह एक मूर्खतापूर्ण विचार है। कोई भी कार्य नामुमकिन नहीं होता। भारत सरकार निष्पक्ष तरीके से चुनाव कराना चाहती है। लेकिन प्रश्न यह है कि ऐसे संगठनों का विकास कैसे किया जाए, सदन को यह नहीं बताया गया है।

हमें बेसहारा लोगों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण रुख अपनाना चाहिए। आपका यह दृष्टिकोण सही है, किंतु उसमें एक कमी है । मंहगाई के कारण इस देश में संकटपूर्ण स्थिति पैदा हो गई है। जनाब, आप जनता को सुविधा देने और उसके कल्याण के बारे में सोचें। युद्ध जैसा भी हो, उससे नुकसान ही होता है।

अभ्यास 16.2

पढ़ें, लिखें तथा अभ्यास करें–

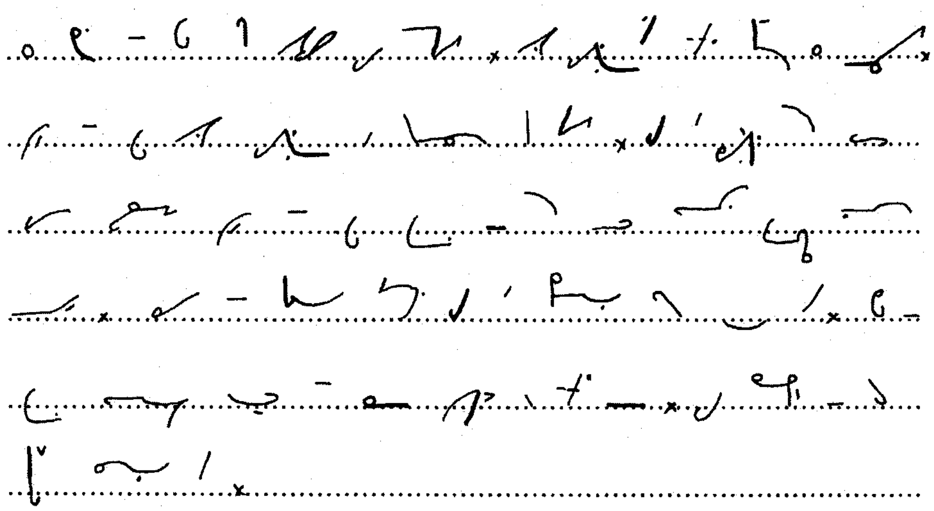

अध्याय – 17

हुक और वृत्त का मेल

1. आरंभिक हुक के साथ वृत्त का मेल

क. र–ड़, ढ़ हुक युक्त सीधी रेखा से पहले यदि स अथवा स्व वृत्त आए तो वृत्त को र हुक की दिशा में अर्थात् दाईं गति (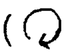) से लिखा जाता है, जैसे –

सक्रिय सब्र स्वीकृति सुप्रीम

ख. र–ड़, ढ़ हुक युक्त वक्र रेखाओं में स वृत्त को र–ड़, ढ़ हुक के अंदर इस प्रकार लगाया जाता है कि हुक और वृत्त दोनों स्पष्ट रूप से दिखाई दें, जैसे –

सफर सटर समर

ग. ल हुक युक्त सीधी तथा वक्र रेखाओं में वृत्त को हुक के अंदर लगाया जाता है, जैसे –

सबल सकल सफल

घ. यदि हुक ल को लगाना सुविधाजनक न हो तो पूरी रेखा लिखनी चाहिए, जैसे –

निश्चल पंडाल 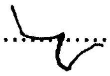 चंडाल

च. च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग तथा प वर्ग के व्यंजनों के बाद स्कर / ष्कर आए तो उसे इस प्रकार लिखा जाएगा –

भास्कर तस्कर 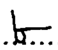 पुष्कर उपस्कर 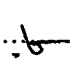

2. अंतिम हुक के साथ वृत्त का मेल

क. न हुक युक्त सीधी रेखा के अंत में स, श–ष अथवा ज़ वृत्त आने पर उसे हुक की दिशा में ही दाईं गति ( ) से लगाया जाता है, जैसे –

बांस............कंस.............हंस.............वंश.............. ध्वंस..............

ख. न हुक युक्त वक्र रेखा अथवा य–व, फ हुक युक्त सीधी रेखा के बाद स, श–ष अथवा ज़ वृत्त आने पर उसे हुक के अंदर इस प्रकार लगाया जाता है कि वृत्त और हुक दोनों स्पष्ट रूप से दिखाई दें, जैसे –

पावस.............. वयश.............. लज्जावश...............

ग. शब्दों/वाक्यांशों में कंस (.........) का प्रयोग "के अनुसार" को जोड़ने के लिए किया जाता है, जैसे–

बुद्धि के अनुसार............समय के अनुसार.............उसी के अनुसार..............

शब्द-चिह्न

ध्यान .... अध्ययन, दोनों..... उत्पादन........ परिणाम........ उत्पन्न.......

विध्वंस......साधारण........समर्थन........ सहकार........स्वीकार........

प्राप्त........ प्रकट........ परंतु........प्रस्ताव........प्रोत्साहन........परिस्थिति........

बड़ा-ड़े-ड़ी.......... बढ़, बगैर........बुरा-रे-री........ मुकाबला-ले.........

बल्कि........ बिलकुल........ जरूर-री........ वातावरण........ वर्णन........

विवरण........ सिफारिश........

वाक्यांश

नीति के अनुसार............ सेनाध्यक्ष के अनुसार............

मौसम के अनुसार .... अनुमान के अनुसार............

आदेश के अनुसार .... के सामने .... उन्होंने कहा कि............

इस बारे में.......... की गई है कि.......... उसी के अनुसार ....

विधान सभा .... के कारण से.......... इस विषय पर..........

अभ्यास 17.1

आशुलिपि में लिखकर अभ्यास करें –

जनाब, मेरा इस बिल पर बोलने का कोई इरादा नहीं था, किंतु मेरे दोस्त ने अभी हाउस के सामने कुछ ऐसे मसले पेश किए हैं, जिनका उत्तर देना आवश्यक हो गया है। उन्होंने कहा कि जिस आदेश के अनुसार यह बिल बन रहा है वह सभा के सामने नहीं आया है। इसके बारे में मुझे यह कहना है कि विधान में यह चीज पहले स्वीकार की गई है कि जो विधान कश्मीर की विधान सभा बनाएगी वह इस देश की सरकार को मंजूर होगा, उसी के अनुसार वह आदेश लागू किया गया और बिल बनाकर हाउस के सामने पेश किया गया है। अब इसमें किसी तरह का कोई संशोधन वहां की विधान सभा की बिना मंजूरी के नहीं हो सकेगा। मेरे दोस्त ने जो विचार यहां रखे हैं, अच्छा होता कि वे उनको पहले कश्मीर की विधान सभा के सामने रखते और उस हाउस की मंजूरी हासिल करके यहां पेश करते।

आगामी चुनाव की तारीखों में अब किसी तरह के परिवर्तन की आशा नहीं है तथा आशा यह की जा रही है कि निर्वाचन सब दलों की सहमति और सहयोग से पूरा होगा। यद्यपि यह एक छोटा कार्य नहीं है किंतु आप सब की सहायता से मैं इसे सुचारु रूप से पूरा कर सकूंगा। योजना मिनिस्टर ने इस मामले

का स्पष्टीकरण देते हुए कहा है कि आप सब इस योजना को सफल बनाने की कोशिश करेंगे तो यह प्रयोजन सिद्ध हो सकेगा। यद्यपि देश संकटपूर्ण स्थितियों से गुजर रहा है, किंतु सफलता हासिल करना नामुमकिन नहीं है। मुझे पूरा यकीन है कि न सिर्फ इस देश के नौजवान का अपितु सभी लोगों का सहयोग भी सदा इसके साथ रहेगा।

अभ्यास 17.2

पढ़ें, लिखें तथा अभ्यास करें –

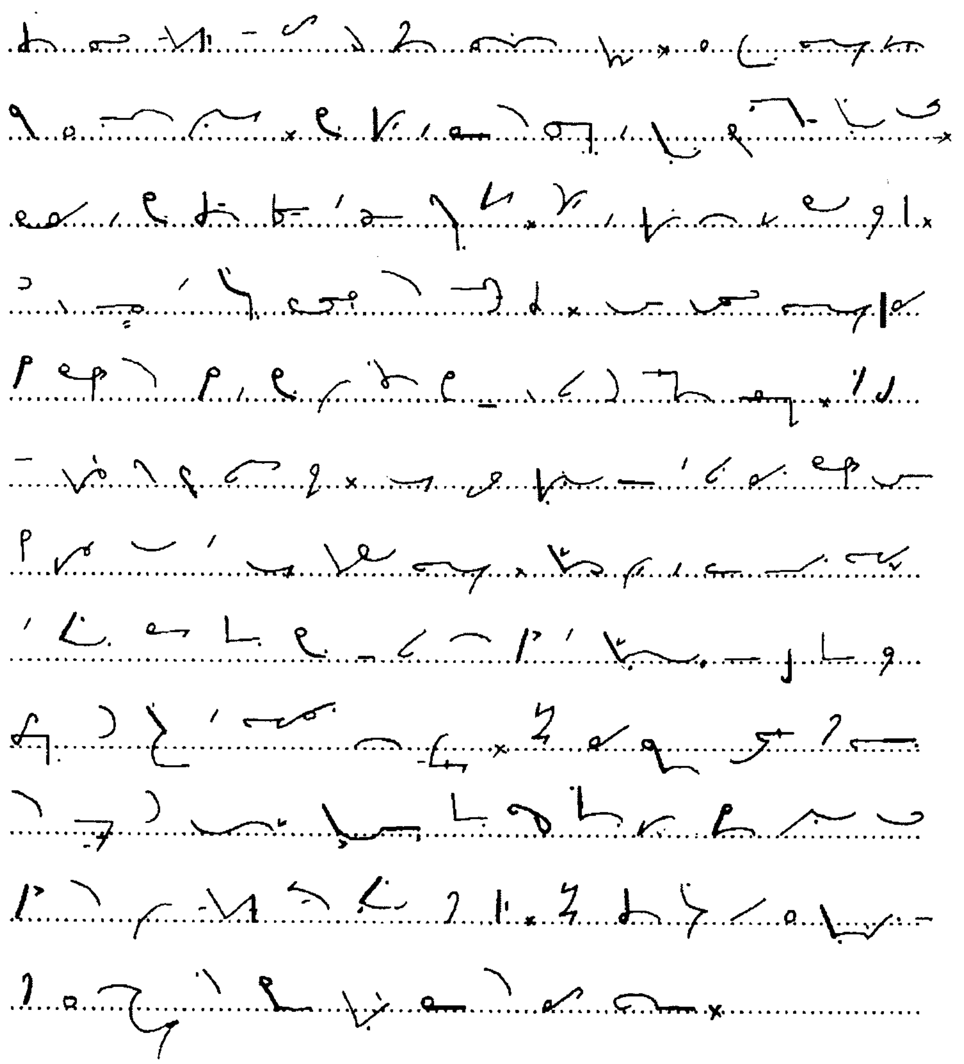

अध्याय – 18

यौगिक व्यंजन (Compound Consonant)

1. क्य–क्व, ख्य–ख्व, ग्य–ग्व

क, ख, ग, घ के आरंभ में बाईं गति से लगाए गए बड़े हुक से इन व्यंजनों के साथ ''य'' अथवा ''व'' का योग होता है, जैसे –

क्यारी............ख्याल............ख्वाब............ज्ञान............योग्यता............

2. स्य–ष्य–श्य, श्व

किसी भी शब्द के अंत में स्य–ष्य–श्य, श्व अथवा सीय–शीय आने पर ''स'' वृत्त की गति से एक छोटा हुक लगाया जाता है, जैसे –

कांस्य............उद्देश्य............भविष्य............दिवसीय............विश्व............

3. म्प–म्ब–म्भ

रेखा ''म'' को गहरा करने पर उसमें प, ब अथवा भ का योग होता है जैसे –

भूकम्प............चम्बल............आरम्भ............निलम्बन............

4. व्य

रेखा ''व'' के हुक को बड़ा करने पर उसमें ''य'' का योग होता है, जैसे –

व्यापक............व्यूह............व्याकरण............अपव्यय............

शब्द-चिह्न

गम्भीर-ता............समाप्त..........सम्भव.............संबंध-धी-धित ....

निर्माण............निर्विघ्न...........महान..............मुमकिन..........

विद्यमान............क्योंकि............ क्यों.......... व्यवहार..........

अभ्यास 18.1

आशुलिपि में लिखकर अभ्यास करें –

1. आख्या क्वीन ग्वाला विज्ञाता ख्याति क्यारी ख्वाब
2. रहस्य मनुष्य देशीय वर्षीय हास्य उद्देश्य भविष्य
3. दम्पती खम्भा लम्बा चम्पा विडम्बना स्तम्भ दम्भ सम्भालना
4. व्यय व्यवसाय व्यस्त व्यथा व्यभिचार व्यापक
5. देश के विकास के काम को गंभीरता से पूरा करने के लिए इससे जुड़ी हुई कार्य योजना तैयार करने का काम आरंभ कर दिया गया है।
6. इस देश की महान परंपरा को बनाए रखते हुए योजना निर्विघ्न पूरी हो और यह तभी संभव है जब समाज का हर वर्ग इसमें सहयोग करे।
7. आपके पास वैज्ञानिक विकास की कुंजी और हमारे पास उसके लिए अच्छी योजना है। अतः विज्ञान के विकास के लिए दोनों का सहयोग आवश्यक है।
8. आपका व्यवहार इतना कठोर क्यों है? परिश्रम करने से मनुष्य कठिन कार्यों को भी मुमकिन बना लेता है क्योंकि परिश्रम ही सफलता की कुंजी है।
9. शिक्षा द्वारा ही आधुनिक ज्ञान बच्चों को मिल सकता है। इसी पर बच्चों के भविष्य का निर्माण होता है और यही शिक्षा का उद्देश्य भी है।
10. भविष्य की कल्पना तभी साकार होगी जब देश में योग्यता को प्रश्रय मिलेगा। व्यापक स्तर पर विकास के लिए अपव्यय रोकना आवश्यक है।

अभ्यास 18.2

पढ़ें, लिखें तथा अभ्यास करें–

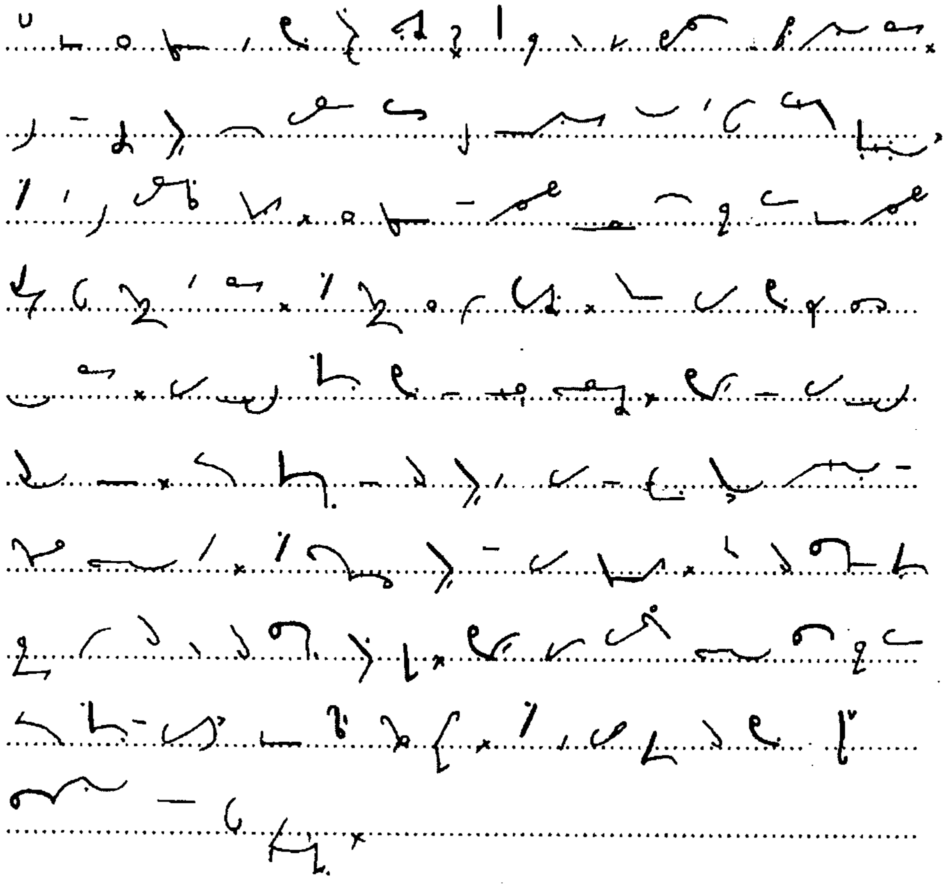

अध्याय – 19

आधा (Halving) करने का नियम

व्यंजन रेखा को आधा करने पर उसमें त, थ, द, ध, ट, ठ, ड, तथा ढ का योग होता है। रेखा को आधा करने के सामान्य नियम इस प्रकार हैं –

1. अकेली हल्की व्यंजन रेखा को त, थ, ट, ठ के लिए और अकेली गहरी व्यंजन रेखा को ड, ढ, द, ध, के लिए आधा किया जाता है, जैसे –

खत............परंतु खाद................ पथ...........परंतु पद..............

नत............परंतु गाद................. बद............परंतु बात..............

दाद.............. परंतु जात.............. बुध............ परंतु बुत..............

2. दो या दो से अधिक रेखाओं, वृत्त युक्त रेखाओं तथा अंतिम हुक युक्त अकेली रेखा होने पर उसे ट, ठ, ड, ढ, त, थ, द, ध, के लिए आधा किया जाता है। पढ़ते समय पहले व्यंजन रेखा फिर हुक और बाद में ट, ठ, ड, ढ, त, थ, द, ध व्यंजन को पढ़ा जाता है। लेकिन अंतिम वृत्त से युक्त रेखा में पहले व्यंजन रेखा फिर त, थ, द, ध आदि और अंत में वृत्त पढ़ा जाएगा, जैसे –

अवगत..........सीमित..........चंद .... कांड.......... दंत..........

कहावत.......... कंठ.......... सबूत.......... वीभत्स.......... मेंढक..........

3. म, न, ल तथा नीचे की ओर लिखे जाने वाले "र" को गहरा करके आधा करने पर उसमें "द" अथवा "ध" का योग होता है, जैसे –

अहमद........ आंदोलन.. ..... हार्दिक.......... अर्ध..........प्रहलाद.......

4. ऊपर की ओर लिखी जाने वाली अकेली व्यंजन रेखा ''र'' को आधा नहीं किया जाता, जैसे —

रात.................... रथ................ रीत..................

5. समान दिशा में लिखी जाने वाली दो सीधी सरल तथा वक्र रेखाओं (म,न) पर आधा करने के नियम को लगाते समय दोनों रेखाओं को अलग-अलग करके लिखा जाता है, जैसे —

प्रबंध.......... अंधाधुंध.......... पाबंद.......... तादाद.......... आमदनी..........

6. शब्द के अंत में स्वर आने पर आधा करने का नियम लागू नहीं होता अर्थात् पूरी व्यंजन रेखा लिखी जाती है, जैसे-

मीत..........लेकिन मोती.......... खेत..........लेकिन खेती..........

7. **आधी की गई रेखाओं का स्थान—** शब्द के आरंभ में आधी की गई रेखा को प्रथम और द्वितीय स्थान के स्वर के लिए नियमानुसार अपने प्रथम अथवा द्वितीय स्थान पर ही लिखा जाता है लेकिन तृतीय स्थान के स्वर के लिए भी रेखा को द्वितीय स्थान पर ही लिखा जाता है, जैसे —

बादल.............. बदली..........पुतला.......... तुतलाना..........

शब्द-चिह्न

कर्त्तव्य..........अत्यंत..........समर्थ..........परिवर्तित..........

प्रत्यक्ष..........सम्बद्ध..........संयुक्त..........संदेह..........जरूरत..........

अंदर..........स्वीकृत..........सम्मिलित..........संरक्षित..........बात, बाद..........

बहुत............विरोध-धी, विरुद्ध.............पर्याप्त........... प्रयत्न, प्रत्येक...........

अर्थ, अर्थात.............शायद..............शिक्षित............निहायत.............

हाथ.............अंत, अंतिम...........

अभ्यास 19.1

आशुलिपि में लिखकर अभ्यास करें—

1. तुरंत, यथार्थ, मृतक, सूचनार्थ, प्रतीक्षा, परमार्थ, संभ्रांत, सूरत, अद्‌भुत, पृथक, आघात, मुक्त, अख्तियार, पसंद, अकस्मात, बंधन, निश्चित, नैतिक, उपयुक्त, स्वार्थ

2. देश की बुनियाद मजबूत करने के लिए यह आवश्यक है कि देश के लोग शिक्षित हों और राजकाज में सक्रिय रूप से रुचि लें। इसी इरादे से यह सिद्धांत स्वीकार किया गया है कि देश के प्रत्येक बच्चे की प्राथमिक शिक्षा की मुफ्त व्यवस्था का प्रबंध राज्य को करना है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए, राज्यों का सहयोग परम आवश्यक है।

3. शिक्षा आयोग ने गहन और व्यापक अध्ययन के बाद जो रिपोर्ट प्रकाशित की है, उसमें शिक्षा से संबद्ध सभी पहलुओं पर विचार कर प्रस्ताव प्रस्तुत किए गए हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि आयोग ने जो सिफारिश की हैं उसके संबंध में सदस्यों में थोड़े-बहुत मतभेद हो सकते हैं। समाज और राष्ट्र के हित को दृष्टि में रखते हुए मतभेदों को अधिक महत्व देना ठीक नहीं है।

4. इस बिल का विरोध करने के लिए बहुत से दलों ने संयुक्त रूप से अपील की है। बिल का विरोध शायद पर्याप्त रूप से न हो, इसमें मुझे संदेह है। प्रत्येक दल के नेता का यह कर्त्तव्य होना चाहिए कि विरोध प्रदर्शन में प्रत्यक्ष रूप से भाग लें और अपने विचारों को स्पष्ट रूप से सदन के समक्ष प्रस्तुत करें, यह निहायत जरूरी भी है। अंत में मैं आपसे यही कहूंगा कि आप इस चर्चा में अवश्य सम्मिलित हों।

अभ्यास 19.2

पढ़ें, लिखें तथा अभ्यास करें—

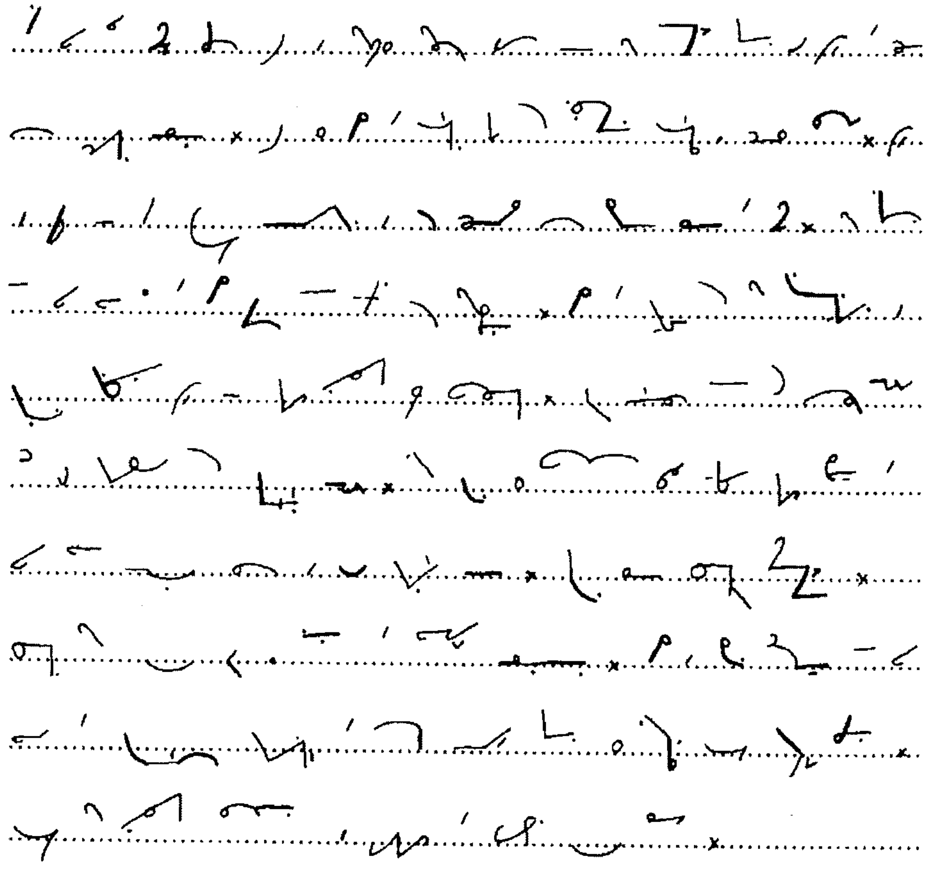

अध्याय – 20

दुगुना (**Doubling**) करने का नियम

साधारणत: किसी व्यंजन रेखा को दुगुना करने पर उस व्यंजन के साथ **कर-कार, टर-टार, तर-तार, डर-डार** अथवा **दर-दार** का योग होता है, जैसे—

कार्यक्रम............ इनकार............ मोटर............ अंतर............

रफ्तार............ निडर............ सुंदर............ जमींदार............ भंडार............

दुगुना करने के नियम

1. अकेली सीधी रेखाओं को **कर-कार, तर-तार, टर-टार, दर-दार, डर-डार** आदि के लिए दुगुना नहीं किया जाता है। इन रेखाओं पर दुगुना करने का नियम तभी लागू होता है जब उनसे पहले या बाद में कोई व्यंजन रेखा, वृत्त अथवा हुक हो, जैसे—

सुपुत्र............ परंतु पुत्र............ सचित्र............ परंतु चित्र............

केंद्र............ परंतु कद्र............ यंत्र............ परंतु यत्र............

कुपुत्र............ परंतु पात्र............

2. वक्र रेखाओं को अकेला होने पर भी **कर-कार, तर-तार, टर-टार, दर-दार, डर-डार** आदि के लिए दुगुना किया जाता है। परंतु ''ल'' रेखा जब अकेली हो तो उसे **डर-डार** और **दर-दार** के लिए दुगुना नहीं किया जाता। जैसे—

फिटर............ मीटर............ लीटर............ लीडर............

नौकर............ भद्र............ लेकर............ मदर............

3. किसी भी दुगुनी की गई व्यंजन रेखा के अंत में **हुक या वृत्त** होने पर पहले वृत्त अथवा हुक तथा बाद में **कर-कार**, तर-तार, **दर-दार**,आदि पढ़ा जाता है, जैसे —

सिकंदर...... पीसकर...... चूसकर...... भिंडर......

4. **म्प**, **म्ब**, अथवा **म्भ** को दुगुना करने पर उसमें **''र''** का तथा **ङ** को दुगुना करने पर उसमें **''र''** अथवा **''आर''** का योग होता है, जैसे —

सितंबर...... आडंबर...... लंगर...... शृंगार......

5. शब्द के अन्त में स्वर आने पर अंतिम स्वर को स्थान देने के लिए व्यंजन रेखा लिखी जाती है। ऐसे स्थानों पर दुगुना करने का नियम लागू नहीं होता, जैसे —

सुंदर...... परंतु सुंदरी...... ईमानदार...... परंतु ईमानदारी......

भद्र...... परंतु भद्रे...... सुपुत्र...... परंतु सुपुत्री......

6. वाक्यांशों (Phraseography) में दुगुना करने के नियम का प्रयोग **तरह** , **तौर** को जोड़ने के लिए भी किया जाता है,जैसे —

आम तौर से...... मिसाल के तौर पर......

किस तरह से...... जिस तरह से......

हर तरह से...... आमतौर पर......

7. क्रियावाचक शब्दों में **''न''** व्यंजन रेखा को दुगुना करने पर उसमें चाहिए का योग होता है, जैसे —

खाना चाहिए...... देखना चाहिए...... जाना चाहिए......

8. दुगुना करते समय रेखाओं का स्थान सामान्य रेखा की तरह जहां तक संभव हो स्वर के अनुसार लाइन से ऊपर, लाइन पर या लाइन काट कर लिखा जाता है, जैसे —

जानदार.... .... बंदर........ .... सुंदर.... 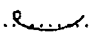 ...... लीटर...... 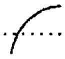 ....

शब्द-चिह्न

ज्यादातर.... .... जिम्मेदार...... .... प्रकार...... 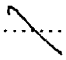 ......

अभ्यास 20.1

आशुलिपि में लिखकर अभ्यास करें —

1. अंतर, केंद्र, कवींद्र, जानदार, शानदार, निरंतर, खबरदार, मंत्र, देशांतर, हर तरह से, जिस तरह से, किस प्रकार से, खाना चाहिए, कहना चाहिए, लाना चाहिए।

2. व्यापार संस्था की एक बैठक दिसंबर माह में हुई जिसमें सदस्यों ने व्यापार संबंधी सभी बातों पर विचार किया और इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि इस काम में जो समस्याएं हैं उन्हें अधिकारी वर्ग के सम्मुख रखा जाए।

3. इससे कोई इनकार नहीं कर सकता कि प्रत्येक क्षेत्र में भारत ने शांति के लिए निरंतर प्रयास किए हैं। भारत के प्रयासों से ही विश्व लगातार शांति के मार्ग पर आगे बढ़ रहा है।

4. सारे देश में मूल्य वृद्धि पर गंभीर चिंता व्यक्त की जा रही है। वास्तव में इसका असर हमारे आर्थिक ढांचे पर बुरी तरह से पड़ रहा है। अत: यह आवश्यक है कि सभी दलों को इस समस्या के समाधान के उपाय करने का प्रयत्न करना चाहिए और इसमें सरकार की सहायता करनी चाहिए।

5. ज्यादातर लोग आजकल महंगाई से पिस रहे हैं। किसी प्रकार उन्हें राहत देनी चाहिए। राहत देने के लिए केवल उसी आदमी को बुलाना चाहिए जो ईमानदार हो और जिसका व्यवहार भी अच्छा हो क्योंकि वर्तमान समय में लोगों को आसानी से समझना कठिन है।

6. निस्संदेह यह कहा जा सकता है कि नियमों तथा कानून की अवहेलना ज्यादातर पढ़ा-लिखा वर्ग ही करता है। साधारण व्यक्ति तो अनुसरण करने के लिए हमेशा तैयार रहता है।

अभ्यास 20.2

पढ़ें, लिखें तथा अभ्यास करें —

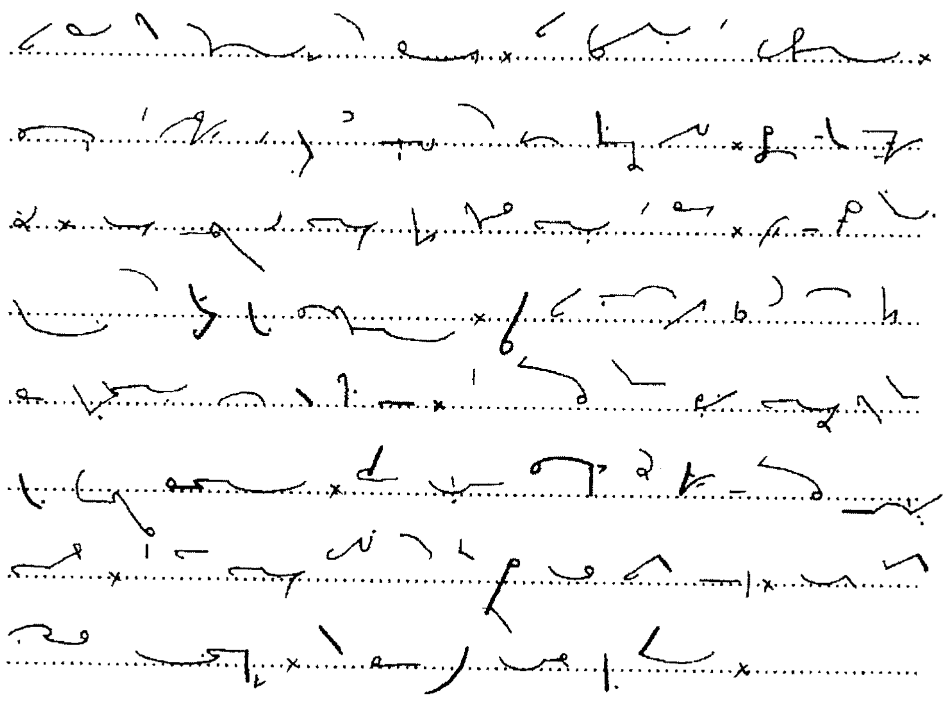

अध्याय – 21

बिंदु कम-काम, कन-कान तथा स्वयं वृत्त

बिंदु कम–काम, कन–कान

किसी शब्द के आरंभ में **कम, काम, कन, कान** आने पर उसे एक बिंदु (.) से प्रकट किया जाता है जो कि रेखा के आरंभ में लगाया जाता है जैसे —

कंजूस...... .... कमसिन..... ...... कामकाज...... ....

कामयाब... .... कनपटी...... .... कमजोर..... ....

शब्द के मध्य में **कम, काम, कन, कान** आने पर उसके पहले और बाद में आने वाले शब्द–खण्डों को अलग–अलग करके लिखा जाता है, जैसे —

नाकामयाब...... .... इनकम-टैक्स...... ....

स्वयं - वृत्त

किसी शब्द के आरंभ में "**स्वयं**" शब्द आने पर उसे एक छोटे वृत्त (o) से दर्शाया जाता है जो कि कम–काम बिंदु की तरह व्यंजन रेखा से पहले लगाया जाता है, जैसे —

स्वयं सेवक.... .... स्वयं सिद्ध....... ....

स्वयंप्रकाश...... ...... स्वयंभू........ ....

शब्द चिह्न

परीक्षा .... विद्यार्थी......... 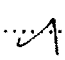 ....

अभ्यास 21.1

आशुलिपि में लिखकर अभ्यास करें –

1. कामचोर, कमजोरी, कमबख्त, कानूनगो, कंचन
2. स्वयंप्रमाण, स्वयंप्रकाश, स्वयंभू
3. आज इस मेले में अनेक स्वयंसेवक कार्य कर रहे थे। स्वयंसेवकों का नेता बड़ा कंजूस था जिस कारण अनेक स्वयंसेवक उसके आदेशों का पालन नहीं कर रहे थे। वह धन खर्च करने में बहुत कंजूसी कर रहा था। स्वयंभू की तरह बैठा वह केवल आदेश देता जा रहा था। सच कहते हैं कि वे लोग बदनसीब होते हैं जो समय मिलने पर भी अच्छे स्वयंसेवक नहीं बन पाते।

अभ्यास 21.2

पढ़ें, लिखें तथा अभ्यास करें –

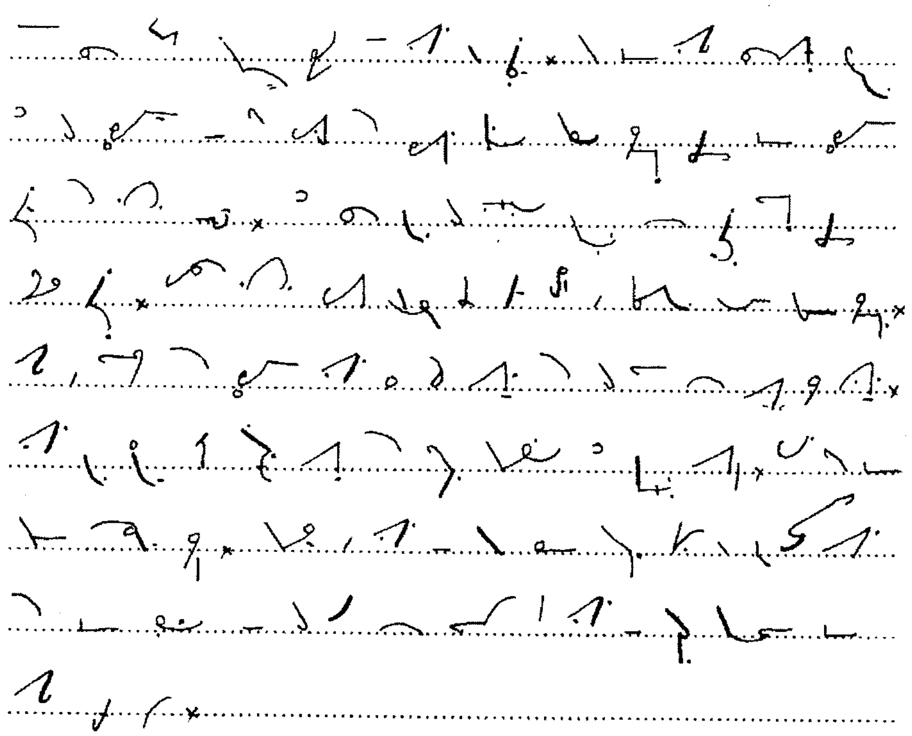

अध्याय – 22

समान रेखाक्षरों में भेद

अब तक हम हिंदी आशुलिपि के सभी सिद्धांतों का अध्ययन कर चुके हैं। आशुलिपि में गति और शुद्धता का बहुत महत्व है। इस अध्याय में हम उन नियमों का अध्ययन करेंगे जिनकी सहायता से हमें एक व्यावहारिक व कुशत आशुलिपिक/रिपोर्टर बनने में सहायता मिलेगी।

सभी भाषाओं में शब्दों के आरंभ और अंत में दूसरे शब्द, शब्द-खण्ड अथवा व्यंजन जुड़कर नए-नए शब्दों का निर्माण करते हैं। हिंदी भाषा भी इसका अपवाद नहीं है। आशुलिपि में ऐसे शब्दों को लिखने के लिए कुछ सरल व्यवस्थाएं की गई हैं। यहां ऐसी कुछ व्यवस्थाओं को उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया गया है जिनका अभ्यास करने के बाद प्रशिक्षार्थी नए-नए शब्दों को लिखने और समान रेखाक्षर वाले शब्दों में अंतर करने की कला सीख सकते हैं।

अनेक शब्द उच्चारण में समान अथवा मिलते-जुलते होने के कारण उनके आशुलिपि रेखाक्षर समान होते हैं परंतु अर्थ में भिन्नता रहती है। अतः आशुलिपि लिखते समय ही स्वर लगाकर, स्थान बदल कर अथवा हुक या वृत्त के स्थान पर व्यंजन रेखा लिखकर उनमें अंतर किया जाता है ताकि आशुद्धियों की संभावना न रहे। यहां कुछ उदाहरणों द्वारा इसे स्पष्ट किया गया है। आशुलिपि के प्रत्येक प्रशिक्षार्थी के लिए इनको अच्छी तरह समझना और इनका अभ्यास करना आवश्यक है।

(क) स्वर लगाकर अथवा दिशा बदलकर

नेक अनेक नीति अनीति

बोध अबोध लग अलग

लूम इल्म लिखना 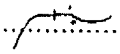 उल्लेखनीय 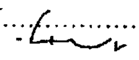

(ख) स्थान बदलकर

पूर्व…… अपूर्व…… नैतिक…… अनैतिक…… मूल्य…… अमूल्य……

ज्ञान…… अज्ञान…… न्याय…… अन्याय……

(ग) वृत्त या हुक के स्थान पर व्यंजन रेखा लिखकर

सम…… असम…… सफल…… असफल……

विकास…… अवकाश…… करना…… कराना……

सार…… आसार…… समान…… असमान……

अभ्यास 22.1

आशुलिपि में लिखकर अभ्यास करें–

इस देश के लोग हमेशा अपनी समस्याओं को सुलझाने में समर्थ थे परंतु आज अपनी छोटी-छोटी समस्याओं को हल करने में हम असमर्थ क्यों हैं, इसका कारण हमें स्वयं ढूंढना चाहिए। किसी जमाने में असम की समस्या विकट थी लेकिन समय के साथ उसमें परिवर्तन आया है। हमें आशा है उसको सुलझाने में अब हम असफल नहीं होंगे। असमानता की खाई को पाट कर समानता लाना आवश्यक है तभी वहां की अस्थिरता को हम दूर कर सकेंगे। अनैतिकता से कभी भी समाज को न्याय नहीं मिल सकता। नैतिकता एक अमूल्य निधि है जिसका विकास करने से ही लोग अनैतिक कार्यों से बच सकते हैं।

अभ्यास 22.2

पढ़ें, लिखें और अभ्यास करें–

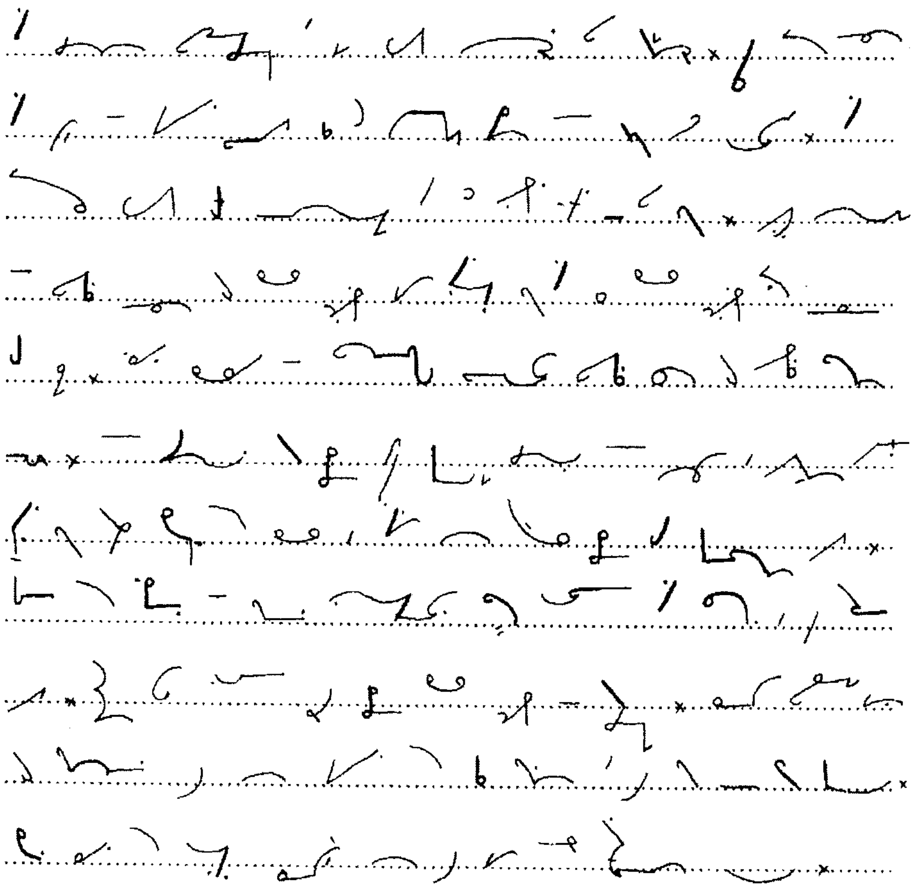

अभ्यास 22.3

(शब्द-चिह्नों का अभ्यास)

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सरकार के सामने एक ऐसी भाषा के चुनाव का प्रश्न आया जिसे राष्ट्रभाषा बनाया जा सके। यह एक काफी गंभीर और बड़ा सवाल था जिस पर सरकार को जल्दी निर्णय लेना था। स्वतंत्रता के साथ ही देश का विभाजन भी हो गया था और सारा देश संकटपूर्ण परिस्थितियों में था। देश के अंदर लोगों के मध्य असंतोष फैला हुआ था। विध्वंसकारी प्रवृत्तियों से जीवन अस्त-व्यस्त था। देश के कल्याण के लिए यह आवश्यक था कि जल्दी से जल्दी इन संकटों की समाप्ति हो और उत्पादन बढ़ाकर देश को स्वावलंबी बनाया जाए। देश की एकता और लोगों के परस्पर संबंधों में परिवर्तन लाने के लिए यह निहायत आवश्यक था कि वही भाषा राष्ट्रभाषा बने जो देश के ज्यादातर प्रांतों में बोली जाती हो और जिससे कोई भी असंतुष्ट न हो। उस समय विश्वविद्यालयों में शिक्षा अंग्रेजी द्वारा दी जाती थी। हिंदी का कहीं कोई संरक्षक नहीं था। सभी सार्वजनिक कार्यों में एवं सम्मेलनों में केवल अंग्रेजी का ही प्रयोग होता था। स्वतंत्र होने के बाद केवल अंग्रेजी के आधार पर निर्भर रहना नामुमकिन था। गंभीर विचार करने के बाद सरकार इस निष्कर्ष पर पहुंची कि हिंदी को ही राष्ट्रभाषा बनाया जाए क्योंकि देश के ज्यादातर हिस्सों में हिंदी व्यवहार में लाई जाती थी। तमाम शिक्षित व अशिक्षित लोग हिंदी समझते थे। यद्यपि कुछ लोग इसके खिलाफ भी थे और कहीं-कहीं इसका विरोध भी हुआ परंतु ज्यादातर लोगों ने इस व्यवस्था को पसंद किया और इसका समर्थन किया। इसीलिए केंद्र सरकार ने हिंदी को राजभाषा घोषित किया। देश की एकता को महत्व देने वाला ऐसा कौन व्यक्ति होगा जो हिंदी का विरोध करेगा। समस्त राष्ट्रप्रेमी जनता ने इस व्यवस्था का समर्थन किया। वास्तव में हिंदी भाषा में इतने गुण विद्यमान हैं कि शायद ही कोई दूसरी भाषा इसका मुकाबला कर सके।

पिछले कुछ वर्षों में हिंदी को प्रोत्साहन देने के लिए केंद्र सरकार द्वारा अनेक योजनाएं बनाई गईं, कई समितियां बनीं ताकि उनकी सिफारिशों के अनुसार परस्पर परामर्श कर के हिंदी को प्रत्येक परिवार तक पहुंचाने की दृष्टि से योजनाएं तैयार की जा सकें। वास्तव में हिंदी के विकास के पीछे सरकार द्वारा संरक्षित अनेक सामाजिक व सांस्कृतिक संस्थाओं का भी काफी हाथ रहा है। हिंदी में ज़नाब, कब्ज़ा इत्यादि दूसरी भाषाओं के प्रचलित शब्दों को भी सम्मिलित कर लिया गया है। हिंदी के इस परिवर्तित रूप ने इसको लोकप्रिय बनाने में काफी सहायता दी है। इस सबका परिणाम यह हुआ है कि आज हिंदी समझने वालों की संख्या पहले से बहुत ज्यादा है। इसका परिवार बहुत विस्तृत है। इसमें संदेह नहीं

कि भारत सरकार के संरक्षण में, अगले कुछ वर्षों में यह संख्या अवश्य और भी ज्यादा हो जाएगी। जाहिर है, इस मामले में सरकार ने जो कुछ भी किया है, कोई मामूली कार्य नहीं था। यह सबको मालूम है कि भाषा संबंधी समस्या को सुलझाना कितना कठिन था।

कुछ का यह विचार था कि हिंदीतर भाषी क्षेत्रों में लोगों को हिंदी के शिक्षण पर मजबूर किया जाएगा, परंतु यह विचार बिलकुल निरर्थक था। यह दृष्टिकोण केवल उन लोगों का था जो हिंदी को नुकसान पहुंचाना चाहते थे। हिंदी का विकास किस तरह से किया जाए इस प्रयोजन से पिछले वर्ष हिंदी के मशहूर लेखकों का जो सम्मेलन बुलाया गया था उसका उद्घाटन करते हुए आदरणीय गृह मंत्री ने सरकार की हिंदी संबंधी नीति का पूरी तरह से स्पष्टीकरण कर दिया था। उन्होंने इस बात पर भी बल दिया था कि यह कार्य ऐसा नहीं है कि जो सिर्फ सरकार का ही हो बल्कि हम सबको संयुक्त रूप से इसके विकास में सहायता करनी चाहिए। बगैर दोनों की सहायता के यह कार्य हरगिज़ पूरा नहीं हो सकता।

फिलहाल हिंदी को जो आदर का स्थान प्राप्त है वह ही काफी नहीं है। संभव है, आज भी हिंदी के विरोधी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तौर पर इसकी ओर कठोर रुख अपनाएं। लेकिन अगर हम उनका हृदय से विरोध करें और निष्पक्ष भाव से उन्हें समझाने का प्रयत्न करें तो मुमकिन है कि निकट भविष्य में वे स्वयं हमारे साथ सम्मिलित हो जाएं और सहर्ष इसके विकास में हाथ बटाएं।

यदि हम चाहते हैं कि संसार में हिंदी को एक बहुत ऊंचा स्थान प्राप्त हो और संसार के ज्यादातर लोग हमारे इस महान देश और हमारी ऊंची संस्कृति को ज्यादा स्पष्ट तौर पर समझ सकें तो क्या मैं और क्या आप, देश के प्रत्येक नौजवान का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वह हृदय से इसके विकास में सहायता दे। यह कार्य ऐसा नहीं है जो एक या दो सप्ताह या कुछ महीनों में समाप्त हो जाए बल्कि इसके लिए लंबे काल तक अत्यंत धैर्य से प्रयत्न करने की जरूरत है। क्यों न हम अपने-अपने निर्वाचन क्षेत्र से निर्वाचित सदस्यों को इस बात के लिए मजबूर करें कि वे संसद में ऐसे प्रस्ताव पास कराएं जिनसे हिंदी की निर्विघ्न उन्नति होती रहे।

अध्याय–23

उपसर्ग एवं प्रत्यय

प्रत्येक भाषा में शब्दों के आरंभ और अंत में उपसर्ग, प्रत्यय, शब्द-खण्ड अथवा शब्द जोड़कर नए-नए शब्दों का निर्माण होता है। आशुलिपि में इन शब्दों को गति से लिखने के लिए सरल व्यवस्था की गई है। इसे कुछ उदाहरणों द्वारा यहां स्पष्ट किया गया है।

(क) आरंभिक व्यंजन रेखा से

...... **(ज)जन** - जनशक्ति...... जनसम्पर्क...... जनसाधारण......

जनकल्याण...... जनमत...... जनसंघ ......

...... **(न)नव** - नव-निर्माण...... नव-निर्वाचित...... नवयुवक......

...... **(म)महा/महोदय** - महामना...... महासभा...... महासचिव......

सभापति महोदय...... अध्यक्ष महोदय......

...... **(र)राज** - राजधानी ...... राजनीति...... राजधर्म...... राजभाषा......

(ख) आरंभिक **शब्द-खण्ड से**

...... **(प्रत)प्रति** - प्रतिदिन...... प्रतिबिंब...... प्रतिवादी......

...... **(खल)अखिल** - अखिल भारतीय......

...... **(सर)सर्व** - सर्वप्रथम...... सर्वसाधारण...... सर्वोपरि......

सर्वशक्तिमान ...... सर्वश्रेष्ठ ...... सर्वसम्मत......

........**(राष)राष्ट्र** - राष्ट्रसंघ............. राष्ट्रपिता.......... राष्ट्रपति ....

.......**(गर)गृह** - गृह निर्माण........ गृहशोभा .... गृह सज्जा..........

(ग) व्यंजन रेखा से काटकर या साथ लिखकर

.....**(ग)आयोग** - चुनाव आयोग............ वेतन आयोग..........

वित्त आयोग............. शिक्षा आयोग..........

.....**(ज)जनक** - आपत्तिजनक.......सुविधाजनक.........आश्चर्यजनक.........

अपमानजनक.............संतोषजनक......................

.....**(प)पत्र** - समाचार-पत्र.......... सूचनापत्र........ मुखपत्र..............

राजपत्र.................. अर्ध सरकारी पत्र..........

.......**(म)मंत्री** - रक्षा मंत्री......... वित्त मंत्री.............वाणिज्य मंत्री..............

.......**(स)वासी** - ग्रामवासी................. नगर वासी.......... देशवासी..........

(घ) अंतिम शब्द-खण्ड से

.......**(गर) गृह/ग्रह** - सभागृह.......... प्रसूतिगृह............ उपग्रह..........

दुराग्रह.............. अतिथिगृह..........

.....**(मन) मंत्रालय** - रक्षा मंत्रालय.......... वित्त मंत्रालय..........

.....**(भ) विभाग** - सुरक्षा विभाग.......... पुलिस विभाग..........

.... **(पन)पूर्ण** - रहस्यपूर्ण.............. उद्देश्यपूर्ण..............

.... **(पव)पूर्वक** - सुविधापूर्वक.............. बलपूर्वक..............

.... **(स्वप)स्वरूप** - फलस्वरूप.............. परिणामस्वरूप..............

.... **(पसज)पंचवर्षीय योजना** - प्रथम पंचवर्षीय योजना..............

पहली पंचवर्षीय योजना..............दूसरी पंचवर्षीय योजना..............

(च) कठिन रेखाक्षर

अनेक शब्दों के रेखाक्षर बनाने में कठिनाई होती है और रेखाक्षर लंबे तथा अटपटे बनते हैं। ऐसे शब्दों को सरलता और गति से लिखने के लिए उनकी मूल ध्वनियों के आधार पर काट द्वारा लिखने की व्यवस्था की गई है। इससे उनको लिखने में आसानी होती है और अशुद्धि होने की संभावना भी नहीं रहती, जैसे–

जीवन-मरण..............गुक्ताचीनी..............मनोरंजन..............सचमुच..............

लाभ-हानि..............महत्वाकांक्षी..............दिन-रात ....

(2) एक शब्द की आवृत्ति दो बार होने पर अंतिम व्यंजन रेखा को दोहरे काट द्वारा दर्शाया जाता है, जैसे–

बार-बार..............बड़े-बड़े..............धीरे-धीरे..............

थोड़ा-थोड़ा.............. नए-नए..............कहीं-कहीं..............

(3) इसी प्रकार कुछ शब्दों के बीच से, पर, प्रति आदि शब्द या शब्द-खण्ड आते हैं। उन्हें लिखने के लिए कुछ व्यंजनों का लोप कर दिया जाता है, जैसे–

कम से कम..............अधिक से अधिक..............ज्यादा से ज्यादा..............

दिन-प्रति-दिन................ दिन पर दिन................

4. क्रिया-वाचक शब्दों में काट द्वारा

कुछ सहायक क्रियाओं का प्रयोग बहुतायत से होता है अतः सरलता और गति से लिखने के लिए इन्हें मुख्य क्रिया के साथ काट द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। जहां काट संभव न हो वहां पर रेखा पहली रेखा की समानान्तर लिखी जाती है–

......(क) **चुका-चुके-चुकी** - जा चुका है...............खा चुका है..................

बुला चुकी हैं..........कह चुका था..............देख चुका हूँ..........

......(र) **रखा-खे-खी** - कह रखा है..............बुला रखा है.............

बता रखी थी..................देख रखी हैं.................

......(प) **पड़ा-पड़े-पड़ी** - कहना पड़ा..........बोलना पड़ा था..........

चल पड़ी.........जाना पड़ेगा..........बुलाना पड़ा..........

...... (ल) **लगा-लगे-लगी** - होने लगा..............कहने लगी थी..........

रोने लगे...............चलने लगे...........करने लगे हैं..........

अभ्यास 23.1

आशुलिपि में लिखकर अभ्यास करें–

हमें प्रतिदिन अखिल भारतीय स्तर पर देश को आगे बढ़ाने का प्रयत्न करना चाहिए। इसके लिए यह आवश्यक है कि सर्वप्रथम हम देश के प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षित करें। राष्ट्र के निर्माण में समाचार पत्रों और सूचना पत्रों का बड़ा योगदान होता है। यदि सूचना प्रौद्योगिकी का विकास ज्यादा से ज्यादा क्षेत्रों में बढ़ाया जाए तो हम एक नई कार्य-प्रणाली का विकास करने में सफल होंगे। सरकार की नई-नई योजनाओं को प्रत्येक ग्रामवासी तक पहुंचाने में समाचार-पत्रों और सूचना प्रौद्योगिकी का बड़ा योगदान है। उपग्रहों के माध्यम से हम इस दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

अभ्यास 23.2

पढ़ें, लिखें तथा अभ्यास करें–

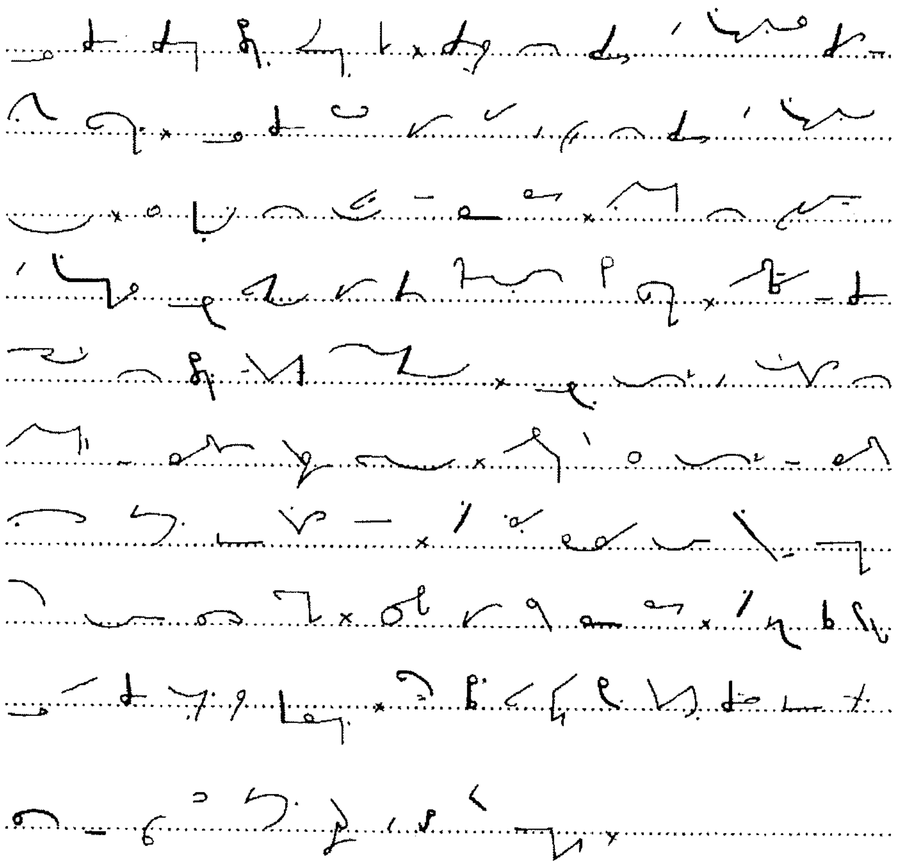

अध्याय–24

गति बढ़ाने की विधि

आशुलिपि में शब्दों, शब्द-चिह्नों, वाक्यांशों आदि को आपस में जोड़कर लिखने का नियमित अभ्यास करने से गति बढ़ाने में बहुत सहायता मिलती है। वाक्यांश बनाते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि रेखाक्षर सरल और स्पष्ट हों ताकि उनको बनाने अथवा समझने में किसी प्रकार की कठिनाई न हो। यहां कुछ प्रचलित वाक्यांश दिए जा रहे हैं जिनके अभ्यास से गति बढ़ाने में आसानी होगी–

नहीं हो सकता........	इस तरफ से........	प्रकट कर रहा हूं........
नहीं हो रहा है........	जिस रूप रो........	किया जा चुका है........
जिस तरह से........	जिस रूप में........	कहा जा चुका है........
किस तरह से........	विशेष रूप से........	माननीय मंत्री जी........
खासतौर पर........	मेरी ओर से........	माननीय सदस्य........
आमतौर पर........	इस ओर से........	के सामने........
इस तरह से........	की ओर से	इसके सामने........
मेरी तरफ से........	उस ओर से........	आपके सामने........
इनकी तरफ से........	इस वक्त........	मेरे सामने........
उनकी तरफ से........	उरा वक्त........	प्रस्तुत करता हूं........
आपकी तरफ से........	प्राप्त करता हूं........	प्रस्तुत करेंगे........

निवेदन करता हूं..........

निवेदन करना चाहता हूं

कि..........

निवेदन करूंगा..........

रास्ते पर लाएंगे..........

इस बात से..........

इन्होंने कहा कि..........

के साथ-साथ..........

ऐसी स्थिति में..........

स्वागत करता हूं..........

स्वागत करेंगे..........

स्वीकार करेंगे..........

उपयोग करेंगे..........

आपके पास..........

मेरे पास..........

तुम्हारे पास..........

इनके पास..........

आपके साथ..........

मेरे साथ..........

तुम्हारे साथ..........

इनके साथ..........

इस ढंग से..........

उस ढंग से..........

ठीक ढंग से..........

उद्देश्यपूर्ण..........

रहस्यपूर्ण..........

भावनापूर्ण..........

आदरपूर्वक..........

सम्मानपूर्वक..........

वैधानिक ढंग से..........

इसके साथ-साथ..........

इसके साथ ही साथ..........

हल करेंगे..........

हल करने के लिए..........

हल करना चाहता हूं..........

निवेदन करने के लिए..........

मंजूर करना पड़ा..........

मंजूर करना पड़ेगा..........

मंजूर करने के लिए..........

आपके सामने रखने के लिए..........

रास्ते पर लाने के लिए..........

के सामने रखना चाहिए..........

ऐसा नहीं कहा गया..........

ऐसा नहीं किया गया..........

प्रस्तुत करने के लिए..........

उन्होंने कहा कि..........

स्वीकार कर रहे हैं..........

उपयोग कर सकते हैं..........

स्वीकार करना चाहिए..........

आज के जमाने में..........

अपने सामने रखना चाहिए..........

उपयोग करने के लिए..........

स्वागत करना चाहिए..........

माननीय सभापति जी..........

बुलाया जा चुका है..........

यह नहीं हो सकता..........

मिसाल के तौर पर..........

प्राप्त करना चाहता हूं..........

प्रकट करना चाहता हूं..........

के सामने रखने के लिए..........

के सामने रखना चाहता हूं..........

अभ्यास 24.1

आशुलिपि में लिखकर अभ्यास करें–

आज देश को कमजोर बनाने वाली ऐसी अनेक ताकतें अपना सिर उठाए खड़ी हैं जिनको रोकना हमारा पहला कर्तव्य है। यदि समय रहते हम इन ताकतों को बढ़ने से नहीं रोक पाए तो भविष्य में हमारे लिए खतरा बढ़ जाएगा। आप असम की स्थिति से परिचित हैं। धर्म के आधार पर, क्षेत्र के आधार पर अथवा भाषा के आधार पर लोगों का बंटना किसी भी राष्ट्र की राजनीति की सबसे बड़ी कमजोरी है। हम देश में शांति और स्थिरता तभी ला सकते हैं जब देश के प्रत्येक नागरिक को खाने के लिए भोजन, रहने के लिए घर तथा करने के लिए काम मिले और यह तभी संभव है जब देश का प्रत्येक नागरिक ईमानदार, परिश्रमी और स्वावलंबी हो। देश के नेता तथा कर्मचारी, जिनके हाथ में देश के विकास का कार्य होता है, देश का संचालन निस्वार्थ भाव से करें।

किसी भी देश का विकास तभी हो सकता है जब देश में राजनीतिक स्थिरता हो, देश में एक स्पष्ट राष्ट्र-नीति हो, देश के सभी नेता नैतिक मूल्यों को संरक्षण दें और अपनाएं। हमारे राष्ट्रपिता ने देश के विकास के लिए स्वदेशी की बात कही थी और अपने सिद्धांतों को अपनाकर उन्होंने पूरे देश को एक करने का प्रयास किया। किसी हद तक वह अपने इस कार्य में सफल भी रहे जिसके परिणामस्वरूप इस देश को स्वतंत्रता मिली। आज हमारा देश स्वतंत्र है और हम स्वयं अपना शासन चला रहे हैं। अपने देश के विकास के लिए हम स्वयं अपनी पंचवर्षीय योजना बनाते हैं। सब कुछ हम स्वयं कर रहे हैं, अपने प्रतिनिधि स्वयं चुनते हैं फिर भी हम संतुष्ट नहीं हैं।

अभ्यास 24.2

पढ़ें, लिखें तथा अभ्यास करें–

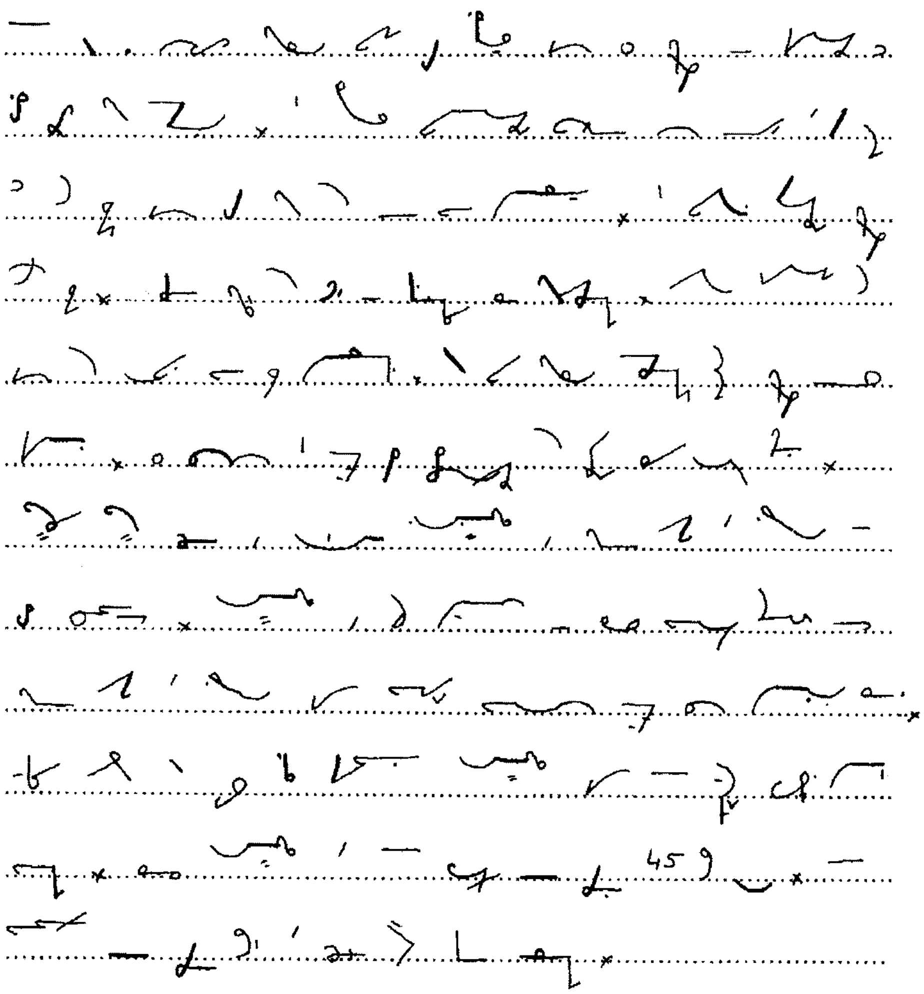

अध्याय–25

संख्या, मुद्रा, माप, तोल एवं अन्य संकेत

आशुलिपि में संख्या लिखते समय सामान्यतः एक से छह तक तो आशुलिपि रेखाओं का प्रयोग किया जाता है, शेष संख्याओं के लिए अंतर्राष्ट्रीय अंकों का प्रयोग किया जाता है, जैसे–

संख्या

सौ	....	5 सौ	5 ....
हजार	....	10 हजार	10 ....
लाख	....	10 लाख	10 ....
करोड़	....	10 करोड़	10 ....
अरब	....	10 अरब	10 ....
डेढ़	....	साढ़े	= ....
पौने	....	ढाई	....

मुख्य मुद्राओं के लिए

रुपए (रुपया)	....	10 रुपए	10 ....
सौ रुपए	....	400 रुपए	4 ....
हजार रुपए	....	20 हजार रुपए	20 ....
साढ़े चार हजार	=4	करोड़ रुपए	....
8 करोड़ रुपए	8	डेढ़ अरब रुपए	....

पौंड ………… 2 हजार पौंड …………

डॉलर ………… 5 सौ डॉलर …………

पौने नौ लाख………… ढाई करोड़ पौंड …………

फीसदी ………… 12 फीसदी…………

फ़ी सैकड़ा………… 50 फ़ी सैकड़ा…………

प्रति सैकड़ा………… 5 प्रति सैकड़ा…………

माप

मिलीमीटर………… सेंटीमीटर………… मीटर………… किलोमीटर…………

इंच………… फुट………… गज………… मील…………

तोल

किलो………… किलोग्राम………… क्विंटल………… टन…………

अन्य

% (प्रतिशत)………… 12 प्रतिशत (%)…………

% (परसेंट)………… 12 परसेंट (%)…………

अभ्यास 25.1

आशुलिपि में लिखकर अभ्यास करें–

बजट के सिलसिले में देश में यह निश्चय किया गया है कि उत्पादन बढ़ाने के लिए कोई 18 सौ योजनाएं शुरू होंगी। संयुक्त राष्ट्र ने भी यह बात महसूस की है कि इन मदों पर अनुदान की रकम 50 फी-सैकड़े और बढ़नी चाहिए। कृषि तथा शिक्षा के लिए क्रमशः 27 तथा 5 करोड़ रुपए की व्यवस्था की गई है। रक्षा संबंधी योजनाओं के लिए 15 करोड़ 18 लाख रुपए और नदी घाटी योजनाओं के लिए भी 75 सौ अरब रुपए की व्यवस्था की गई है। ऐसा अनुमान है कि अन्य योजनाओं पर भी कटौती की गई है। भवन निर्माण कार्य पर 75 हजार रुपए की कमी की गई है। इन योजनाओं के पूरा होने पर ऐसा विश्वास है कि देश की आय सवा साल में कम से कम 8 परसेंट अवश्य बढ़ जाएगी और कृषि की आय में ढाई प्रतिशत की वृद्धि होने की आशा है। यह भी आशा की जाती है कि डेढ़ वर्ष में वह साढ़े नौ प्रति सैकड़े और ढाई वर्ष के बाद पौने सोलह प्रतिशत से ज्यादा बढ़ जाएगी।

अभ्यास 25.2

पढ़ें, लिखें तथा अभ्यास करें–

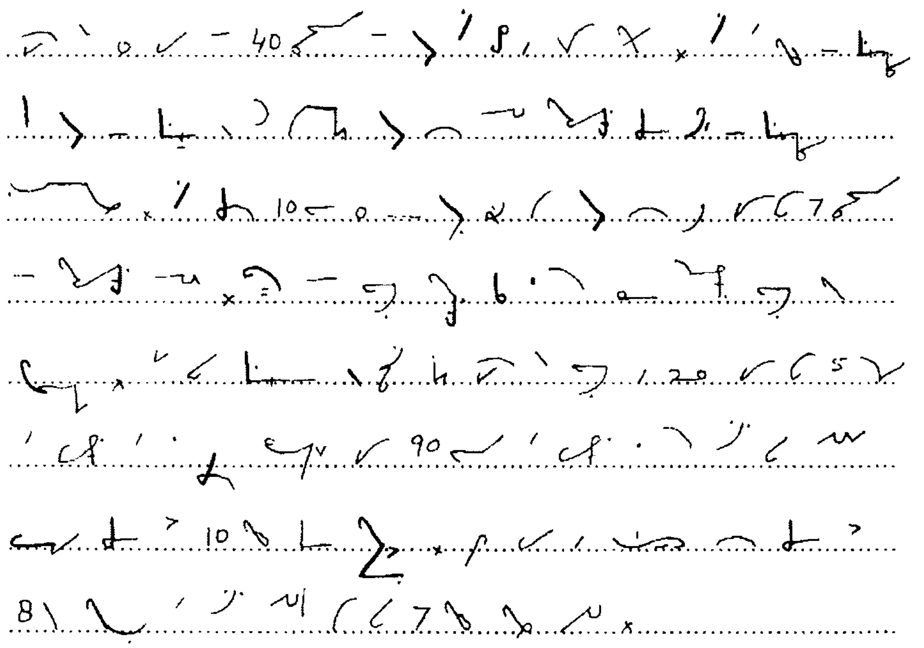

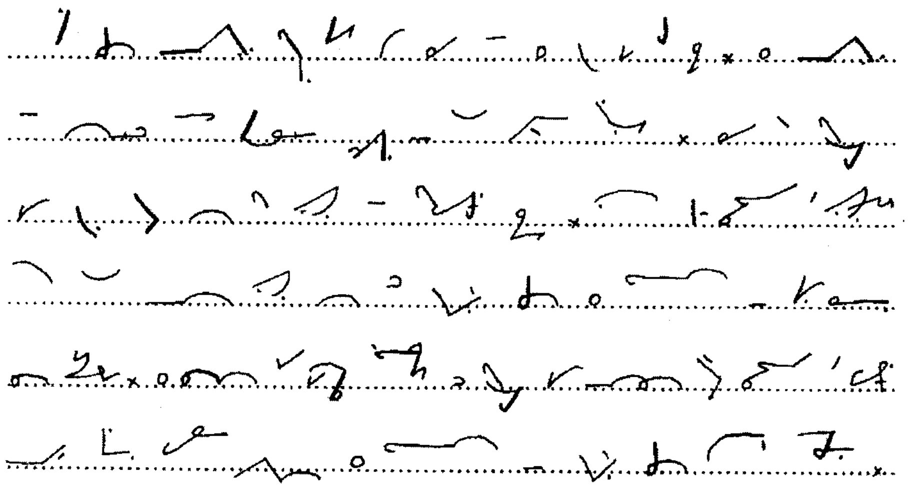

अध्याय–26

शब्द-चिह्नों की समेकित सूची

अंत, अंतिम........

अंदर ....

अगला-ले-ली........

अत्यंत ....

अतिरिक्त ....

अथवा ....

अधिकार........

अन्य ....

अपना-ने-नी ....

अब ....

अर्थात् ....

अवश्य ....

असंतोष........

असंतुष्ट........

आई ....

आईं ....

आइए ....

आय, आए ....

आएं ....

आया ....

आओ ....

आऊं ....

आएगा-गी ....

आएंगे-गी ....

आयु ....

आदर-णीय ....

आदि ....

आधार ....

इन ....

इतना-ने-नी........

इत्यादि ....

इन्हें ....

इधर ....

इस ....

इसे ....

इसी ....

इससे ....

उत्तर ....

उत्पादन ....

उतना-ने-नी........

उत्पन्न ....

उदाहरण ....

आ ....

उधर ....

उन ....

उन्हें ....

उस ....

उसी ....

उसे ....

ऊंचा-चे-ची ....

ऊपर ....

एक ....

एवं ....

ऐसा-से-सी ....

और ....

कई ....

कठिन ....

कर्त्तव्य ....

आवश्यक ....

कहां ....

कहीं ....

कब्ज़ा ....

का ....

काफी ....

कि-की ....

किया-ए ....

किंतु ....

किन ....

किस-किसे ....

किसी ....

क्या ....

क्यों ....

क्योंकि ....

के ....

उद्घाटन ....

कैसा-से-सी ....

कोई ....

कौन ....

ख्याल ....

खिलाफ ....

गया-ए-ई ....

गंभीर-ता ....

गलत ....

चाह-हे-चाहिए ....

चिट्ठी ....

चुनाव ....

चोटी (पीछे) ....

छुट्टी ....

छोटा-टे-टी-छूट ....

जन-जनता ....

कल्याण ....

जब ....

जरूर-री ....

जरूरत ....

जल्द-दी ....

जहां ....

जिन ....

जितना-ने-नी ....

जिस ....

जिम्मेदार-री ....

जीवन ....

ज्यादातर ....

तथा ....

तथापि ....

तब ....

तमाम ....

केवल ....

तरह ....

तहां ....

तुम-तुम्हें ....

तो ....

दूसरा-रे-री ....

दृष्टि ....

दृष्टिकोण ....

नहीं ....

नामुमकिन ....

निकट ....

निष्कर्ष ....

निष्पक्ष ....

निर्णय ....

निर्भर ....

ज़नाब ....

निर्विघ्न ....

निरर्थक ....

निर्वाचन ....

निहायत ....

नुकसान ....

ने ....

नौजवान ....

परंतु ....

परामर्श ....

परिवर्तन ....

परिवर्तित ....

परिस्थिति ....

परिणाम ....

परस्पर ....

पहला-ले-ली ....

तरफ ....

पिछड़ा-ड़े-ड़ी ....

परीक्षा........

पुनः ....

प्रकट ....

प्रयत्न, प्रत्येक ....

प्रशंसा ....

प्रस्ताव ....

पर्याप्त........

प्रत्यक्ष ....

प्रयोजन ....

प्राप्त-प्राप्ति ....

प्रोत्साहन ....

फिलहाल ....

बहुत ....

बड़ा-ड़े-ड़ी ....

निर्माण ....

बल्कि ....

बात ....

बिलकुल ....

बेहतर ....

भारत ....

भारतवर्ष ....

मज़बूर ....

मध्य ....

मशहूर ....

महान ....

मामला ....

मुझे ....

मुमकिन ....

मुश्किल ....

में ....

पिछला-ले-ली ....

यद्यपि ....

यदि ....

यह (ये) ....

यहां ....

यहीं ....

यही ....

रह-हा-हे-ही ....

लेकिन ....

लिए(लोग) ....

मुकाबला........

व (वह) ....

वर्णन ....

वर्तमान ....

वर्ष ....

वहां ....

बगैर	मैं	वही ....
वातावरण	संबद्ध	समाज ....
विचार	संदेह	सदस्य ....
वास्तव	संयुक्त	सप्ताह ....
विद्यमान	संभव	समस्या ....
विध्वंस	संस्कृति	सम्मेलन ....
विरुद्ध-विरोध-धी		सम्मिलित ....
व्यवहार	संरक्षक	समिति ....
विवरण	संरक्षित	सवाल ....
विषय	संरक्षण	सहमति ....
विद्यार्थी........		सहकार ....
वे		सहयोग ....
संकट	संवैधानिक	सहर्ष ....
संकटपूर्ण	समय	सहायता ....
संख्या	समझ	साधारण ....
संगठन	समर्थ	सार्वजनिक ....

संबंध-धी-धित ....

सुझाव ....

से ....

स्थिति ....

स्पष्ट ....

स्पष्टीकरण ....

स्वतंत्र-ता ....

स्वावलंबी ....

स्वीकार ....

स्वीकृत-ति ....

शायद ....

शिक्षा ....

शिक्षण ....

शिक्षित ....

हफ्ता-ते ....

हरगिज़ ....

समर्थन ....

हृदय ....

हाथ ....

होता-ते-ती ....

होना-ने-नी ....

क्षेत्र ....

अधिक........

कह-हा-हे........

सांस्कृतिक ....

साहित्य ....

साहित्यिक........

सिफारिश........

अध्याय 27

संक्षिप्त रेखाक्षर

हिन्दी भाषा में तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशी सभी प्रकार के शब्दों का समावेश हो चुका है। अनेक बड़े शब्दों के आशुलिपि रेखाक्षर बनाने में असुविधा होती है। ऐसे शब्दों को संक्षिप्त करने के लिए उनकी कुछ अनावश्यक ध्वनियां लुप्त कर दी जाती हैं ताकि उनके रेखाक्षर बनाने में सुविधा रहे। ऐसे रेखाक्षरों को संक्षिप्त रेखाक्षर कहते हैं। यहां पर ऐसे कुछ संक्षिप्त रेखाक्षरों की सूची दी गई है जो कि आमतौर पर प्रयुक्त होते हैं। इन रेखाक्षरों के अभ्यास से प्रशिक्षार्थियों को इनको लिखने और समझने में सुविधा होगी।

अचानक	अनिवार्य	खुशहाली
अत्याचार	असावधान	गलतफहमी
अत्यधिक	असंवैधानिक	जगह
अधिकाधिक	आमदनी	जन्म
अंततोगत्वा	उपनिवेशवाद	जन्म-दिन
अनुसंधान	कर्मचारी	जन्म-दिवस
अफसोसनाक	ख्वामख्वाह	जनमत
अभिनंदन	खींचतान	जनतंत्र
अनुभव	खींचातानी	जनतंत्रीय
अल्पसंख्यक	खुशकिस्मती	जनतंत्रात्मक

जीविकोपार्जन	परीक्षण	प्रजातांत्रिक
जीवनोपयोगी	पर्यवेक्षक	प्रचलित
तजुर्बा	पर्यवेक्षण	पालन-पोषण
तजुर्बेकार	पश्चाताप	पाश्चात्य
निमंत्रण	प्रगतिशील	प्रार्थना
नियंत्रण	प्रतिपादन	प्रारंभ
नियंत्रित	प्रतिपादित	प्रारंभिक
निरस्त्रीकरण	प्रतिपादक	प्रायः
निराशाजनक	प्रतिद्वंद्वी	पृष्ठभूमि
निर्लज्जता	प्रतिद्वंद्विता	पुनर्गठन
निवेदन	प्रतिनिधि	पुनर्गठित
निस्संदेह	प्रतिनिधित्व	पुनर्निर्माण
निष्प्रयोजन	प्रतिरक्षा	बदनाम
निशस्त्रीकरण	प्रजातंत्र	बहिर्गमन
नुक्ताचीनी	प्रजातंत्रीय	बहुमत
परीक्षक	प्रजातंत्रात्मक	बहुमूल्य

बहुसंख्यक	मातृभूमि	राजनीति ....
भ्रष्टाचार	मातृभाषा	राजनैतिक ....
भविष्यवाणी	मुताबिक	राजनीतिज्ञ ....
भाग्यवान	मुकद्दमा	राष्ट्रपति ....
भेदभाव	मुआवजा	राष्ट्रपिता ....
मज़दूर	मुसलमान	राष्ट्रवाद ....
मनोरंजन	मुस्लिम	राष्ट्रव्यापी ....
मनोरंजक	मुख्यतः	राष्ट्रीय ....
मनोविज्ञान	मुख्यतया	राष्ट्रीयकरण ....
मनोवैज्ञानिक	मौजूद	राष्ट्रीयता ....
मशविरा	युक्तिसंगत	रुपया ....
महकमा	योजना	लगभग ....
महत्वाकांक्षी	रहस्योद्‌घाटन	लोकतंत्र ....
महत्वपूर्ण	रक्षा	लोकतंत्रीय ....
महानुभाव	राज्यपाल	लोकतांत्रिक ....
महीना	राजधानी	लोकतंत्रात्मक ....

वगैरह	व्यक्ति	संचालित
वस्तुस्थिति	व्यक्तित्व	सद्भाव
वार्तालाप	व्यवस्था	सद्भावना
वाद-विवाद	व्यवस्थित	सफलतापूर्वक
वास्तविक	व्यवसाय	समारंभ
विभाजित	व्यवस्थापक	संपादक
विश्व-व्यापी	व्यवस्थापित	संपादकीय
विश्वास	व्यवस्थापन	सराहना
विश्वस्त	व्यावसायिक	सराहनीय
विश्वसनीय	वास्तविक	सर्वसम्मति
विश्वासपूर्ण	वास्तविकता	सर्वेक्षण
विनम्र	विकेंद्रीकरण	सर्वोपरि
विनम्रता	वैधानिक	संवैधानिक
विनम्रतापूर्वक	वैयक्तिक	संस्थापक
विषयक	सचमुच	संस्थापित
व्यापारिक	संचालन	संस्थापन

संक्षेप

संक्षिप्त

स्थानान्तरण

स्थानान्तरित

साधारणतः

साधारणतया

सांप्रदायिक

सांप्रदायिकता

सुरक्षा

स्वयंसेवक

श्रद्धांजलि

शक्तिशाली

शतप्रतिशत

शताब्दी

शस्त्रीकरण

शांति

शांतिपूर्वक

शांतिपूर्ण

शारीरिक

शासनारूढ़

शिलान्यास

शुभाकांक्षी

हस्तगत

हस्तक्षेप

हस्तांतरण

हस्तांतरित

हस्ताक्षर

हर्षध्वनि

हिताकांक्षी

हिंसा

हिंदी

हिंदुस्तान

हुक्म

हुकूमत

अध्याय 28

सामान्य पदनाम, विभाग, शहर, महीने तथा दिन

सामान्य पदनाम

राष्ट्रपति	उपराष्ट्रपति
अध्यक्ष	उपाध्यक्ष
प्रधान मंत्री	उप प्रधान मंत्री
मंत्री	संसदीय सचिव
सचिव	गहा सचिव
विशेष सचिव	अतिरिक्त सचिव
संयुक्त सचिव	उप सचिव
अवर सचिव	सहायक सचिव
निजी सचिव	प्रधान निजी सचिव
वैयक्तिक सहायक	अनुभाग अधिकारी
अधीक्षक	सहायक
आशुलिपिक	उच्च श्रेणी लिपिक
अवर श्रेणी लिपिक	दफ्तरी
चपरासी	लेखाकार

महालेखाकार	सहायक लेखाकार
लेखा अधिकारी	प्रशासनिक अधिकारी
प्रशासक	राजदूत
सभापति	सलाहकार
चांसलर	कुलपति
आयुक्त	मुख्य आयुक्त
कमिश्नर	महा नियंत्रक
मुख्य नियंत्रक	उप-नियंत्रक
नियंत्रक और महालेखा परीक्षक	
महानिदेशक	उपनिदेशक
सहायक निदेशक	इंजीनियर
मुख्य इंजीनियर	अभियंता
माननीय अध्यक्ष महोदय	अध्यक्ष महोदय
माननीय उपाध्यक्ष महोदय	उपाध्यक्ष महोदय
माननीय सदस्य	मुख्य मंत्री महोदय
माननीय मंत्री महोदय	मंत्री महोदय

माननीय मंत्री जी	मंत्री जी

विभाग आदि

वाणिज्य मंत्रालय	वाणिज्य मंत्री
उद्योग मंत्रालय	उद्योग मंत्री
रक्षा मंत्रालय	रक्षा गंत्री
विदेश मंत्रालय	विदेश मंत्री
वित्त मंत्रालय	वित्त मंत्री
कृषि मंत्रालय	कृषि मंत्री
गृह मंत्रालय	गृह मंत्री
रेल मंत्रालय	रेल मंत्री
श्रम मंत्रालय	श्रम मंत्री
विधि मंत्रालय	विधि मंत्री
संघ लोक सेवा आयोग	कर्मचारी चयन आयोग
मंत्री मंडल सचिवालय	केंद्रीय सचिवालय
केंद्रीय सहायता	अंतर्राज्यीय
अंतर्विभागीय	पंचवर्षीय योजना

शासन	प्रशासन
न्यायालय	सर्वोच्च न्यायालय
न्यायाधीश	प्रशिक्षण
प्राध्यापक	अनुसूचित जाति
अनुसूचित जनजाति	उद्योग धंधे
परिवार नियोजन	पंचायत

राज्यों तथा प्रमुख शहरों के नाम

दिल्ली	नई दिल्ली
कश्मीर	श्रीनगर
शिमला	चंडीगढ़
हिमाचल	पंजाब
हरियाणा	अमृतसर
जालंधर	लुधियाना
उत्तर प्रदेश	लखनऊ
कानपुर	वाराणसी
इलाहाबाद	बिहार
पटना	रांची

उड़ीसा		पश्चिम बंगाल	
कोलकाता	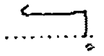	महाराष्ट्र	
मुंबई		केरल	
त्रिवेंद्रम	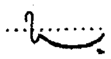	मध्य प्रदेश	
भोपाल		नागपुर	
हैदराबाद		गुजरात	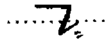
अहमदाबाद	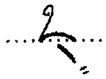	मैसूर	
बंगलौर	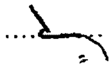	यूनाइटेड किंग्डम	
यू.एस.ए.		संयुक्त राष्ट्र	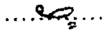
अमरीका	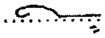	रूस	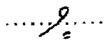
पाकिस्तान	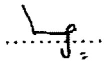	चीन	
लंका	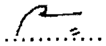		

महीनों के नाम

जनवरी		चैत्र	
फरवरी	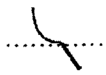	बैशाख	
मार्च		ज्येष्ठ	

अप्रैल		आषाढ़	
मई		श्रावण	
जून		भाद्र	
जुलाई	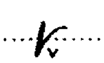	आश्विन	
अगस्त		कार्तिक	
सितंबर		अग्रहायण	
अक्तूबर		पौष	
नवंबर		माघ	
दिसंबर		फाल्गुन	

दिनों के नाम

सोमवार		मंगलवार	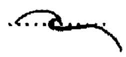
बुधवार		गुरुवार (वीरवार)	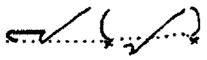
शुक्रवार		शनिवार	
रविवार	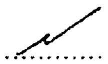		

अध्याय–29

व्यावहारिक आशुलिपि अभ्यास

अभ्यास–1

देश के स्वतंत्र होने से काफी
समय पहले ही लोगों ने यह कल्पना
की थी कि स्वाधीन भारत में शिक्षा व
सरकारी काम-काज देश की अपनी
भाषाओं में सम्पन्न होना आरंभ हो
जाएगा। स्वाधीन होते ही देश के
अनेक विश्वविद्यालयों ने इसी भावना
का अनुसरण करते हुए अपनी शिक्षा
और परीक्षाओं में हिंदी और क्षेत्रीय
भाषाओं को समुचित स्थान भी दे दिया
था। हिंदी भाषी क्षेत्रों के अनेक
विश्वविद्यालयों में शिक्षा और परीक्षा
का माध्यम हिंदी हो चुका था। लेकिन
जैसे-जैसे समय बीतता गया, लोगों
की सोच में अंतर आने लगा। लोग
अनुभव करने लगे कि हिंदी माध्यम से
शिक्षा प्राप्त नव-युवक सरकारी
नौकरियों में उचित संख्या में नहीं आ
पा रहे हैं। उच्च शिक्षा की तो बात
अलग थी पर छोटे स्तर पर भी

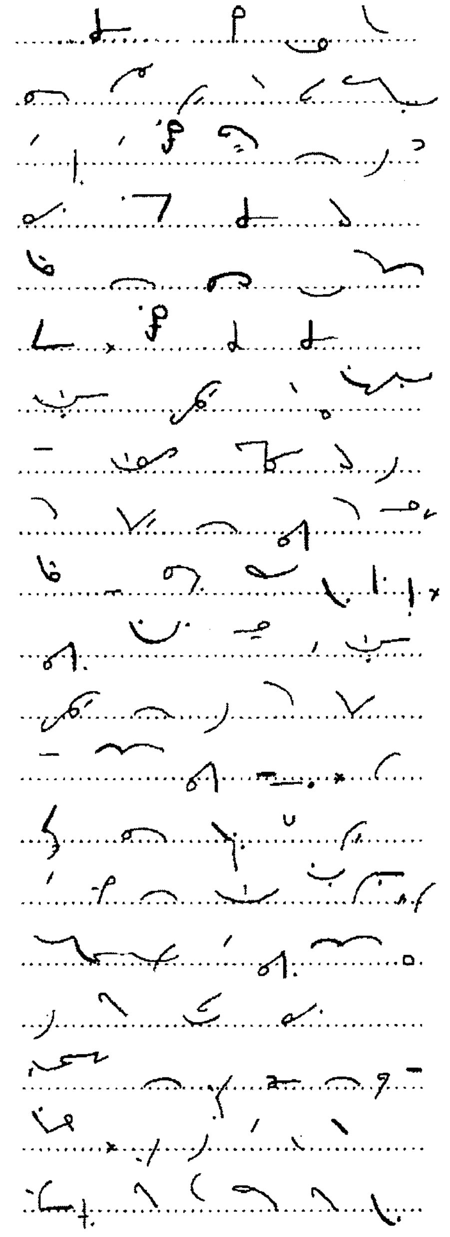

हिंदी माध्यम से शिक्षा प्राप्त नवयुवक सरकारी नौकरियों में उचित संख्या में नहीं आ पा रहे हैं। उच्च पदों की तो बात अलग थी पर छोटे स्तर के पदों को प्राप्त करना भी उनके लिए बहुत कठिन हो गया था क्योंकि सरकारी पदों पर भर्ती के लिए अंग्रेजी आवश्यक थी। जनता के मन में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक था कि क्यों न शिक्षा का माध्यम फिर से अंग्रेजी कर दिया जाए। ऐसी बदलती सामाजिक धारणा को रोकना आवश्यक था क्योंकि देश की अपनी भाषाओं को समुचित स्थान न मिलना राष्ट्रीय हित में नहीं था। अतः सरकार ने सरकारी पदों पर भर्ती की परीक्षाओं में हिंदी व अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को मान्यता प्रदान कर दी। इस से लोगों की सोच में तो अन्तर अवश्य आया परंतु वास्तविक रूप में आज भी हिंदी या क्षेत्रीय भाषाएं उस स्थान पर नहीं आ पाई हैं जहां उनको आना चाहिए। केंद्र

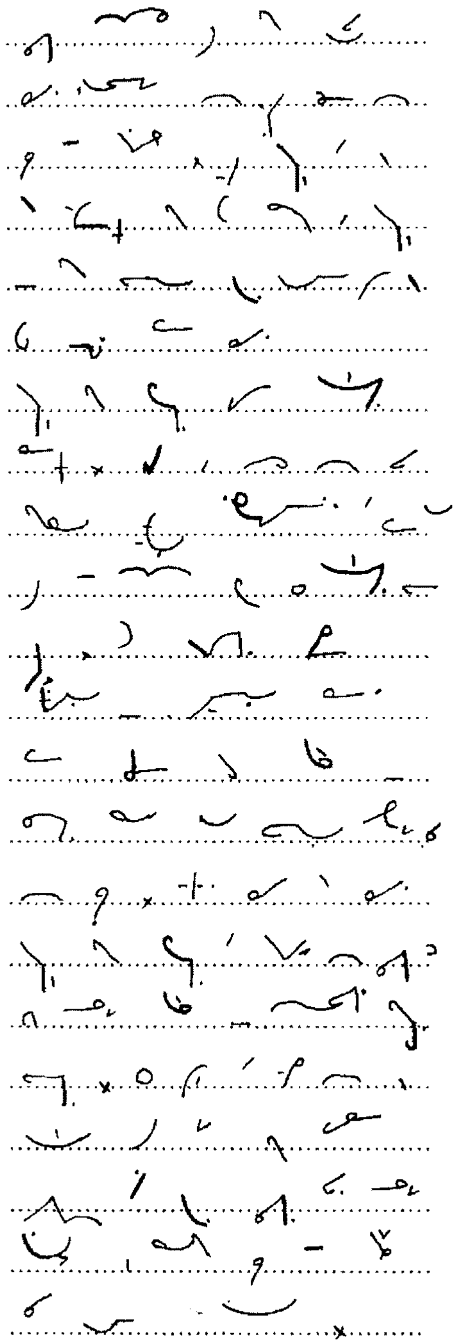

सरकार ने भी अपना सरकारी कार्य हिंदी में संपन्न करने के लिए अनेक प्रावधान किए। सरकारी आदेश जारी किए, प्रशासनिक कार्य हिंदी में करने के लिए काफी बल दिया परन्तु केवल सरकारी आदेशों से कोई कार्य तब तक सिद्ध नहीं हो सकता जब तक उस कार्य को वास्तविक स्वरूप प्रदान करने वालों की मानसिकता न बदले। अतः सरकारी आदेशों और व्यवस्थाओं के बाद भी देश की भाषा को सरकारी कामकाज में वह स्थान नहीं मिल पाया जिसकी वह हकदार है। इस से हमें दुख होता है और हम इसका दोष एक-दूसरे पर डालने का प्रयास करते हैं। इसके लिए किसी न किसी हद तक हम हिंदी भाषी वर्ग के लोग भी तो दोषी हैं।

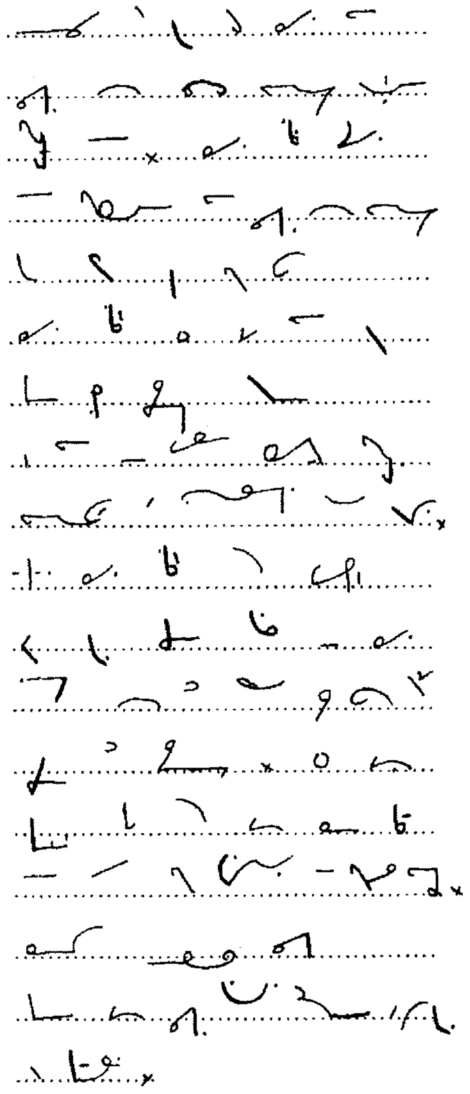

अभ्यास – 2

अखिल भारतीय नौकरियों में भर्ती के लिए ली जाने वाली परीक्षाओं में अब प्रश्न-पत्र द्विभाषी रूप में रखने की व्यवस्था की गई है। हिंदी तथा भारतीय भाषाओं में प्रश्नों के उत्तर देने की छूट दी जा चुकी है। इस से भारतीय भाषाओं के प्रयोग के प्रति लोगों की आशाएं बढ़ी हैं। इसमें और सुधार करने के लिए यह भी उचित होता कि जहां भी अंग्रेजी प्रश्न अनिवार्य हो वहां पर विकल्प के रूप में एक भारतीय भाषा का भी प्रश्न अनिवार्य होना चाहिए ताकि अपनी भाषा के माध्यम से परीक्षा देने वाला व्यक्ति पीछे न रहे। इस से यदि उनके अंग्रेजी में कम अंक आते हैं तो वह उसकी पूर्ति अपनी पसंद की भाषा से कर सके। परन्तु अभी तक यह व्यवस्था नहीं हो पाई है । जहां तक राज्य सरकारों की सेवा में भर्ती होने का प्रश्न है, वहां

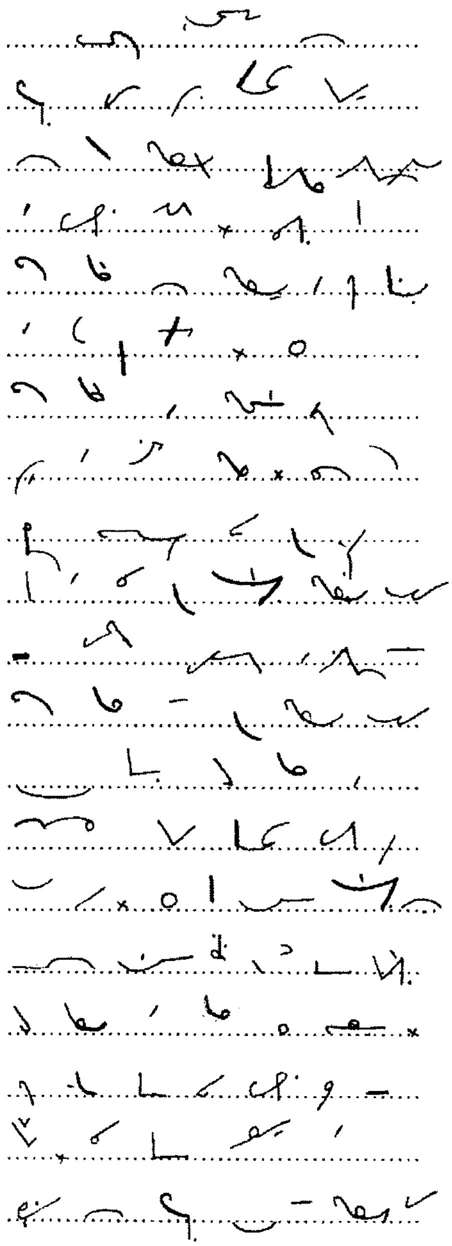

प्रदेश की भाषा को ही भर्ती परीक्षा का माध्यम बना कर क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षित व्यक्ति को नौकरी के अवसर प्रदान किए जा सकते हैं। इस प्रकार केंद्र सरकार की भर्ती परीक्षा का माध्यम हिंदी तथा अंग्रेजी और राज्य सरकारों की भर्ती परीक्षा का माध्यम राज्य की भाषा को रखा जाना चाहिए। इस से जहां राष्ट्रीय भाषाओं को सम्मान प्राप्त होगा वहीं लोगों में भी किसी प्रकार का कोई असंतोष व्याप्त नहीं होगा। भारतीय संविधान के अनुसार भी अब संघ की राजभाषा हिंदी और सह-भाषा अंग्रेजी है। राजभाषा अधिनियम पास करते समय संसद ने एक संकल्प भी पारित किया था । उसमें यह स्वीकार किया गया था कि केंद्र सरकार की सेवा में आने के लिए उम्मीदवार को हिंदी अथवा अंग्रेजी में से एक भाषा का ज्ञान अनिवार्य होगा। भाषा मनुष्य की आपसी बातचीत का सब से अधिक

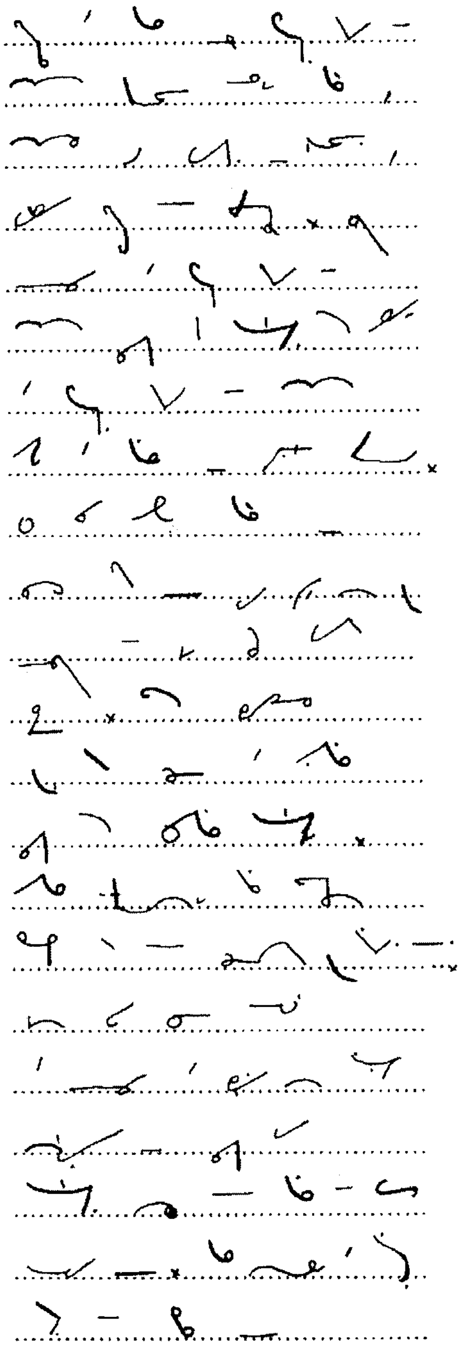

शक्तिशाली माध्यम है और यह उस
भाषा का प्रयोग करने वालों की विचार
प्रक्रिया को व्यक्त करती है जो कि एक
समाज या व्यक्ति बोलता है। इसलिए
किसी भी समाज में भाषा की समानता
उस समाज को आपस में जोड़े रखने
का काम करती है। आज के सशक्त
प्रचार माध्यमों ने उस भाषा के विकास
को गति दी है जिसमें कि समाज कार्य
करता है। जो भाषा किसी भी समाज
के विभिन्न भाषा-भाषियों द्वारा व्यवहार
की जाती है उसका विकास उतना ही
अधिक होता है। भारत के स्वतंत्रता
संग्राम में हमने यह अनुभव किया है
और देखा है कि किस प्रकार पूरा भारत
एक संगठित आंदोलन के रूप में चला।

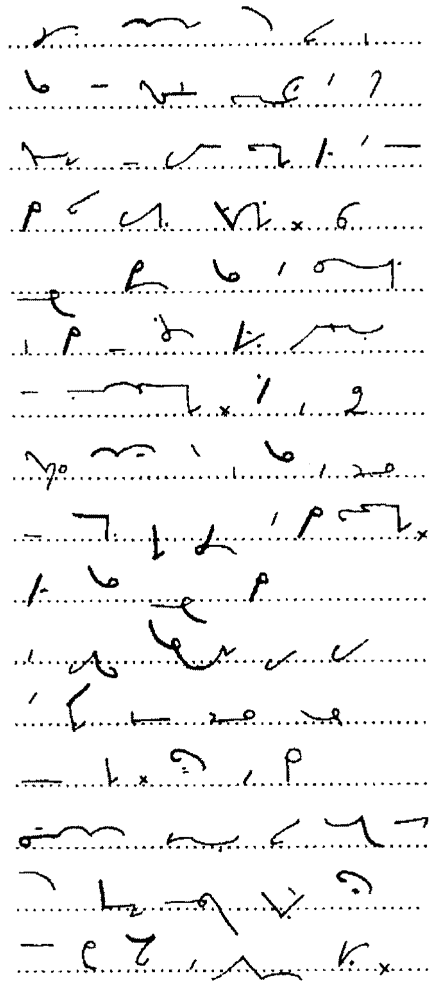

अभ्यास – 3

आज यदि किसी अखिल भारतीय संगठन से कहा जाए कि अपना काम राष्ट्रभाषा हिंदी में करें तो बहुत से लोग कहने लगते हैं कि हिंदी उन पर लादी जा रही है। उस समय वे भूल जाते हैं कि अंग्रेजी उन पर पहले से लदी हुई है। अंग्रेजी के लिए स्वेच्छा और अपने देश की भाषा के लिए विरोध, यह उनकी कैसी देश भक्ति है।

गांधी जी ने बिना कारण ही अंग्रेजी का विरोध नहीं किया था। अपने समाज तथा नव-युवकों की परेशानी को जिसने समझा वे केवल गांधी जी ही थे। अंग्रेजी के प्रभाव से होने वाली हानि के बारे में भी उन्होंने लिखा है कि हजारों नव-युवक अपने जीवन का कीमती समय इस विदेशी भाषा को सीखने में नष्ट कर देते हैं

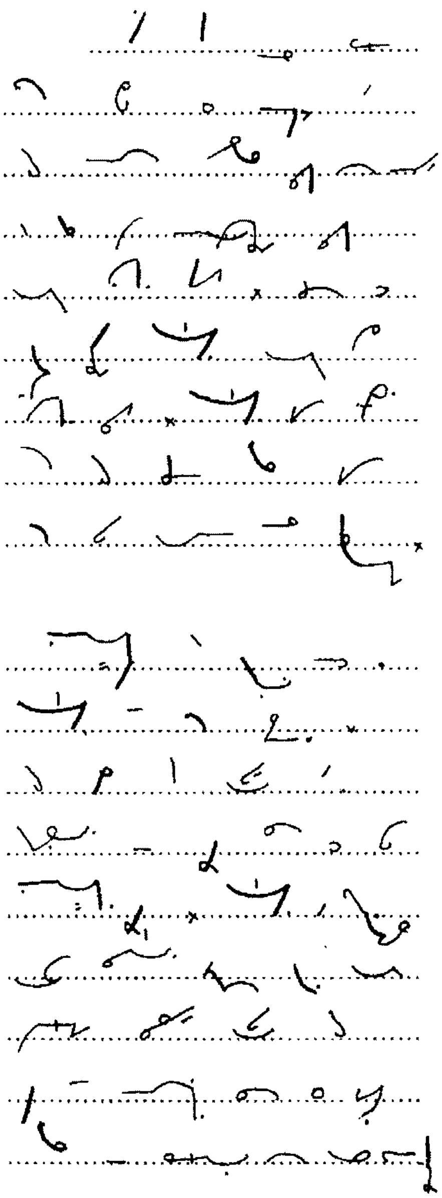

जब कि उनके दैनिक जीवन में उसकी कोई उपयोगिता नहीं है और अंग्रेजी सीखने में समय लगाते हुए वे अपनी मातृ-भाषा की भी उपेक्षा करते हैं। वे इस मानसिकता के शिकार होते जा रहे हैं कि ऊँचे दर्जे के विचार केवल अंग्रेजी भाषा में ही प्रकट किए जा सकते हैं जब कि वास्तविकता इसके विपरीत है। कोई भी व्यक्ति अपने मन के वास्तविक विचार केवल अपनी मातृभाषा में ही स्वाभाविक रूप से प्रकट कर सकता है क्योंकि वह उसके हृदय से निकलती है। उसमें स्वाभाविकता होती है और बनावट से उसका दूर तक का संबंध नहीं होता।

गांधी जी मानते थे कि अंग्रेजी के प्रभाव के कारण राष्ट्र की शक्ति कम हो गई है। विद्यार्थियों की आय घट गई है। वे देश की आम जनता से दूर होते चले जा रहे हैं। आज शिक्षा पाना बड़े खर्च का विषय हो गया है। यदि

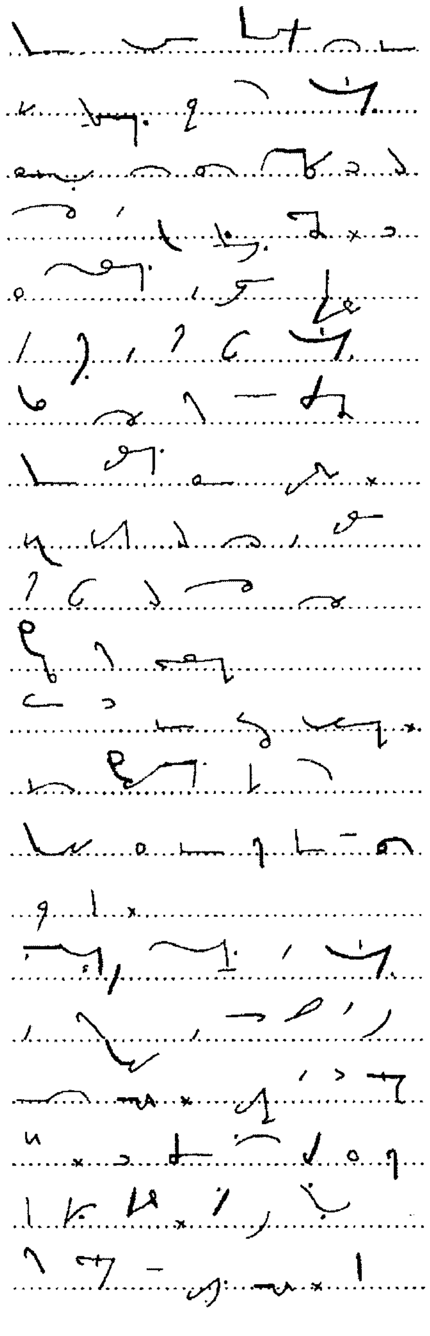

यही सिलसिला बहुत समय तक जारी रहा तो राष्ट्र की असली आत्मा ही नहीं रह पाएगी। यह सभी लोग जानते हैं कि आत्मा का नाश होने से सब तरह की हानि होती है। गांधी जी ऐसा क्यों सोचते थे। उनके दिल में ऐसे विचार इसलिए आते थे कि वे स्वाधीनता आंदोलन के संदर्भ में भाषा की समस्या पर विचार करते थे। उनके लिए यह प्रश्न अधिक महत्वपूर्ण नहीं था कि अंग्रेजी विश्व भाषा है और हिंदी पूरी तरह विकसित नहीं है। उनके लिए मुख्य प्रश्न यह था कि विदेशी भाषा के व्यवहार से राष्ट्र के चरित्र पर क्या असर पड़ेगा। इसीलिए वह इस देश से अंग्रेजी को तुरंत विदा कर देश की भाषा का ही प्रयोग करना चाहते थे।

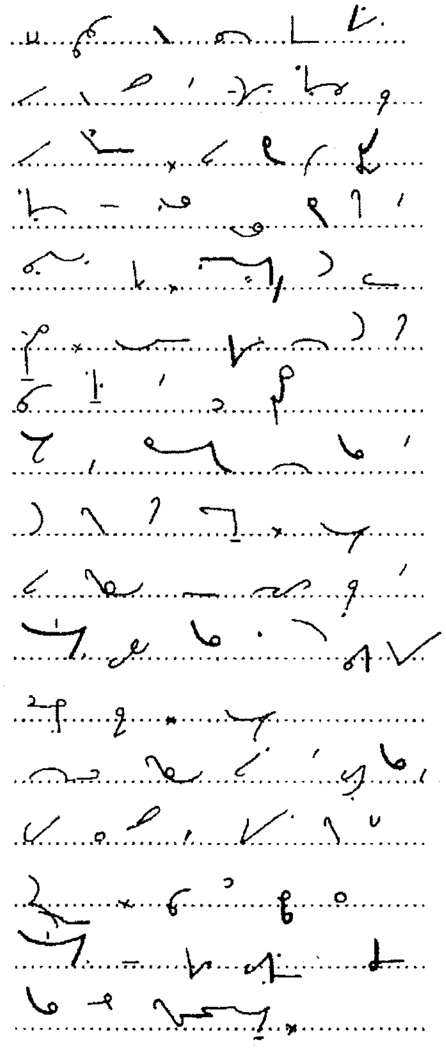

अभ्यास – 4

गांधी जी हर अच्छी चीज को समेट लेते थे और हर गलत बात का मुकाबला भी करते थे। उन्होंने हिंदुस्तान को आगे बढ़ाया। गांधी जी में सारे देश को एक रखने की ताकत थी इस बात को साबित करने के लिए हमारे पास अनेक सबूत हैं। उनके प्रयासों से ही हमारा यह देश अखंड रहा और आज भी यह देश अखंड बना हुआ है। इस पर हम गर्व कर सकते हैं।

अभी कुछ समय पहले यह प्रयास किया गया कि दक्षिण की भाषाओं को उत्तर में पढ़ाया जाए। मेरी दृष्टि से यह विचार बिल्कुल गलत था। हम कोई भी भाषा सीखें पर यदि उसका नियमित अभ्यास न करें तो हम उसे भूल जाते हैं। दूसरा यह विचार कि आप हमारी भाषा पढ़ें तब हम आपकी

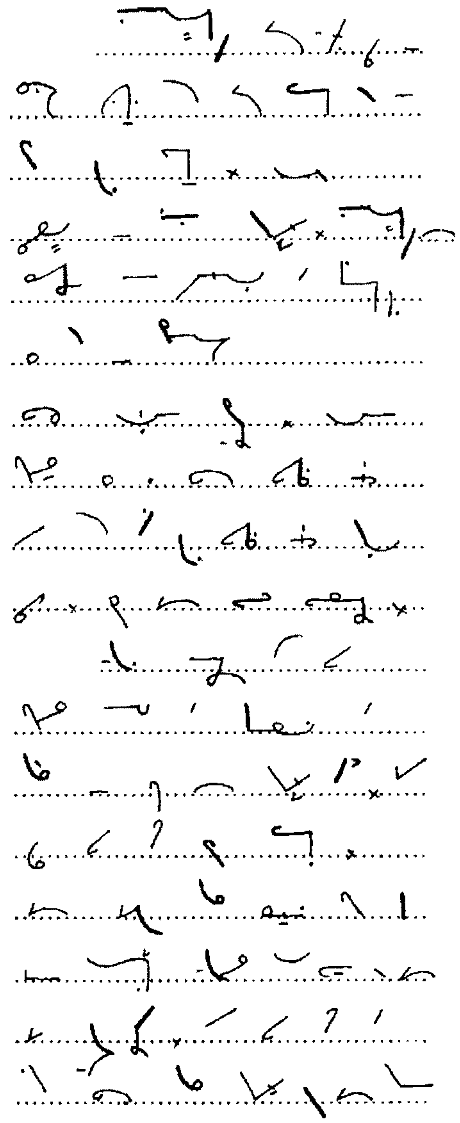

भाषा पढ़ेंगे यह धारणा गलत है। यह पूरी तरह संकुचित धारणा है। कुछ समय तक ऐसा भी चला कि लोगों को कुछ लालच दे कर दूसरी भाषाएं सिखाने का प्रयास किया गया। कुछ समय बाद लोगों से जब यह पूछा गया कि आपने तमिल, तेलुगू सीखी थी तो मालूम हुआ कि उनको अब कुछ भी नहीं आता। इस प्रकार से भाषा सिखाने का कोई अर्थ नहीं रह जाता। हमें वही सीखना चाहिए जिससे कुछ प्रयोजन हो, जिससे कुछ उद्देश्य सिद्ध होता हो, जिसका उपयोग होता हो।

जब हम हिंदी के बारे में विचार करते हैं तो यह स्पष्ट होता है कि गुलामी से आजादी दिलाने के लिए पूरे देश ने जिस भाषा का प्रयोग किया वह हिंदी है। यह हिंदी चाहे उस समय अविकसित थी या समृद्ध नहीं थी लेकिन यह सब को मालूम है कि उसने हम सब को एक साथ लाने का काम किया। गांधी जी के नेतृत्व में देश ने

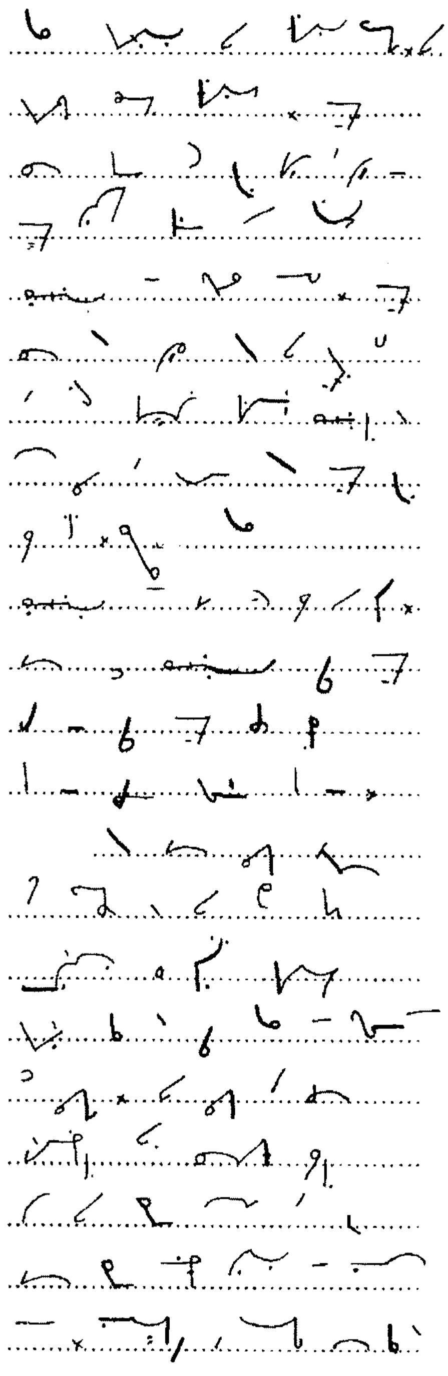

उसे अपनाया। सभी ने उसे राष्ट्रभाषा कहा और उसे ह्रदय से अपनाया कुछ लोग कहते हैं कि संस्कृत राज-भाषा होनी चाहिए थी। मैं भी उस समय ऐसा सोचता था। मेरे जैसे कई अन्य लोग भी ऐसा ही सोचते थे लेकिन आज हम अगर विचार करें तो इस राज-भाषा के पद पर हिंदी के अतिरिक्त कोई अन्य भाषा हमारे सामने नहीं आती। भारत की सभी भाषाएं हमारी राष्ट्र-भाषाएं हैं। उन से ही हमें अपना शब्द भण्डार लेना है। अतः हम उन्हें भी नहीं छोड़ सकते। इसलिए हमने उन्हें राज्यों की राज-भाषा के रूप में रखा है। मैं भाषा की समृद्धि के बारे में भी दो-चार बातें कहना चाहता हूँ।

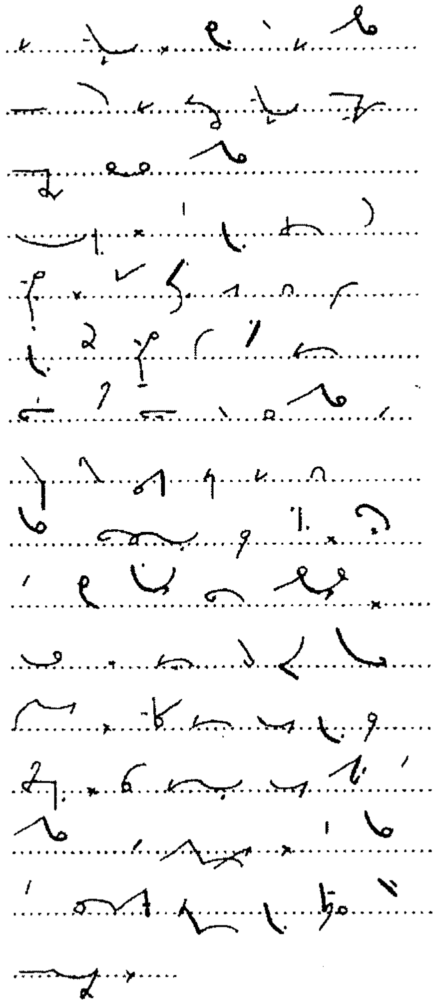

अध्याय – 30

गति अभ्यास – 1

(60 शब्द प्रति मिनट)

माननीय सभापति महोदय, मैं माननीय सदस्य द्वारा प्रस्तुत संकल्प का समर्थन करता हूँ। आज/देश की जो परिस्थिति है उसके अनुसार इस संकल्प पर बहुत सोचने और चर्चा//करने का समय आ गया है। जनसंख्या की वृद्धि ने आज देश को जिस///स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया है, उसके हिसाब से देश की योजनाओं **X** के बारे में सोचने का समय आ गया है। यदि इस पर नहीं सोचा गया/तो जिस ढंग से दुनिया को देखते हुए हम अपने देश के विकास को गति//देना चाह रहे हैं, उसमें हम सफल नहीं हो पाएंगे। इसमें जनसंख्या///बहुत अहम तत्व है। इसलिए यह जरूरी है कि सरकार जनसंख्या वृद्धि की **X** इस गंभीर समस्या पर विचार करे।

आपातकाल के समय जिस ढंग से देश में/परिवार नियोजन का कार्यक्रम चलाया गया उससे लोग भयभीत हो गए थे।//जितनी आस्था और लगाव उसमें लोगों का होना चाहिए था, वह कहीं देखने में///नहीं आया लेकिन देश की स्थिति को देखते हुए हरिजन और आदिवासी, जो **X** उस समय परिवार नियोजन से भयभीत हो गए थे, वे आज स्वयं मन से/इस योजना की तरफ अपना झुकाव बनाए हुए हैं। यह इसलिए हो रहा है//क्योंकि गांव में खेती के अलावा जीवन–निर्वाह का और कोई साधन नहीं है।///वह खेत जो उनको अपने पूर्वजों से प्राप्त हुआ था उसका लगातार छोटे **X** टुकड़ों में बंटवारा हो रहा है। इस परिस्थिति में आज गांवों के अधिकतर आदिवासी/और हरिजन इस कार्यक्रम की तरफ आकर्षित हो रहे हैं। इसके लिए//हमें एक चीज सोचनी पड़ेगी। हमें यह कार्यक्रम ऐसे क्षेत्रों में अधिक गति से///चलाना चाहिए जहां पर सभी आधुनिक सुविधाएं हों तथा स्वास्थ्य केंद्रों में अच्छे डॉक्टर हों। **X**

गति अभ्यास – 2
(60 शब्द प्रति मिनट)

अध्यक्ष महोदय, मैं आपके सामने एक और विशेष बात रखना चाहता हूँ। पिछले साल/इस निगम ने चार करोड़ रुपए का कर्ज दिया लेकिन यदि आप इसके कुल//खर्च को देखें तो आपको मालूम होगा कि उस पर तीस लाख रुपया सालाना///खर्च भी हुआ है। आप सोचिए कि आपके साधनों के ऊपर काम करने वाला **X** कोई निगम चार करोड़ रुपये कर्ज देने में यदि तीस लाख रुपए साल का खर्च/कर दे तो उस के लिए दिवालिया होने के अलावा और कोई रास्ता नहीं रहता।// इसलिए मैं आपसे यह अर्ज करना चाहता हूँ कि इस निगम के काम///को सरकार चाहे किसी भी दृष्टि से देखे, लेकिन हम लोग इसकी आलोचना करने **X** के अलावा और कुछ नहीं कर सकते। इस देश के करोड़ों आदमियों का जमा किया/हुआ पैसा सरकार के पास आता है, उसकी इस तरह से बर्बादी नहीं होनी//चाहिए, उसके समुचित उपयोग का पूरा प्रयास होना चाहिए।

अब दूसरी बात आप देखें///कि इस निगम के पास ऐसे कर्जदार आते हैं जो महीनों और वर्षों उन **X** के आगे-पीछे दौड़-भाग करते हैं। उनके ऊपर वह हजारों रुपया खर्च करने/के बाद अपना कर्ज मंजूर करा पाते हैं। वे आदमी आमतौर पर ऐसे होते//हैं कि महीनों और वर्षों तक अपने कर्ज की रकम नहीं उठा पाते। इस तरह///निगम को ब्याज का बहुत नुकसान उठाना पड़ता है। अब आप ही बताइए कि ऐसी **X** कौन-सी संस्था होगी जिसके पास कर्जदार आएं, अपने कर्ज की रकम को/मंजूर भी करा लें और घर जाकर आराम से बैठ जाएं तथा वर्षों तक//कर्ज की रकम को उठाने के लिए ही न आएं। यदि सरकार चाहती है कि निगम///का काम ठीक तरीके से चले तो इसको नई–नई योजनाओं के लिए पूंजी **X** दी जाए।

गति अभ्यास – 3

(60 शब्द प्रति मिनट)

अध्यक्ष महोदय, सदन में माननीय सदस्य ने जो प्रस्ताव रखा है उसका मैं समर्थन/करता हूँ। योजना आयोग ने नई पंचवर्षीय योजना बनाई और संसद ने भी उसे//अपनी सहमति प्रदान की है। इस पर आज की नई परिस्थिति में विचार होना जरूरी///है। आप जानते हैं कि विदेशों में पिछले कुछ महीनों से सभी चीजों की कीमतें **X** बढ़ रही हैं। इस पंचवर्षीय योजना के लिए जो राशि निर्धारित की गई, वह/पुरानी कीमतों और पुराने आर्थिक ढांचे पर आधारित है। यदि महंगाई इसी तरह से बढ़ती //रही तो इस योजना का क्या होगा। उस हालत में इसको कार्यान्वित करना बहुत///ही कठिन हो जाएगा। इसलिए इस पर अभी विचार करना बहुत ही जरूरी है। **X** मैं समझता हूँ कि आज की जो कीमतें हैं यदि उनका ध्यान रखा जाए/तो योजना का जो अनुमान लगाया गया है वह बहुत कम पड़ेगा। पिछली चार योजनाएं//बीत चुकी हैं। उनके बारे में मैं कुछ बातें आपके सामने रखना चाहता///हूँ ताकि अगली योजना में उन बातों को दृष्टि में रखते हुए उसको कार्यान्वित **X** करना संभव हो सके। बड़े बड़े अधिकारी या नेता जब योजना बनाएं तो जनता के/हितों का ध्यान अवश्य रखें। देखा गया है कि वे अपने अनुसार ही योजनाएं बनाते//हैं। योजना आयोग की रिपोर्ट में बहुत से दोष पाए गए हैं। उनकी ओर///समय-समय पर मैंने सदन का ध्यान भी आकर्षित किया है। मैं देहात का **X** रहने वाला हूँ और किसान के घर पैदा हुआ हूँ। मुझे कृषि उद्योग के बारे/में काफी जानकारी है। योजनाओं को कार्यान्वित करने का काम अधिकारियों पर छोड़ा जाता है।//वह जैसा चाहते हैं वैसा करते हैं। उनको खेती का बहुत कम ज्ञान होता///है। इस कारण सरकार सही मायने में किसानों की मदद करना चाहे तो भी नहीं **X** कर पाती।

गति अभ्यास – 4
(60 शब्द प्रति मिनट)

अध्यक्ष महोदय, माननीय वित्त मंत्री जी ने अपने बजट में कर ढांचे में सुधार करने/का पूरा प्रयास किया है और वेतन भोगी कर्मचारियों को राहत देने के लिए कुछ//व्यवस्थाएं की हैं परंतु यदि उन पर बारीकी से विचार किया जाए तो आप देखेंगे///कि उसमें कर राहत के केवल सपने दिखाए गए हैं। कर्मचारियों को कर राहत **X** मिलने की जो आशा थी, यह बजट उनकी आशाओं के अनुरूप नहीं दिखता।

महोदय,/अनेक सदस्यों ने इस बजट के संबंध में अपने विचार यहां रखे हैं। बजट पर//बहस में भाग लेने वाले सदस्यों में सत्ता पक्ष के सदस्य भी थे और विपक्ष///के सदस्य भी थे। यदि इस सदन में बजट पर हुई अब तक की बहस **X** पर ध्यान दिया जाए तो एक बात साफ है कि सदन में बहस का जो/स्तर होना चाहिए उसमें गिरावट दिखाई देती है। देश का बजट, उसके विकास//के लिए, उसके सामाजिक और आर्थिक उत्थान के लिए एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है।///इस दस्तावेज पर, राजनीतिक पार्टियों को आधार बना कर, राजनीति नहीं करनी चाहिए बल्कि **X** देश के लिए वास्तव में क्या अच्छा है और क्या बुरा है, इस पर विचार/करते हुए सदस्यों को अपनी स्पष्ट राय व्यक्त करनी चाहिए। सरकार को ऐसे सटीक सुझाव//देने चाहिए जिससे देश का आर्थिक और सामाजिक विकास हो सके। मुझे खेद के///साथ कहना पड़ता है कि अनेक सदस्य इस भावना को व्यक्त करने में असमर्थ रहे। **X** सत्ता पक्ष के अनेक सदस्यों ने जहां बजट की बढ़ा–चढ़ाकर तारीफ की वहीं/विपक्ष ने उसकी आलोचना करने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

महोदय, जब किसी भी//समस्या को उसके वास्तविक स्वरूप में न देख कर केवल राजनीतिक लाभ के लिए///उस पर बहस की जाए तो उससे उस समस्या का समाधान नहीं हो पाएगा। **X**

गति अभ्यास – 5
(80 शब्द प्रति मिनट)

उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपका बड़ा आभारी हूँ कि आपने मुझे बोलने के लिए समय दिया है। मैं आप /से निवेदन करना चाहता हूँ कि मुझे कुछ अधिक समय दिया जाए क्योंकि मुझे काफी बातें सदन के सामने//रखनी हैं। कुछ महीने पहले रेल मंत्री जी ने जिन परिस्थितियों में रेल मंत्रालय संभाला वे बड़ी कठिन परिस्थितियां थीं।///पिछली सरकार ने मंत्रालय की व्यवस्था को बहुत खराब कर दिया था। इन सब के बावजूद भी रेल मंत्री जी **X** ने मंत्रालय की व्यवस्था में सुधार कर दिया है। इसके लिए मैं उनको बधाई देना चाहता हूँ। मैं/बड़े गर्व के साथ कह सकता हूँ कि पिछले कुछ महीनों में इन सभी कठिनाइयों का सामना सफलता के साथ//किया गया है। देश में सूखा पड़ने के कारण काफी कठिनाई आ गई थी। इस समय भी रेलवे ने दूर///दूर के क्षेत्रों में नागरिकों के लिए आवश्यक चीजों को समय पर पहुँचाया है जिससे आम जनता को अधिक **X** परेशानी का सामना नहीं करना पड़ा। मैं यह भी बताना चाहता हूँ कि बिहार के कुछ ऐसे क्षेत्रों में जहां/पीने के पानी का बहुत अभाव हो चुका था, वहां पर भी रेलों द्वारा पीने के पानी को पहुंचा कर//जनता को बहुत अधिक राहत पहुंचाई गई।

महोदय, मैं मंत्री महोदय को इस बात के लिए भी धन्यवाद देना चाहता///हूँ कि उन्होंने रेलवे का जो बजट प्रस्तुत किया है, वह आम जनता को बहुत राहत पहुंचाने वाला बजट है। **X** इस बजट का सारे देश में स्वागत किया जा रहा है। ऐसे समय में जब कि सारे देश की आम/जनता बढ़ती हुई महंगाई से बहुत परेशान है, रेलवे बजट में इस तरह की व्यवस्था करना, जिससे आम जनता//पर अधिक भार न पड़े, एक स्वागत योग्य कदम है। रेलवे विभाग में बढ़ते हुए भ्रष्टाचार को भी समाप्त करने///का निर्णय किया गया है। जब तक सरकार अपने मंत्रालयों और विभागों में फैले भ्रष्टाचार को समाप्त करने का प्रयास **X** नहीं करती तब तक किसी भी प्रकार से देश का विकास नहीं हो सकता, यह सोचने योग्य बात है। मैं/रेल मंत्री जी से निवेदन करना चाहता हूँ कि वे इस तरह की व्यवस्था करें जिससे भ्रष्टाचार को बढ़ाने//वाले लोगों को ऐसी सजा दी जा सके कि भविष्य में कोई भी ऐसा कदम उठाने की हिम्मत न करे///और मंत्रालय के काम में बाधा न पड़े। महोदय, मैं फिर आपका आभार प्रकट करता हूँ कि मुझे बोलने **X** का समय दिया।

गति अभ्यास–6
(80 शब्द प्रति मिनट)

सभापति महोदय, आज इस सदन में जिस विषय पर चर्चा हो रही है, वह काफी महत्वपूर्ण है और/हमारी भावी पीढ़ी से जुड़ा हुआ है। मुझे भी अपने विचार प्रकट करने के लिए आपने जो अवसर प्रदान//किया है, उसके लिए मैं आपका आभार प्रकट करता हूँ और हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। शिक्षा जैसे विषय///पर बहुत कुछ कहा जा सकता है। चूंकि मेरे हिस्से में बहुत कम समय आया है और मेरे से पूर्व **X** कई माननीय सदस्य इस विषय पर अपने विचार प्रकट कर चुके हैं, इसलिए मैं कम से कम समय में/इस संबंध में अपना मत प्रकट करने का प्रयत्न करूंगा। अपने पूर्व वक्ताओं की भांति मैं भी इस बात से//पूर्ण रूप से सहमत हूं कि शिक्षा प्रणाली में बुनियादी परिवर्तन की आवश्यकता है। मैं समझता हूं कि कई वर्षों///से शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन नहीं किया गया है। देश की परिस्थितियों के अनुसार शिक्षा प्रणाली बनाई जाती है। आज **X** की शिक्षा प्रणाली पुरानी परिस्थितियों के अनुसार निर्धारित की गई थी, जो आज के समय के अनुसार ठीक नहीं है।/आज देश को प्रगति की ओर ले जाने के लिए जिन साधनों की जरूरत है, उन्हीं के अनुसार शिक्षा प्रणाली//बनाई जानी चाहिए। इसलिए मेरा निवेदन है कि शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन किया जाए ताकि जो नवयुवक पढ़///कर आएं वे देश के विकास के लिए कार्य करने योग्य सिद्ध हो सकें। यह सभी जानते हैं कि जो **X** विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं, भविष्य में उन्हीं के ऊपर देश का भार पड़ना है। आज हम सभी को/गंभीरता से यह विचार करना है कि हम किस प्रकार की शिक्षा अपने नव-युवकों को दें, जिससे वे//सही रूप से देश का भार संभाल सकें। आज देश जिन परिस्थितियों से गुज़र रहा है, उसके अनुसार हमें///सही शिक्षा दे कर अपने नव-युवकों को तैयार करना है। इससे न केवल युवा पीढ़ी को नई दिशा **X** मिलेगी, बल्कि देश को भी एक गति मिलेगी।

महोदय मैं आपसे यह भी निवेदन करना चाहता हूं कि इस/महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा के लिए अधिक समय दें ताकि सभी सदस्यों को अपने विचार व्यक्त करने का अवसर//मिल सके और शिक्षा के संबंध में ऐसी नीति बन सके, जिससे देश को लाभ मिल सके। मैं निवेदन///करना चाहता हूं तथा अपनी ओर से सुझाव देना चाहता हूं कि सबसे पहले शिक्षा के बुनियादी ढांचे में **X** परिवर्तन किया जाए।

गति अभ्यास–7
(80 शब्द प्रति मिनट)

सभापति महोदय, माननीय मंत्री जी से मैं यह अनुरोध करना चाहूंगा कि देश के जो पिछड़े हुए इलाके हैं उन/में बहुत सी नई रेलवे लाइनें बनाने के बारे में आप ने समुचित निर्णय लिए हैं। मध्य प्रदेश की स्थिति// के संबंध में अनेक बार जोर दिया गया है और कुछ महत्वपूर्ण प्रस्ताव विचाराधीन हैं। विकास की दृष्टि से///वहां के लिए जो आवश्यक प्रस्ताव है उस पर भी विचार करके निर्णय लिया जाना चाहिए।

अंत में एक **X** बात इस संबंध में मैं और कहना चाहूंगा कि जहां तक वेतन और महंगाई का प्रश्न है यह एक बड़ा/राष्ट्रव्यापी प्रश्न है। इस पर कई दृष्टियों से विचार किया जा रहा है। वेतन का काम की मात्रा से//संबंध अवश्य स्थापित किया जाना चाहिए। दुनिया के अन्य जो प्रगतिशील देश हैं, उन्होंने भी इस नीति को अपनाया///है। महंगाई और बढ़े हुए वेतन का कोई अंत नहीं है। महंगाई बढ़ती जाती है तथा समस्याएं भी बढ़ती जाती **X** हैं। इससे देश में हर प्रकार की परेशानी, हड़तालें और रुकावटें पैदा होती हैं। इसलिए इस प्रश्न पर/इस दृष्टिकोण से अवश्य विचार करें कि जो जितना काम करे उसको उतना वेतन मिलना चाहिए। अगर इस पद्धति//को अपनाया गया तभी हम इस समस्या का मुकाबला कर सकेंगे। मैं आपका अधिक समय नहीं लेना चाहता। मंत्री///महोदय से मैं निवेदन करना चाहता हूं कि आपको देश की, पूरे राष्ट्र की जनता की परेशानी और सुरक्षा **X** की ओर ध्यान देना चाहिए। हड़तालों के कारण सभी को कठिनाई का सामना करना पड़ता है। एक यात्री अपने घर /से अपने मुकाम पर पहुंचने के लिए निकलता है। यदि रेलगाड़ी बीच में ही रद्द हो जाती है तो//उसे परेशानी का सामना करना पड़ता है। इस देश में लोग रेलवे को यातायात के प्रमुख साधन के रूप में///प्रयोग करते हैं। इस प्रकार की स्थिति से राष्ट्र की तरक्की और विकास के लिए खतरे की बात हो सकती **X** है। इन समस्याओं पर प्रशासन को गंभीरता से विचार करना चाहिए तथा इसका हल निकालना चाहिए। यदि तत्काल ही/इस समस्या को सुलझाने का प्रयास न किया गया तो आगे चल कर इसके भयंकर परिणाम हो सकते हैं।//एक अन्य बात की ओर मैं सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा। दिल्ली के कार्यालयों में काम करने वाले कर्मचारी///निकट के राज्यों से प्रतिदिन रेल से यात्रा करते हैं। रेलों की कमी के कारण उन्हें कठिनाई का सामना **X** करना पड़ता है।

गति अभ्यास–8

(80 शब्द प्रति मिनट)

अध्यक्ष महोदय, मैं आपका बहुत आभारी हूं कि आपने मुझे इस अवसर पर सदन में बोलने का अवसर/दिया है। यह जो प्रस्ताव सदस्य महोदय ने यहां सदन में प्रस्तुत किया है उस पर दोनों तरफ के लोगों//ने अपने अपने विचार प्रकट किए हैं। मुझे बहुत खुशी है कि आज दोनों तरफ के लोगों ने एक ही///आवाज में इस प्रस्ताव का समर्थन किया है। शायद यह पहला अवसर है, जब इस प्रस्ताव पर सभी सदस्यों ने **X** अपनी सहमति प्रकट की है। मुझे इस बात का डर भी है कि यह जो प्रस्ताव है उसे तुरंत मंत्री/महोदय द्वारा स्वीकार कर लिया जाएगा और उसके बाद देश के किसानों को उनके अनाज का उचित मूल्य//भी दे दिया जाएगा। कुछ दिनों के बाद हम में से कई सदस्य आपत्ति करेंगे कि अनाज के///भाव बढ़ गए हैं और देश की आम जनता परेशान है। इसलिए कीमतों को कम किया जाना चाहिए। ऐसी **X** अवस्था में मेरी समझ में यह नहीं आता है कि यह सदन किसानों को उनके अनाज का उचित मूल्य/दिलाने में मदद करेगा या फिर देश की आम जनता को सस्ता अनाज दिलाएगा। मैं समझता हूं कि दोनों बातों//को एक साथ करना बड़ा कठिन हो जाएगा।

अध्यक्ष महोदय, यह हमारे देश का सौभाग्य है कि यहां कृषि का///काम करने वालों की संख्या बहुत अधिक है। अभी कुछ समय पहले हमारे योजना मंत्री जी ने बताया है कि **X** देश में बेरोजगारों की संख्या बहुत बढ़ रही है, जिनको हम खेती के काम में लगा सकते हैं। हमें/ऐसा कोई भी काम नहीं करना चाहिए जिससे बेरोजगार लोग खेती का काम छोड़ कर शहरों की तरफ आना//शुरू कर दें। मंत्री महोदय के कहने का अर्थ केवल यह है कि हमें खेती में काम करने वाले किसानों/// को अधिक से अधिक सुविधाएं देनी होंगी जिससे कि वे अच्छी तरह से अपने परिवार का पालन-पोषण कर **X** सकें और अपने बच्चों को भी पढ़ा सकें। एक समय था जब इस देश का किसान कर्ज में पैदा होता/था, कर्ज में बड़ा होता था और कर्ज में ही मर जाता था। आज वह स्थिति नहीं रही। इसी तरह//से यदि हमारी सरकार किसानों की भलाई के लिए कार्य करती रहे तो किसानों को भी पूरा विश्वास हो जाएगा///कि सरकार उनका हित चाहती है और उन्हें पूरा सहयोग देकर खेती की पैदावार को बढ़ाना चाहती है। **X**

गति अभ्यास–9

(80 शब्द प्रति मिनट)

सभापति महोदय, अभी दो दिन पूर्व राज्य सभा में सदस्यों ने इस बात के लिए सरकार को दोषी ठहराया/था कि वह हरिजनों की रक्षा के काम में असफल रही है। हो सकता है कि इस आरोप के पीछे//कुछ सदस्यों का राजनीतिक उद्देश्य हो, किंतु इससे आरोप को बिलकुल बेबुनियाद नहीं कहा जा सकता और उसकी///उपेक्षा नहीं की जा सकती। राज्य मंत्री जी ने भी इस आरोप के बचाव में यह कहा है कि हरिजनों **X** को अत्याचारों से बचाने के लिए सरकार कदम उठा रही है। उन्होंने यह भी कहा है कि जहां कहीं से/अत्याचार की शिकायतें आ रही हैं, जांच पड़ताल की जाती है और अपराधियों को दंडित भी किया जाता है। सरकार//इस संबंध में कितनी जागरूक है, इसके लिए उन्होंने गुजरात सरकार का यह उदाहरण पेश किया है कि उस///ने अपने यहां यह आदेश जारी कर दिया है कि हरिजनों की सुरक्षा के लिए जिला अधिकारी जिम्मेदार ठहराए जाएं। **X** यह सब सही है कि केंद्र सरकार ने इस सिलसिले में आवश्यक संपर्क रखा है, किंतु यह आरोप भी तर्क/संगत है कि हरिजनों के संरक्षण का काम पूरी सावधानी और जागरूकता से नहीं हो रहा है।

आदिवासियों और हरिजनों//पर हुए अत्याचारों ने कितना भयंकर रूप धारण किया है, यह इस बात से सिद्ध हो जाता है कि कई///प्रदेशों में हरिजनों को जिंदा जलाया गया है और उनके घरों में आग लगा दी गई है। शेष मामले **X** ऐसे हैं जिनमें या तो उनकी जमीनों पर कब्जा कर लिया गया था या उन्हें इस प्रकार से अपमानित/किया गया। इन में मारपीट, बलात्कार आदि भी शामिल हो सकते हैं। वक्तव्य में राज्यवार ब्यौरा दिया गया//है और बताया गया है कि किस राज्य में कितनी घटनाएं हुईं। क्या इसके बाद भी हरिजनों पर अत्याचार///की सत्यता में कोई संदेह रह जाता है? वक्तव्य में यह बताया गया है कि सरकार ने इन मामलों के **X** सिलसिले में क्या कदम उठाए। परंतु यह सब गिनाने से तब तक कोई फायदा नहीं है जब तक यह सिद्ध/नहीं हो जाता कि हरिजनों पर अत्याचार की घटनाएं अब कम हो रही हैं। बहुत से मामले ऐसे भी हैं//जिनमें कोई कानूनी कार्रवाई नहीं की जा सकी। अकेले मध्य प्रदेश में 40 मामले ऐसे हैं, जिन पर राज्य///सरकार कोई उचित कार्रवाई नहीं कर सकी। ऐसी सूरत में अत्याचार करने वालों का उत्साह बढ़ेगा तथा लोगों का प्रशासन **X** से विश्वास खत्म हो जाएगा।

गति अभ्यास–10
(100 शब्द प्रति मिनट)

इस बिल में एक बात कही गई है कि जो पैसा बाहर से गलत तरीके से हमारे देश में आता है उसके ऊपर रोक/होनी चाहिए। बिल में यह भी कहा गया है कि अगर बाहर से धन लिया जाता है तो इसकी सूचना भी तुरंत सरकार को//दी जानी चाहिए। ऐसे धन को लेने वाले आदमी के लिए यह आवश्यक होना चाहिए कि उस रकम का पूरी तरह से हिसाब रखा जाए///और एक साल के बाद उस रकम का पूरा हिसाब सरकार के पास भेजे ताकि सरकार को मालूम हो सके कि कितना पैसा बाहर से **X** आया और किस तरह से काम में लाया गया। सदन में इस पर बहुत बार बहस हो चुकी है। एक बार माननीय महोदय ने कहा/था कि एक बिल सदन में लाया जाएगा लेकिन दो साल बीत जाने के बाद भी आज तक वह बिल नहीं लाया गया है। आज//अगर कोई यह कहे कि यह पैसा अमरीका से लिया है या चीन से लिया है तो उस पर आज मुकद्दमा नहीं चल सकता। आज///ऐसे कानून की कमी है जो इस चीज पर रोक लगा सकता हो। पैसा आज अमरीका से आता है, पैसा आज चीन से और पाकिस्तान **X** से भी आता है। इस तरह का कितना धन देश में फैला है, अगर इसकी ओर ध्यान दिया जाता है तो एक चिंताजनक/स्थिति आपके सामने आ जाएगी। अगर इसी तरह से चलता रहा तो हो सकता है कि एक दिन हमारे देश की सुरक्षा को खतरा//पैदा हो जाए। किसी मुल्क की सेना हमारी सीमा पर हमला न कर सके इस बात की चिंता तो हमारी सरकार करती है लेकिन विदेशी///धन की चिंता हमारी सरकार नहीं कर रही है। आपको पता है कि पैसे देकर लोगों को गुमराह किया जाता है और उनसे **X** गलत काम करवाया जाता है। इस स्थिति को देखते हुए यह आवश्यक है कि तत्काल सरकार को इस मामले में कारगर कदम उठाकर देश/को बचाना चाहिए। इसी तरह से मुल्क की आजादी को कायम रखा जा सकता है। मुझे आशा है कि इस संबंध में मैंने जो//बातें कही हैं और अन्य सदस्यों ने जो प्रश्न उठाए हैं, उन पर सरकार पूरा ध्यान देगी और ऐसी व्यवस्था करेगी कि सभी समस्याओं का///समाधान निकल सके। सब जगह विदेशी पैसे के बल पर अपना प्रभाव जमाने की कोशिश हो रही है। यह समस्या किसी एक दल की नहीं **X** है, बल्कि पूरे राष्ट्र की समस्या है। अतः

इस समस्या पर गंभीरतापूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। आपने मुझे बोलने का समय दिया, / इसके लिए मैं आपका आभारी हूं।

श्रीमान जी, इस नए 20 सूत्री कार्यक्रम में भी शिक्षा के ऊपर काफी जोर दिया गया // है। मुझे पूरा विश्वास है कि उसको कानून का रूप भी दिया जाएगा तथा इससे काफी हद तक समस्या के समाधान में मदद /// मिलेगी। जब देश में अधिक से अधिक लोग पढ़े लिखे होंगे तभी वे देश की प्रगति में अपना सक्रिय योगदान दे सकने में सफल होंगे। **X**

गति अभ्यास–11

(100 शब्द प्रति मिनट)

श्रीमान, आज जो विषय आपके सामने पेश है, उसमें अनेक सदस्य काफी समय से रुचि रखते हैं। इस नए प्रदेश के बनने/से उनको इस बारे में सोचने का अवसर मिला। इसी बीच प्रदेशों के पुनर्गठन के लिए एक कमीशन बनाया गया और उसके बनने//के कारण से जिन क्षेत्रों में यह मर्ज़ पहले से नहीं था। और ऐसी भावना नहीं थी कि हम अलग हों या इससे अलग///होकर दूसरे प्रदेश से मिलना है, वहां के लोगों ने भी इस ओर सोचना शुरू किया। इसका फल यह हुआ कि कई हजार **X** मांगें देश के हर भाग से इस कमीशन के सामने आईं। इस संबंध में मेरा कहना यह है कि छोटे राज्यों की मांग को स्वीकार/करते समय सरकार को पूरी सावधानी बरतनी चाहिए। भाषा, धर्म या जाति के आधार पर राज्यों का विभाजन पूरे राष्ट्र के लिए गंभीर खतरा है।//ऐसी कोई भी मांग लोगों को एक दूसरे से अलग होने की प्रेरणा देगी। अतः हमें ऐसे मामलों पर पूरी सावधानी बरतनी चाहिए और विभाजन///की मांगों को अधिक महत्व नहीं देना चाहिए।

अभी हमारे किसी सदस्य ने यहां पर कहा कि हमारे होम मिनिस्टर जहां भी गए हैं, उन्होंने **X** इसी कमीशन का उल्लेख किया है। उनका ऐसा कहना ठीक है तथा इसमें कोई हर्ज़ भी नहीं है। मुझे कमीशन के कार्य से/पूरी तसल्ली है। वह अपने फर्ज़ को पूरी मुस्तैदी के साथ पूरा कर रहा है लेकिन जनता यह समझ ले कि सिर्फ मांग करने से//ही काम चल जाएगा, यह एक बेकार चीज होगी। मुझे याद है कि सन् 1952 में इस सदन में एक बहस हुई थी///जिसमें होम मिनिस्टर ने कहा था कि जम्मू और काश्मीर का इस देश के साथ एकीकरण होने से इसे काफी हानि होगी, क्योंकि **X** सीमा कर से उसे जो आय हो रही है वह एकीकरण के बाद रुक जाएगी। अच्छा तो यह होता कि इस बारे में सरकार की तरफ/से एक रिपोर्ट सदन के सामने पेश की जाती ताकि सदस्य उसके आधार पर अपने विचार सदन के सामने रखते।

महोदय, देश के विभिन्न//राज्यों के पुनर्गठन का प्रश्न एक ऐसा गंभीर प्रश्न है जिस पर बहुत सावधानीपूर्वक विचार किया जाना चाहिए। यदि इसमें कहीं भी ऐसा///संकेत मिलता है कि सरकार छोटे राज्यों का गठन भाषा अथवा किसी जाति–विशेष के आधार पर करने जा रही है तो संभव है कि

X पूरे देश से हजारों मांगें सरकार के समक्ष आएंगी जिससे यह प्रश्न सुलझने के स्थान पर और भी जटिल होने की पूरी आशंका है।/अतः इस कमीशन को सावधानीपूर्वक काम करना चाहिए।

मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि मुझे इस कमीशन के खर्च पर कोई आपत्ति//नहीं है, परंतु जिन मामलों की तरफ मैंने इशारा किया है, वे अति आवश्यक हैं तथा उन पर आपको ठीक से विचार करना///होगा। इन अल्फाज़ के साथ मैं बिल का अनुमोदन करता हूं। मैं आभारी हूं कि आपने मुझे इस बिल पर अपने विचार प्रस्तुत करने का **X** अवसर दिया।

गति अभ्यास–12
(100 शब्द प्रति मिनट)

अध्यक्ष महोदय, बजट पर जो चर्चा चल रही है उसमें हिस्सा लेते हुए मैं भी अपने विचार सदन के सामने प्रस्तुत करना चाहता हूं।/इस पर विचार करते समय दो बातों को हमें दृष्टि में रखना होगा। एक बात तो यह है कि किस स्थिति में हमारा देश गुज़र//रहा है और उसमें हमें क्या करना है। दूसरी बात यह है कि भविष्य में हम देश को किस दिशा में ले जाना चाहते///हैं। जब तक इन दोनों बातों को ध्यान में रखते हुए इस बजट को नहीं देखेंगे तब तक हम यह निर्णय कदापि नहीं कर पाएंगे **X** कि यह जो बजट सदन के सामने पेश हुआ है, देश के लिए अच्छा है या नहीं।

जब मैं इस समय के हालात को देखता/हूं तो मेरे सामने देश की संकटकालीन स्थिति आ जाती है। आज के तकनीकी युग में परमाणु खतरों से इनकार नहीं किया जा सकता।//कुछ देश हमारी आपसी एकता को मिटाकर, हमको लड़ाकर इस देश में आतंक फैलाना चाहते हैं। इसके साथ ही साथ जब///मैं पिछले बजट को सामने रखता हूं तो मुझे यह कहना पड़ता है कि आज का बजट चाहे जिस हालात में भी रखा गया हो, **X** बहुत अच्छा बजट है। एक सही कोशिश हमारे वित्त मंत्री महोदय ने इस बजट को तैयार करते समय की है। लेकिन एक राजनीतिज्ञ की दृष्टि/से जब मैं देश के भविष्य की ओर देखता हूं तो मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं होता है कि देश की समस्याओं का//कोई विशेष समाधान इस बजट से नहीं निकलता है। मैं जिस पार्टी से संबंध रखता हूं, उसके जो उद्देश्य हैं उनको सामने रखते///हुए मैं यह कह सकता हूं कि हमारे सामने जो आदर्श हैं वे सब आज ही पूरे नहीं हो सकते। हमारे वित्त मंत्री या हमारी **X** सरकार आज ही सब कुछ नहीं कर सकती। लेकिन फिर भी मैं यह जरूर कहना चाहता हूं कि हमें देखना चाहिए कि हमारा देश आगे/बढ़ रहा है या नहीं। जिस दिशा में हम आगे नहीं बढ़ रहे हैं उसे देख कर मुझे निराशा अवश्य होती है। जो प्रस्ताव कांग्रेस //अधिवेशन में पास हुआ उसके मूलभूत विचार मैं आपके सामने रखना चाहता हूं। हमने वहां यह निश्चय किया था कि सातवीं///पंचवर्षीय योजना समाप्त होने तक देश की जनता की आवश्यकता की चीजें पूरी कर दी जाएंगी और इस दिशा में हमारी कोशिशें जारी हैं। **X**

माननीय अध्यक्ष महोदय, चाहे कुछ भी हो, हमारी सरकार का उद्देश्य यही होना चाहिए कि हमारी नीतियों का अधिक से अधिक लाभ कमजोर और पिछड़े/वर्गों को ही मिलना चाहिए। जिन लोगों ने

बड़े विश्वास के साथ हम सबको चुनकर संसद तक पहुंचाया है हमें उनके विश्वास // को बनाए रखना है। इसलिए यह जरूरी हो जाता है कि हमें देश के विकास के साथ उन सभी लोगों के हितों को ध्यान /// में रखकर चलना होगा। बजट में उनके लिए ऐसे प्रावधान किए जा सकते हैं जिससे देश के विकास में बाधा न हो। **X**

गति अभ्यास–13

(100 शब्द प्रति मिनट)

सभापति महोदय, राष्ट्रपति महोदय के अभिभाषण पर जो धन्यवाद प्रस्ताव इस सदन के समक्ष प्रस्तुत किया गया है, मैं उसका समर्थन/करता हूं और चर्चा में भाग लेते हुए अपने कुछ विचार प्रकट करना चाहता हूं। बड़े दुख की बात है कि इस महत्वपूर्ण//अवसर पर जब राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर धन्यवाद का प्रस्ताव सदन के समक्ष रखा गया तो कुछ विपक्षी दलों के सदस्य सदन से///उठकर चले गए। मैं यह मानता हूं कि देश की बिगड़ती हुई हालत को ध्यान में रखकर उन सदस्यों ने विरोध प्रकट किया **X** है, किंतु विरोध प्रकट करने के और भी कई अन्य तरीके हो सकते हैं। वे अपनी बातों को सदन के समक्ष रख सकते थे, विरोध/प्रकट कर सकते थे और फिर भी यदि वे चाहते तो सदन छोड़कर जा सकते थे। अभिभाषण में देश की एकता को बनाए//रखने पर विशेष जोर दिया गया है। मैं समझता हूं कि यही सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है, जिसकी तरफ सबका ध्यान जाना///चाहिए। कुछ वर्षों से देखा जा रहा है कि देश के कई राज्यों में हिंसक आंदोलन चल रहे हैं, जिससे वहां की शांति-व्यवस्था **X** को खतरा हो गया है। आंदोलन चलाए जा सकते हैं, किन्तु जब आंदोलन हिंसक हो जाते हैं, जनता को नुकसान पहुंचाने लगते हैं और देश/की एकता के लिए खतरा बढ़ जाता है तो फिर चिंता का होना स्वाभाविक ही है। राष्ट्रपति महोदय ने इस संबंध में जो विचार//प्रकट किए हैं, मैं उनसे पूरी तरह से सहमत हूं और इस सदन में उपस्थित माननीय सदस्यों से भी निवेदन करना चाहता हूं कि///वे इस महत्वपूर्ण विषय पर गंभीरतापूर्वक विचार करें और कुछ ऐसे ठोस सुझाव सदन के पटल पर रखें जिनको कार्यान्वित करने के **X** बाद भविष्य में किसी भी राज्य में कोई हिंसक घटना न हो।

महोदय, कुछ समय पहले असम राज्य में आंदोलन चला, जिसने धीरे-धीरे/हिंसक रूप धारण किया। राज्य को उस आंदोलन से काफी नुकसान उठाना पड़ा। आज पंजाब में स्थिति बिगड़ती जा रही है। आंदोलन के विषय कुछ//भी हों, हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हिंसा से सदा ही देश कमजोर हुआ है, जनता की परेशानियां बढ़ी हैं और शासन के लिए///समस्याएं पैदा हुई हैं। इससे न केवल शांति-व्यवस्था में गड़बड़ी पैदा होती है, बल्कि राज्य और देश की अर्थ-व्यवस्था को भी धक्का **X** लगता है। पड़ोसी देशों के साथ भारत के संबंधों की चर्चा इस सदन में कल की गई थी। भारत के विदेशों के साथ विशेषकर/अपने पड़ोसी देशों के साथ अच्छे संबंध रहे हैं। हमारी सरकार हमेशा ही पड़ोसी देशों

के साथ संबंध सुधारने का प्रयत्न करती रही है। हम//सब सदस्यों का कर्त्तव्य है कि इन महत्वपूर्ण समस्याओं को सुलझाने में हमें सरकार के साथ सहयोग करना चाहिए। कुछ अवसरों पर हमें सरकार ///की ऐसी नीतियों का समर्थन करना चाहिए। जिनसे समूचे राष्ट्र का हित हो रहा हो क्योंकि राष्ट्र के हित में ही सबका **X** हित है।

गति अभ्यास–14
(100 शब्द प्रति मिनट)

अध्यक्ष महोदय, स्वतंत्रता की लड़ाई के बाद हमारे देश में प्रजातंत्र की स्थापना की गई थी। जैसा कि सभी सदस्य जानते हैं कि उस/समय हमारे देश के नेताओं ने यह सोचा कि हमारे देश में जनता का शासन होगा और उसी के साथ-साथ देश में समाजवाद//की स्थापना भी की जाएगी। आज जब हम अपने उस बीते हुए समय की ओर देखते हैं तो लगता है कि हमारे उन नेताओं ने///जो भी सोचा था, उसे हम साकार नहीं कर पाए हैं। पिछले 50 वर्षों में इस देश में अनेक राष्ट्रीय पार्टियां शासन कर चुकी हैं। **X** जनता बार-बार शासन में परिवर्तन कर देश में एक लोकप्रिय सरकार बनाने की कोशिश करती है किन्तु जो भी शासन में परिवर्तन हुए/हैं या इस देश की नीतियों में परिवर्तन किए जा रहे हैं उसका देश की आम जनता को कोई लाभ नहीं मिल पाया है।//इसके पीछे दोष किसका है, इस संबंध में मैं इस अवसर पर स्पष्ट रूप से तो नहीं कहना चाहता किन्तु इतना तो सभी///समझ सकते हैं कि जब जनता की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो पाती है, उसे कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, जब भी देश में **X** अव्यवस्था फैलती है या कोई गलत नीति बनती है तो दोष सरकार को ही जाता है। आज देश में जिस तरह की व्यवस्था है, उसे/वर्तमान समय में अच्छा नहीं माना जा सकता है और इसी अव्यवस्था के कारण जनता के मन में शासन के प्रति अविश्वास की भावना पनप//रही है।

महोदय, मैं सदस्यों से निवेदन करना चाहता हूं कि वे इस सदन में देश की बिगड़ती हुई स्थिति पर गंभीरतापूर्वक विचार करें///और कुछ ऐसे ठोस सुझाव सदस्यों की ओर से आएं ताकि उन पर अमल करके ठोस नतीजे प्राप्त किए जा सकें। हमें आम जनता **X** की भलाई के लिए और उसकी कठिनाई को दूर करने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए। यदि जनता सुखी नहीं है, उसे समय पर/आवश्यक चीजें प्राप्त नहीं हो पा रही हैं और उसका सामान्य जीवन भी अस्त–व्यस्त है तो हम लोगों के लिए यह एक विशेष//चिंता का विषय होना चाहिए। मैं समझता हूं कि देश में बढ़ रहे भ्रष्टाचार को सबसे पहले समाप्त किया जाना चाहिए। जब तक देश///से भ्रष्टाचार को समाप्त नहीं किया जाता तब तक न तो देश में समाजवाद की स्थापना की जा सकती है और न ही शासन **X** व्यवस्था में सुधार हो सकता है। भ्रष्टाचार ने देश की शासन-व्यवस्था को अस्त-व्यस्त कर दिया है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि/जब-जब भी देश में भ्रष्टाचार बढ़ा है, देश के विकास में बाधा पहुंची है। यह ठीक

है कि एक ही दिन में भ्रष्टाचार को दूर//करना संभव नहीं है किन्तु सरकार को उसको दूर करने के लिए कोई ठोस प्रयत्न तो करना ही चाहिए। मैं अध्यक्ष महोदय का इस///बात के लिए भी हार्दिक आभार प्रकट करना चाहता हूं कि उन्होंने मुझे इस महत्वपूर्ण विषय पर विचार प्रकट करने का अवसर दिया है। **X**

सैद्धांतिक अभ्यासों की कुंजी

आम तौर पर आशुलिपि पुस्तकों के साथ पुस्तक के सभी अभ्यासों की कुंजी (Key) दी जाती है जिस कारण प्रशिक्षार्थी बार-बार उसका सहारा लेते हैं और शब्दों के रेखाक्षरों को स्वयं लिखने के लिए अधिक श्रम नहीं करते। अतः इस पुस्तक के साथ केवल सैद्धांतिक पाठों के लिए रचित अभ्यासों (अभ्यास 22.2 तक) की ही कुंजी दी गई है। प्रशिक्षार्थियों की सुविधा के लिए व्यावहारिक आशुलिपि अभ्यास के अंतर्गत कुछ अभ्यास हिंदी देवनागरी और हिंदी आशुलिपि रेखाक्षरों में साथ-साथ दिए गए हैं। इन पाठों के अध्ययन/अभ्यासों के बाद प्रशिक्षार्थी को व्यावहारिक आशुलेखन में कोई कठिनाई नहीं होगी।

अभ्यास 1.1

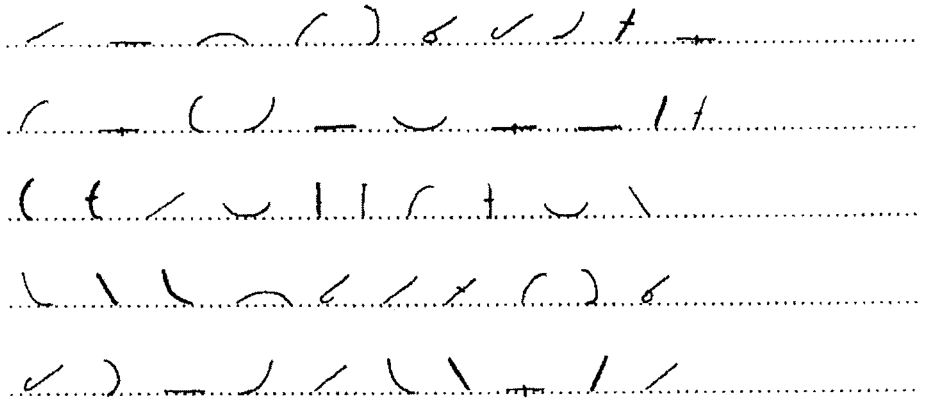

अभ्यास 1.2

(1)	क	च	प	ल	म	न	र	फ	त	ट	न	स	भ
(2)	क	ज	ब	भ	ङ	ज़	ड	ह	र	द	ढ़	ह	म
(3)	ख	छ	ठ	न	ढ़	ल	श	झ	क	भ	श	फ	म

(4)	य	ट	स	ह	र	ङ	म	ह	व	र	ज़	ग	न
(5)	ठ	थ	प	ढ	श	ह	व	स	ब	ग	झ	घ	ङ

अभ्यास 2.1

1. 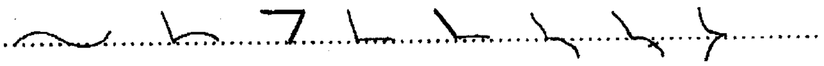

2.

3. 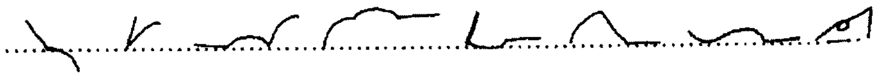

4. 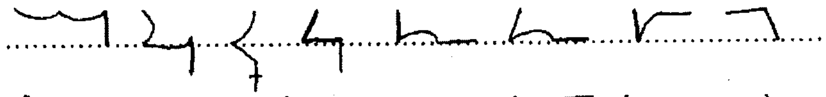

5.

अभ्यास 2.2

(1)	नम	जग	कब	पर	फल	मल	कम	नल	हक	कल
(2)	लच	गल	नच	तल	जल	शब	गम	नथ	घम	छम
(3)	कम	कर	यर	हर	वर	रह	रहट	नह	मह	गह
(4)	रहट	पनघट	चम	जमघट	चमचम	कमल	मखमल			
(5)	कटक	गहम	लचक	जनक	लपक	फलक	खटपट	रपट		
(6)	ज़हर	कहर	नहर	महर	जनक	मल	नब	कफ	चक	

अभ्यास 3.1

1.
2.
3.

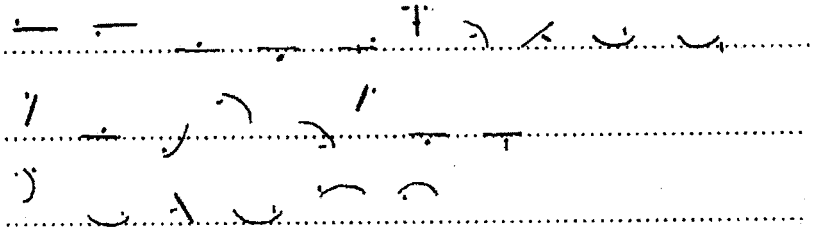

अभ्यास 3.2

1. आज आप आम आह आना हा तो लो टो पौ सो ओम नो

2. ओस आशा बू लू उड़ा भू अभी उषा

अभ्यास 4.1

1.
2.
3.
4.
5.

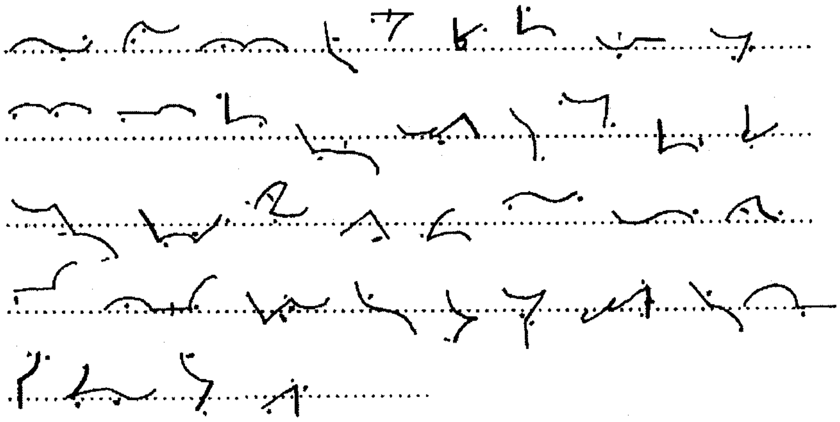

अभ्यास 4.2

1. नीमा खाल कला गीला पैदा रुचि राधा रोटी रीता अहम
2. आहार हीन गोटी रीता काटी कीट गाड़ी गोला किला गला
3. हरि राही हीरा यारी रवि रिया कहानी ज़माना शुभ अशुभ
4. भालू भला भुलाना शिला भूमि कहार डाली

अभ्यास 5.1

1.
2.
3.
4.
5.
6.

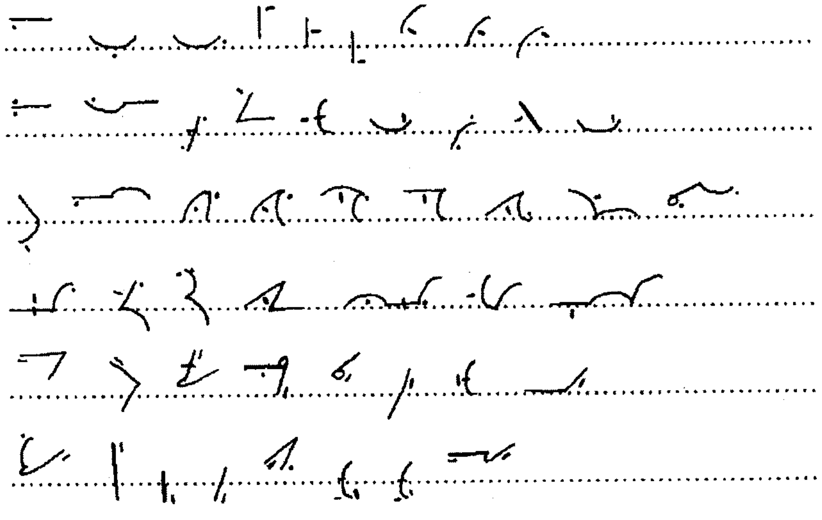

अभ्यास 5.2

1. पा पे पी ला ले ली आर ओर उर हू ऊह दो लो गे दे
2. आरी आगे नाक ओट ऊन इला रोम सोम नोक पोट अकेला
3. आसार अटल कोमल बोतल कमल नाज भेजी छाँछ काँच पाँच उठीं
4. गांवों आठवीं गेहूं करें पोंच नौमी (नवमी) मा भा माना

अभ्यास 6.1

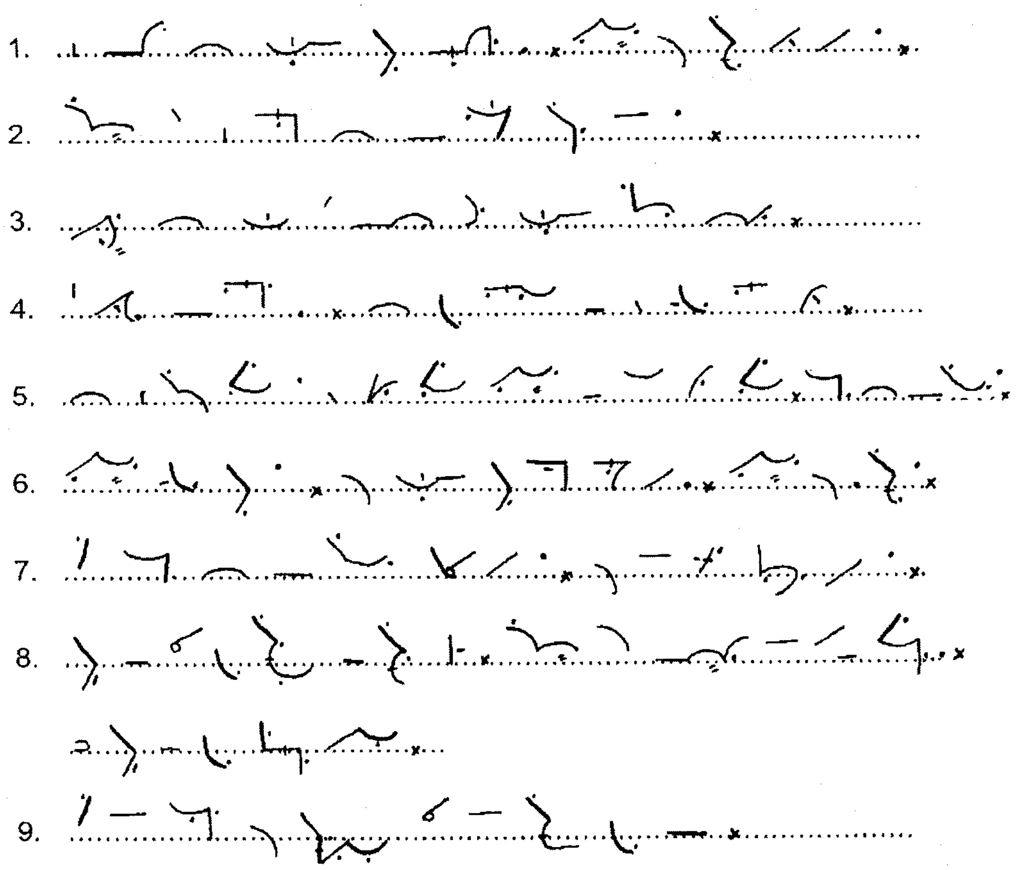

10. 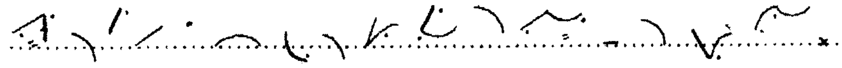

अभ्यास 6.2

मैं रोटी अधिक खाता हूं। राम रोटी कम खाता है। राधा का इरादा है कि मीना को भी बुला लो। उस आदमी का कहना है कि चोर का पता तुम को मालूम है। जहां भी तुम बैठोगे उधर भीड़ दिखेगी। तुम उधर चले जाना। राम को मालूम है कि आज जो हुआ है उस में तुम भी शामिल हो। रमा आएगी तभी तुम जाना। राम अभी पढ़ रहा होगा। उधर एक तमाशा हो रहा है। जितने आदमी उधर बैठे हैं बुला लो। गीता ने आज ईमानदारी का एक अच्छा उदाहरण रखा तो एक आदमी रो पड़ा। दूसरों पर भी असर पड़ा। जितने बच्चे उधर नदी के दूसरी ओर बैठे है उसी पार तमाशा देखेंगे। उधर जहां तहां आग लगी हुई है। तुम उधर न जाना। रमा ने कहा कि गीता ने आज एक अच्छा काम किया। बच्चे उधर बैठे हों तो बुला लो। उधर एक आदमी आ रहा है।

अभ्यास 7.1

1. 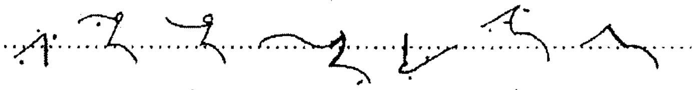

2. 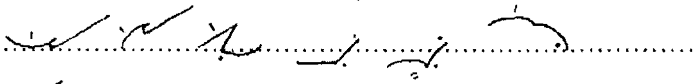

3. 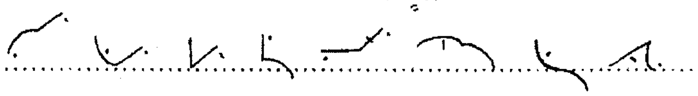

4. 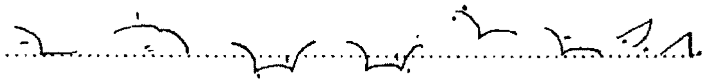

5. 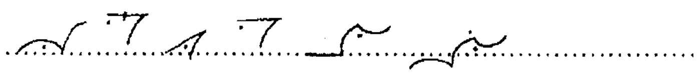

6. 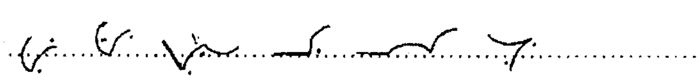

7. 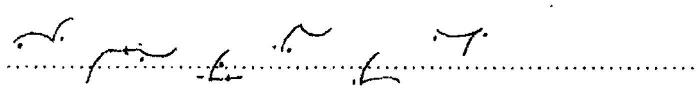

8. 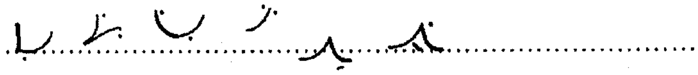

9.

अभ्यास 7.2

1. लिख मेला गलाना मिलाना टीला डली माला जलवा
2. इल्म उल्लेख नीलम नाला अलख अरहर दीवार भालू दशा भाषा
3. मंशा राशि मोर कहानी महीना रंगहीन कहार लोहा
4. लाहौर शाही आहार आराम रोम रूम अर्क रूमानी अश्व
5. शुभ विष शिला शिविर शिवालय भाषा

अभ्यास 7.3

1. 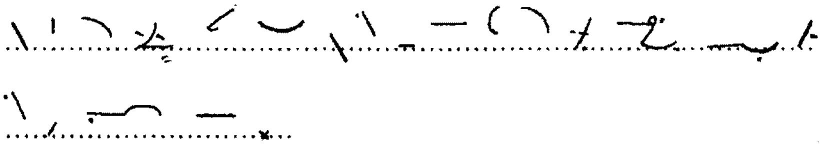

2. 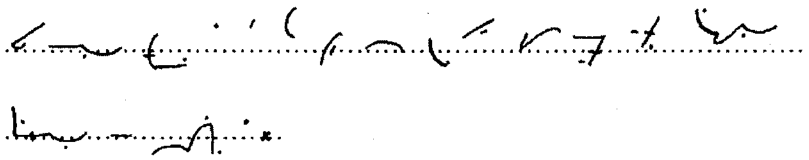

3. 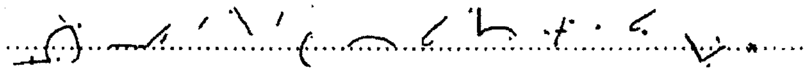

4. 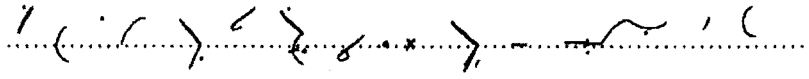

5. 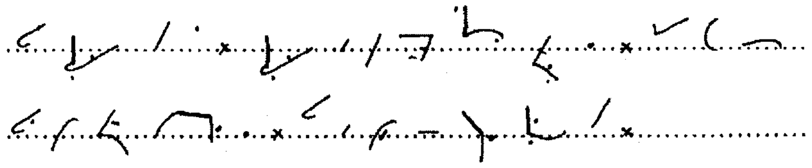

6. 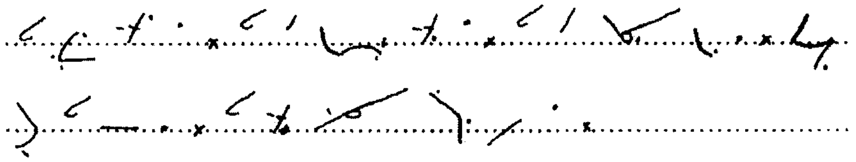

7. 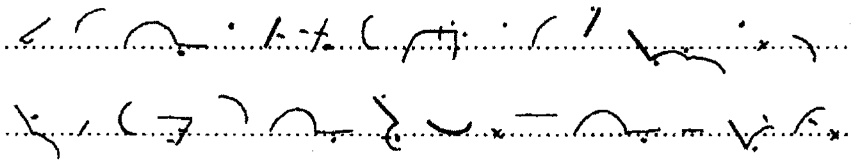

8. 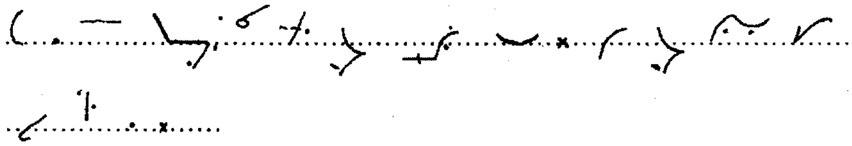

9. 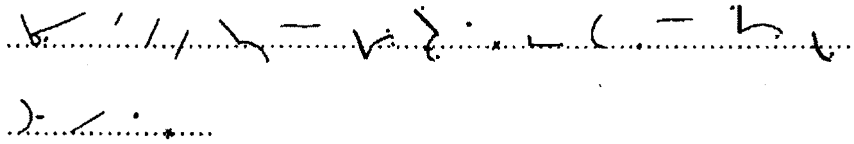

10. 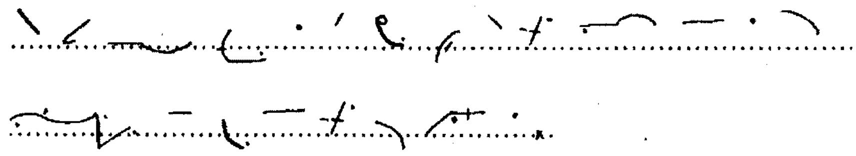

अभ्यास 8.1

1. 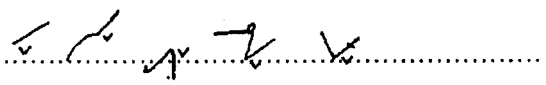

2. 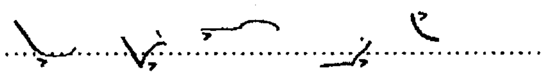

3. 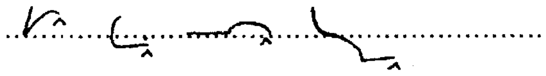

4. 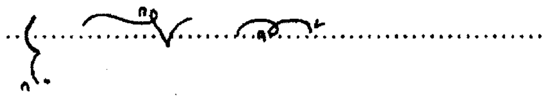

5.

6. 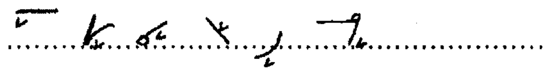

7. 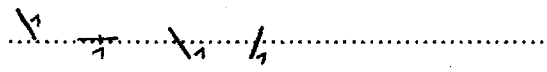

अभ्यास 8.2

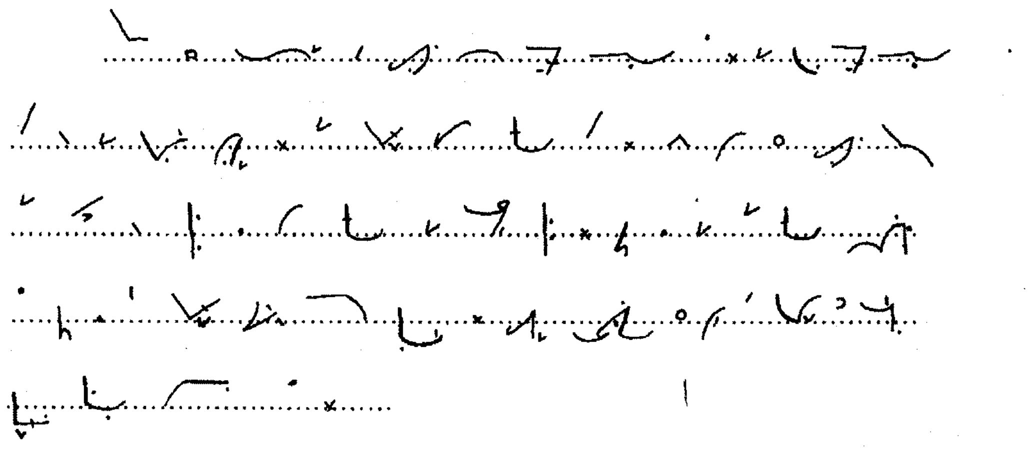

अभ्यास 9.1

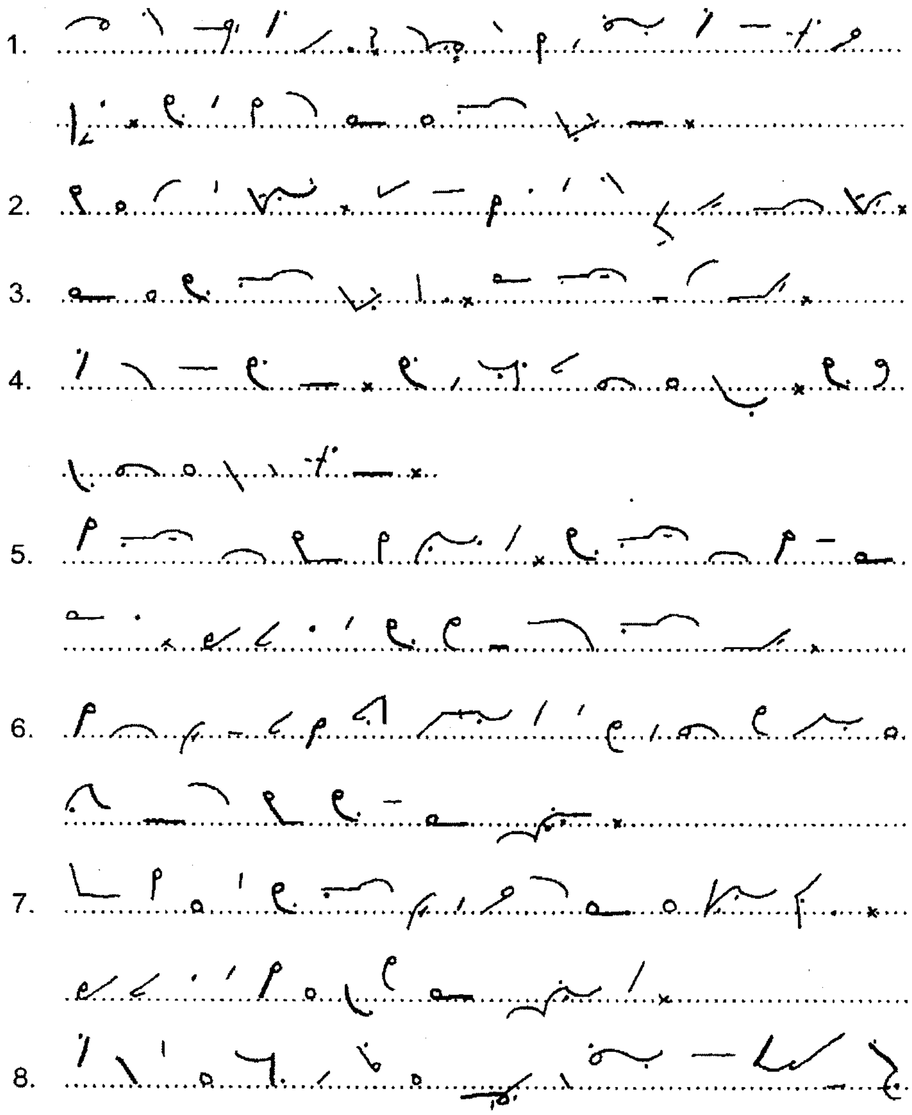

9. 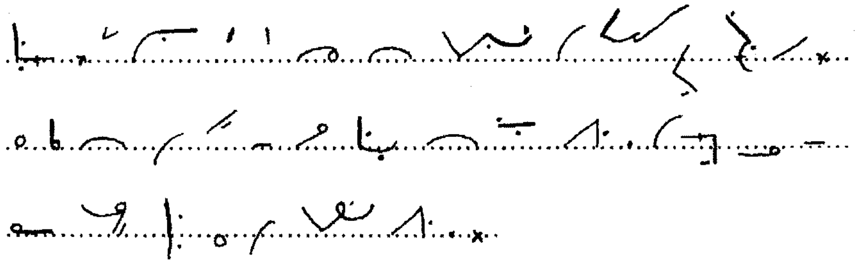

अभ्यास 9.2

1. इस देश में जितने भी नेता हुए हैं सभी ने देश को आज़ादी दिलाने के लिए सब कुछ छोड़ा लेकिन आज स्पष्ट रूप से लोग उनके कामों को भुलाने में लगे हुए हैं।
2. सार्वजनिक क्षेत्र में लोगों का सहयोग आवश्यक है। बिना लोगों की सहायता और परामर्श के काम पूरे नहीं हो सकते।
3. आज एक सभा में नेता जी के परामर्श से कुछ अच्छे फैसले हुए। उन फैसलों से अब सभी को लाभ होगा।
4. जिस देश का समाज जितना संगठित होगा उस देश में उतनी ही अच्छी उन्नति होगी।
5. आज की सभा में अनेक सवाल उठे लेकिन किसी ने भी स्पष्ट सूचना नहीं दी।
6. समिति की बैठक में सभी लोगों की सहायता, सहयोग और परामर्श से अच्छी बहस हुई और सभी सदस्यों के सुझावों को लोगों ने सुना। अब उन सुझावों के लागू होने से सभी को लाभ होने की आशा है।

अभ्यास 10.1

1.
2.

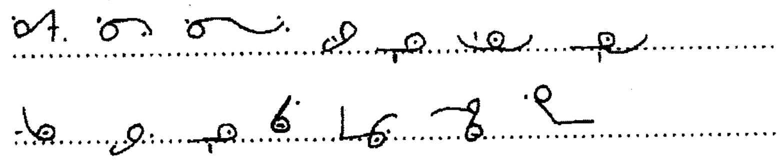

अभ्यास 10.2

स्वाभिमानी स्वार्थी जासूसों अवशेषों राक्षसों तक्षशिला स्वरूप स्वर्ग स्वामिनी स्वेच्छा स्वदेश विशेष स्वाद स्वांग स्वच्छ स्वल्प स्वाधीन स्वर स्वप्न

अभ्यास 10.3

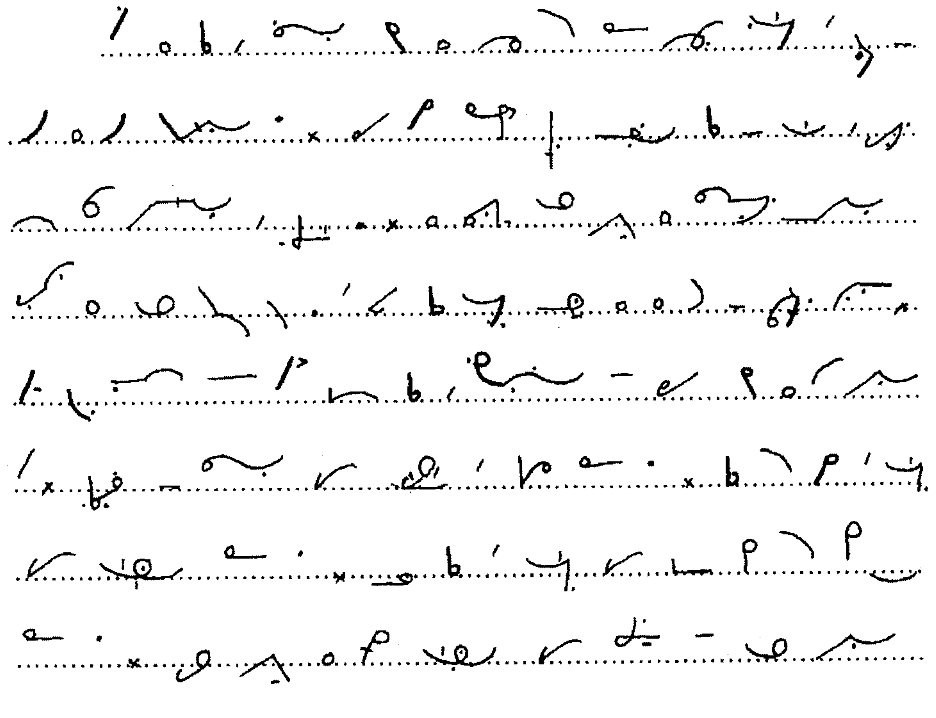

अभ्यास 11.1

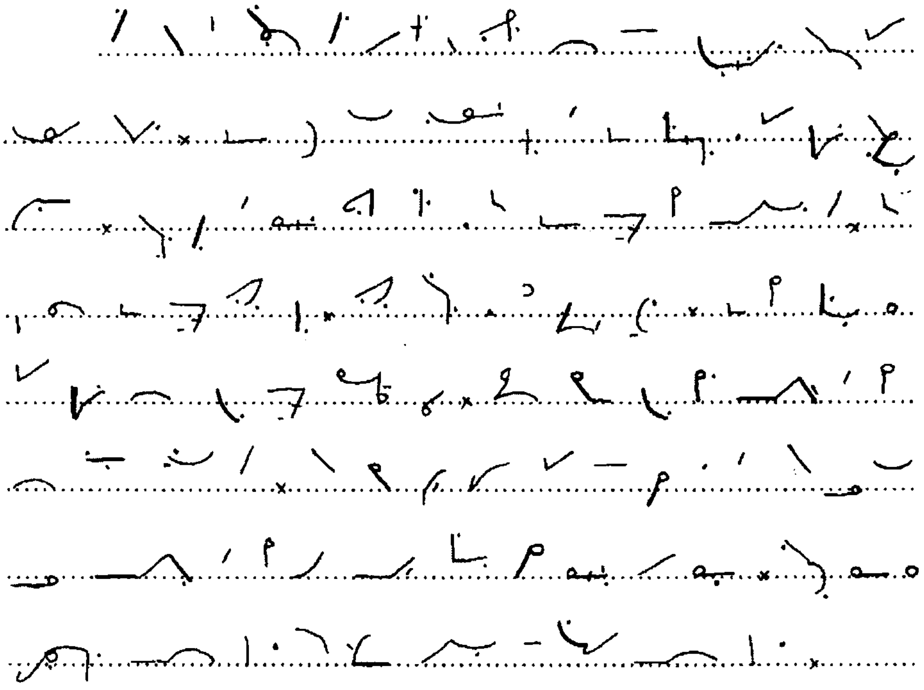

अभ्यास 11.2

आज इस देश के सामने सब से अहम मसला समाज की समस्याओं को हटाना है। देश की पहली अहम समस्या अनाज की पैदावार को बढ़ाना है ताकि लोगों का जीवन सुखमय हो सके। मुझको आप लोगों के सामने एक चीज स्पष्ट रूप से बतानी है कि देश की उन्नति के लिए आप सब का पूरा सहयोग होना चाहिए। जिसने भी समाज के कामों में सहयोग नहीं किया उसको कड़ी सजा देनी होगी। सार्वजनिक जीवन में समाज के लोग अच्छे काम करें, सभी के लिए यह आवश्यक है। अच्छा होता यदि आप भी सांस्कृतिक कामों में सहायता देते और एक उदाहरण रखते। आप सब लोग समिति की बैठक में पहुंचें। अनेक सदस्यों ने बहस में भाग नहीं लिया।

अभ्यास 12.1

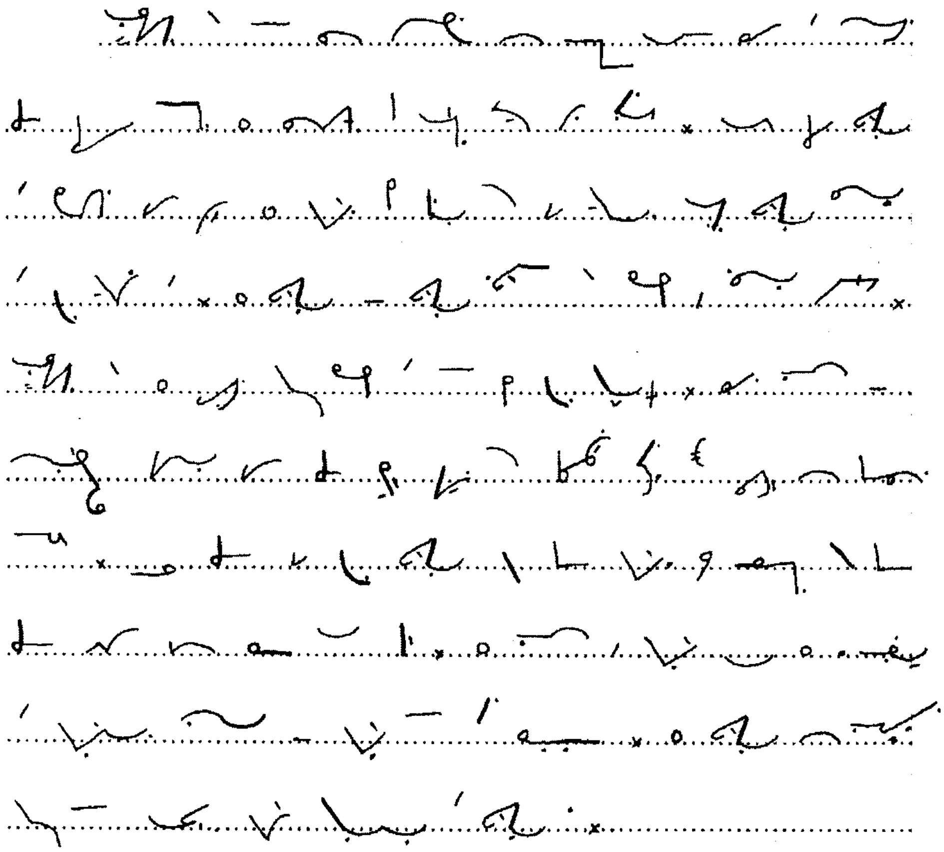

अभ्यास 12.2

राम आज आ रहा है। उसके साथ एक महिला भी आएगी। बाहर कोहरा फैला है। रोशनी भी कम है इसीलिए इस समय बाहर जाना ठीक नहीं है। उधर अनेक बच्चे खेल रहे हैं। मैं भी उधर जा रहा हूं। तुम भी आ सकते हो। बाहर लड़की अकेली बैठी थी। उसके साथ अनेक लड़के भी थे। राम भी उनके साथ खड़ा था। बच्चे हंस रहे थे लेकिन लड़की रो रही थी। एक लड़का चुप बैठा था। हो सकता है

उन लड़कों ने उस लड़के से कुछ कहा हो। चलो पता करें। सभी बच्चों को शिक्षा अवश्य दी जानी चाहिए। इस हफ्ते राम नहीं जा रहा है। कहीं भी रहो आराम से रहो।

अभ्यास 13.1

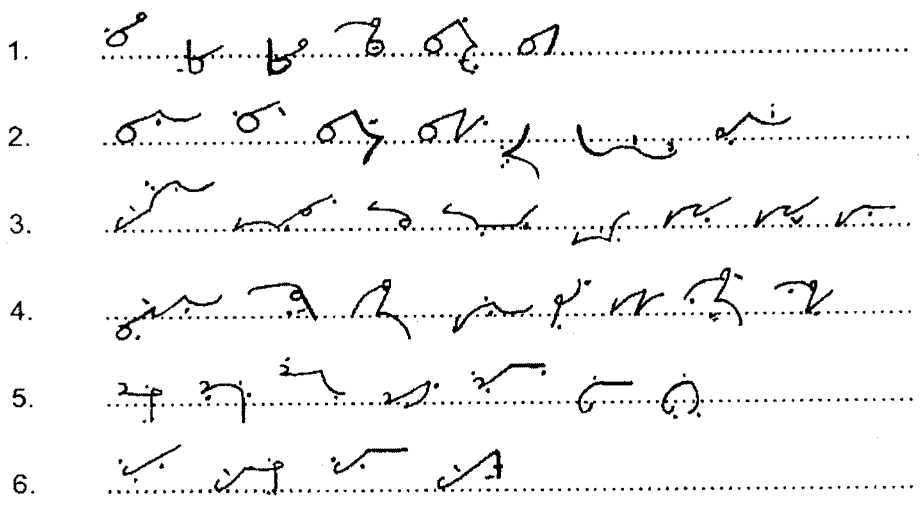

अभ्यास 13.2

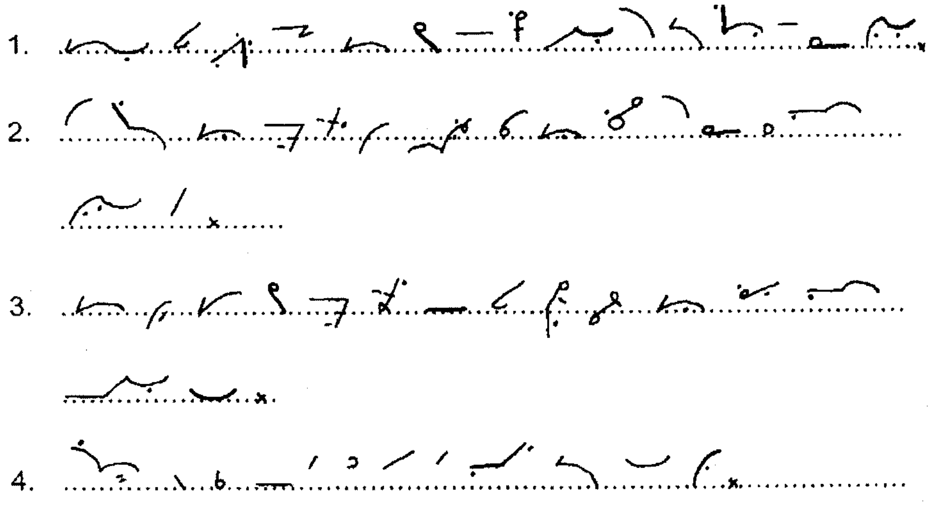

5. 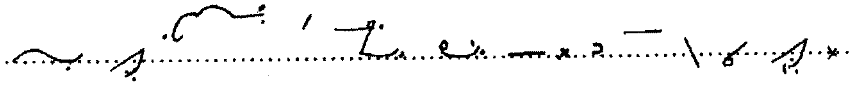

6. 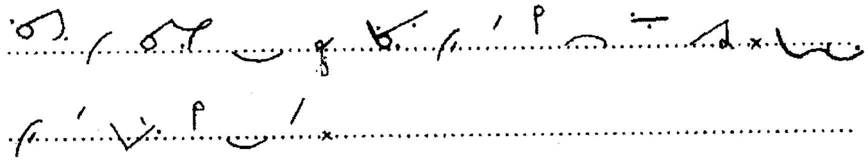

7. 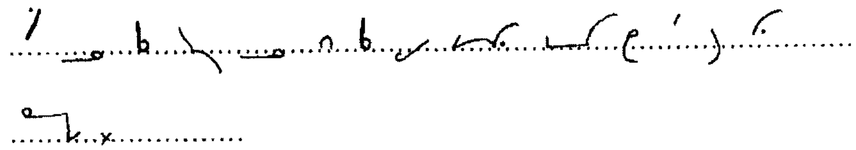

8. 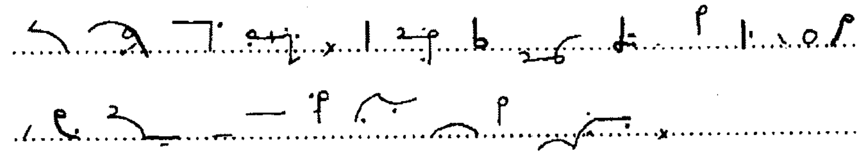

9. 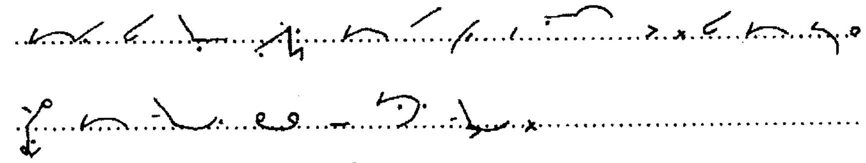

10. 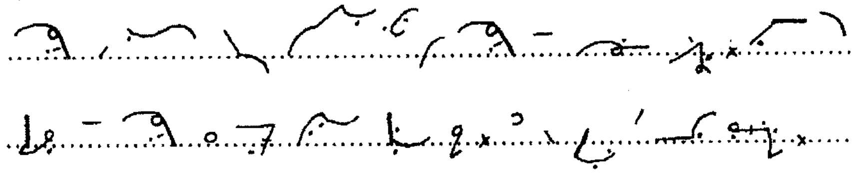

अभ्यास 14.1

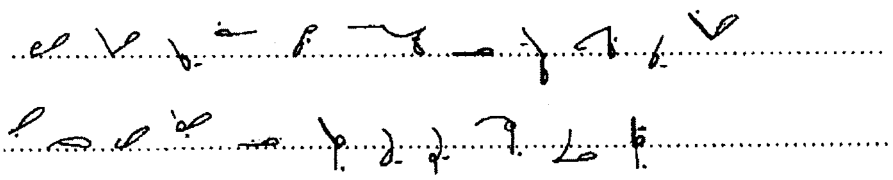

अभ्यास 14.2

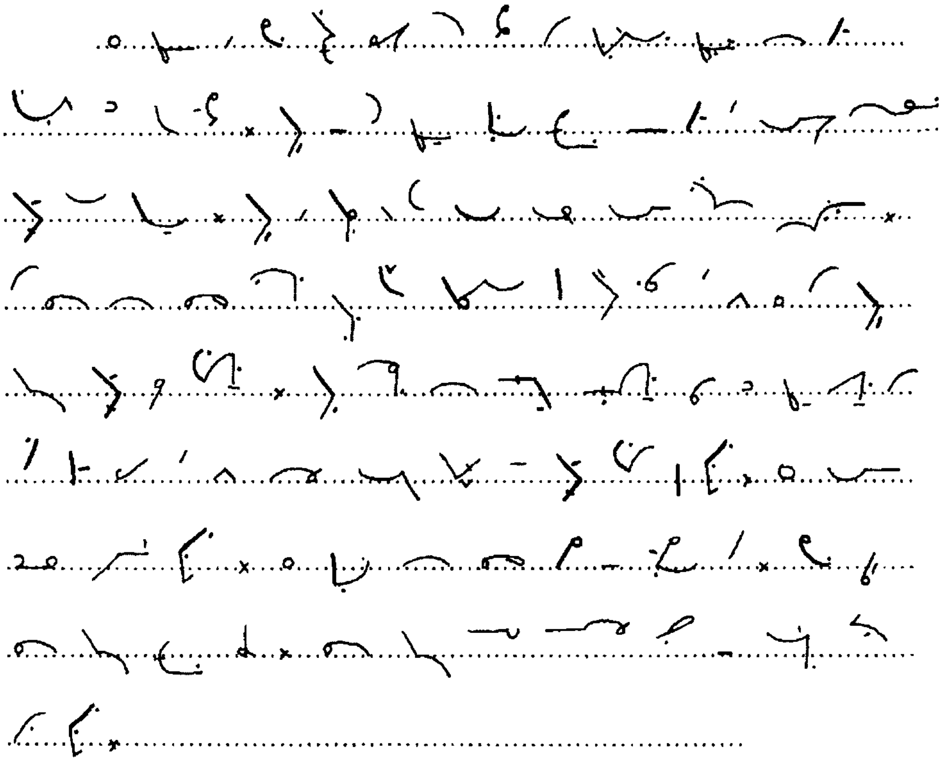

अभ्यास 14.3

देश में समस्त लोगों को एक दूसरे के साथ शांति और सहयोग से रहना चाहिए। देश की रक्षा के लिए सचेष्ट रहना चाहिए। हर समाज में अच्छे लोगों के साथ दुष्ट लोग भी होते हैं। सदा अच्छे लोगों को ही सहयोग और सहायता देने की पूरी कोशिश होनी चाहिए। रेलवे मिनिस्टर ने नए वर्ष में सदस्यों को सलाह दी कि देश के विकास के लिए यथेष्ट कोशिश में लगे रहना चाहिए और कष्ट के समय सदा साहस से काम लेना चाहिए। दुश्मनों को शिकस्त देने के लिए आपस में एकता रहनी चाहिए। जो लोग एकता से रहते हैं उनके जीवन में परेशानी नहीं होती और वे खुश रहते हैं।

अभ्यास 15.1

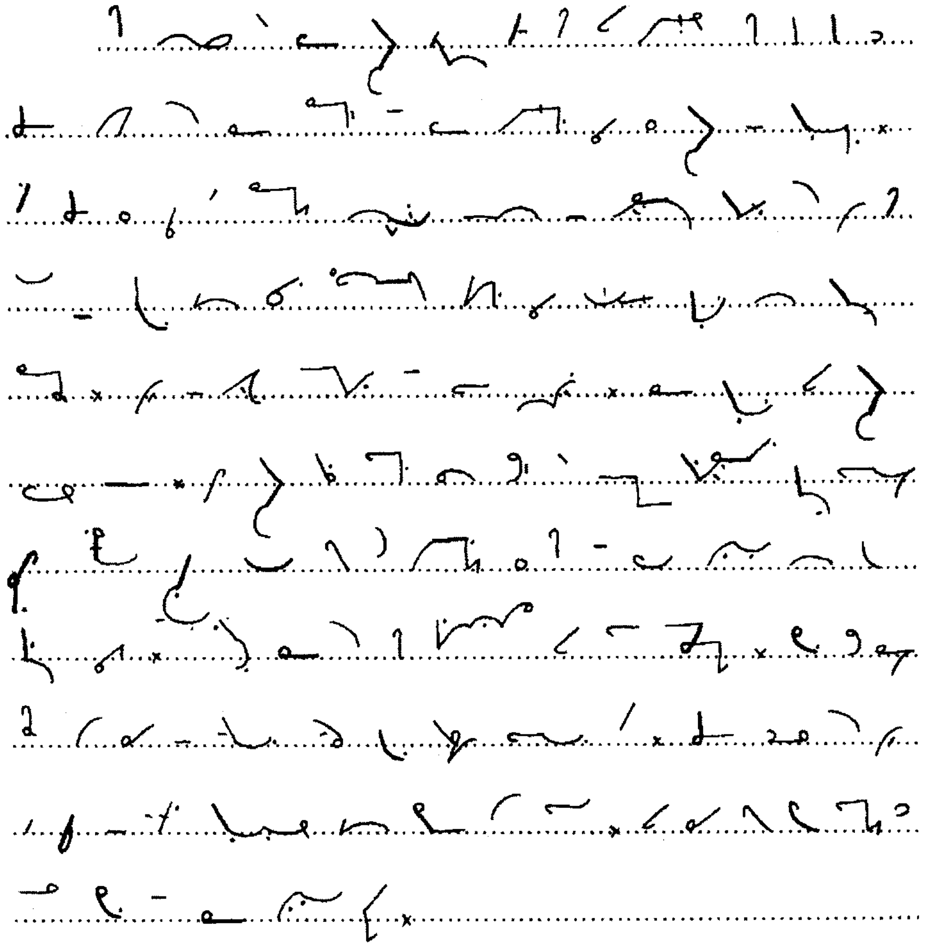

अभ्यास 15.2

अगर कल आप और अशोक उधर आएंगे तो अधिक लाभ में रहेंगे। अनाज अधिक खाने से बेहतर होगा कि आप फल ही अधिक खाएं। इससे आप स्वस्थ रहेंगे और आपको अपने आप ही सुधार नजर आएगा। कई बार परीक्षा में असफल रहने पर भी उसने हार नहीं मानी और परीक्षा देना नहीं छोड़ा। वह परिश्रम करता रहा और उसे सफलता मिल ही गई। आपके कुशल कारीगर ने एक अच्छा खिलौना बनाया पर बच्चे ने उसे तोड़ दिया। कारीगर का परिश्रम निरर्थक चला गया। इस कार्य का श्रीगणेश राम द्वारा किया गया और अब इसे पूरा करने का काम आपका है। आपको उसका शुक्रिया अदा करना चाहिए। मूर्ख आदमी कभी भी अच्छा कार्य नहीं कर सकते। अनुकूल स्थिति में भी वह सही मार्ग पर नहीं जा पाता है। वहां निर्वाचन पूरा हो गया है। निर्वाचन में अनेक नेताओं ने भाग लिया। इस निर्वाचन का निर्णय जल्द ही आ जाएगा।

अभ्यास 16.1

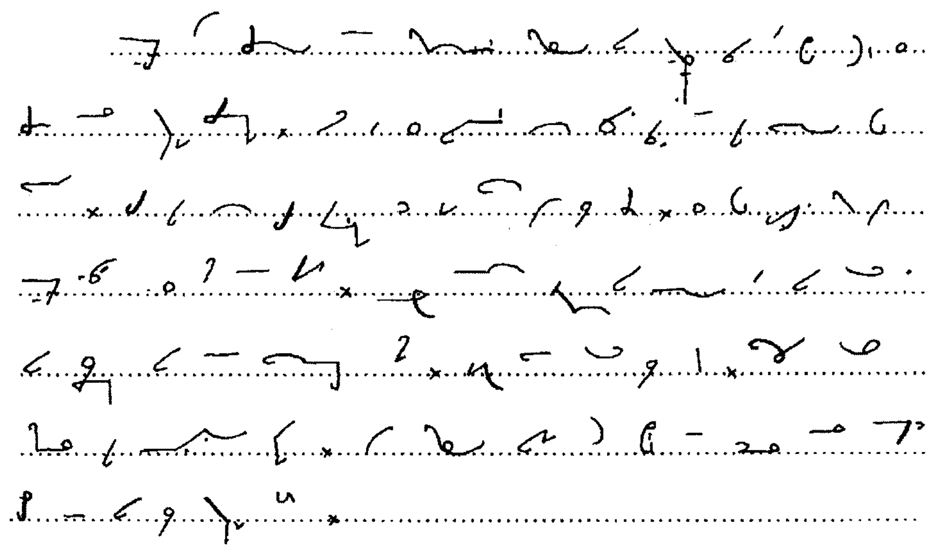

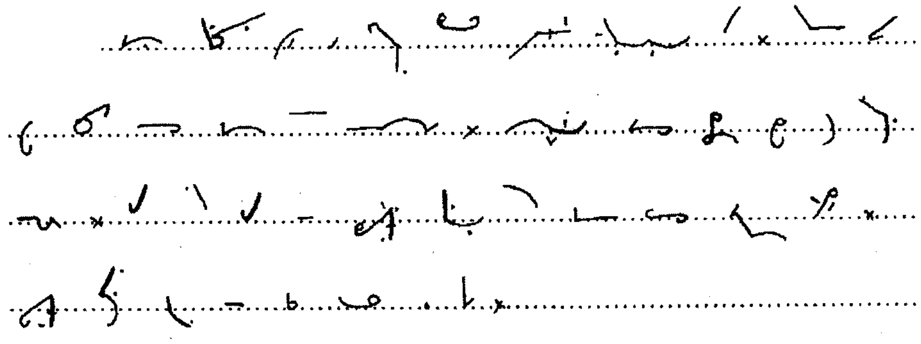

अभ्यास 16.2

इस सभा का उद्‌घाटन आदरणीय रेलवे मिनिस्टर द्वारा किया जा रहा है। रेल विभाग आज अच्छे दौर से गुजर रहा है। लोगों का दृष्टिकोण रेल विभाग के पक्ष में होता जा रहा है। जनता की सुविधा और कल्याण के लिए यह आवश्यक है कि लोगों का दृष्टिकोण ठीक हो और केंद्रीय कार्यालय ठीक तरह से काम करें। सरकार का ध्यान हमेशा जनता की सहायता करने पर होना चाहिए। संगठन को ठीक करने के लिए नौजवानों का सहयोग लिया जाए तो अच्छा होगा। शिक्षण संस्थाओं को अपना दायित्व समझना चाहिए।

अभ्यास 17.1

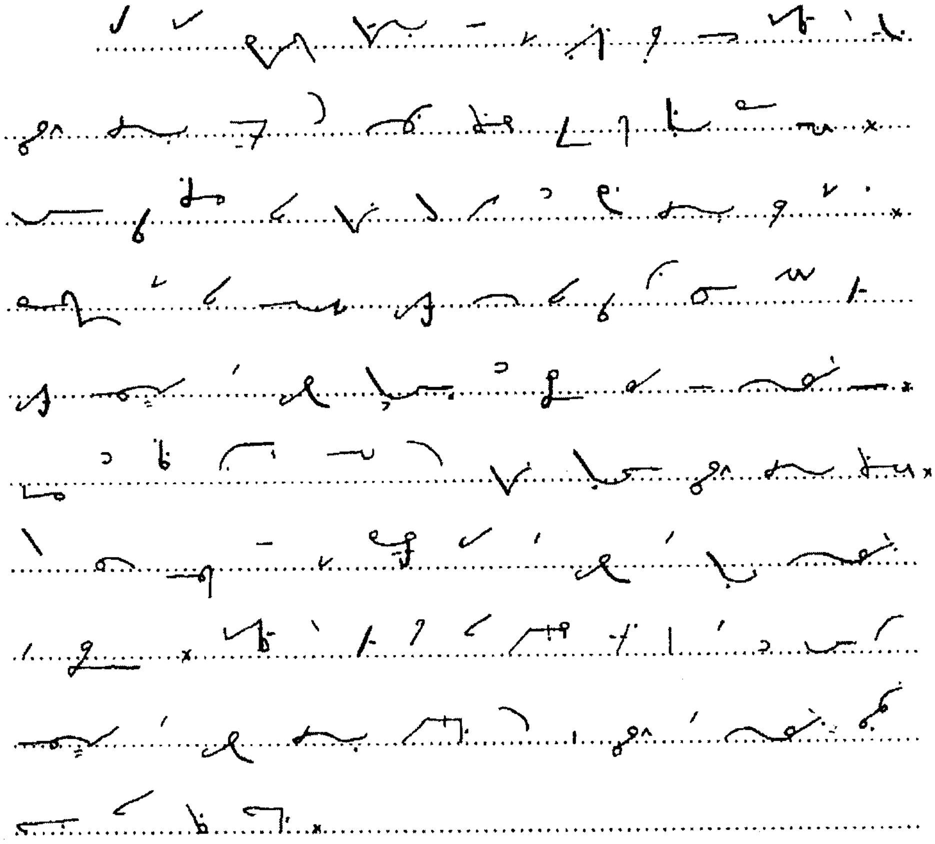

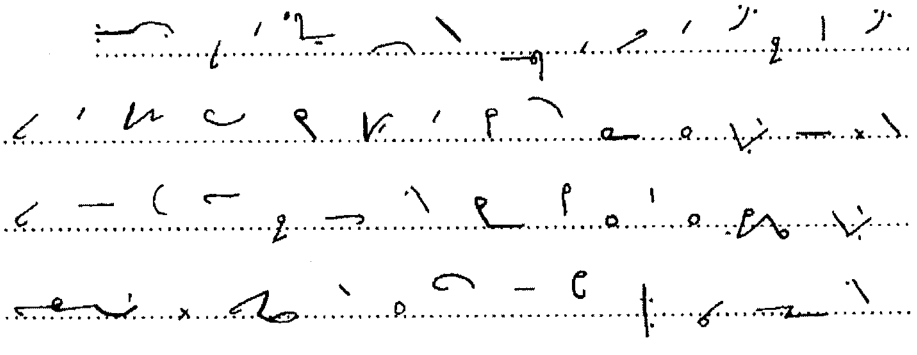

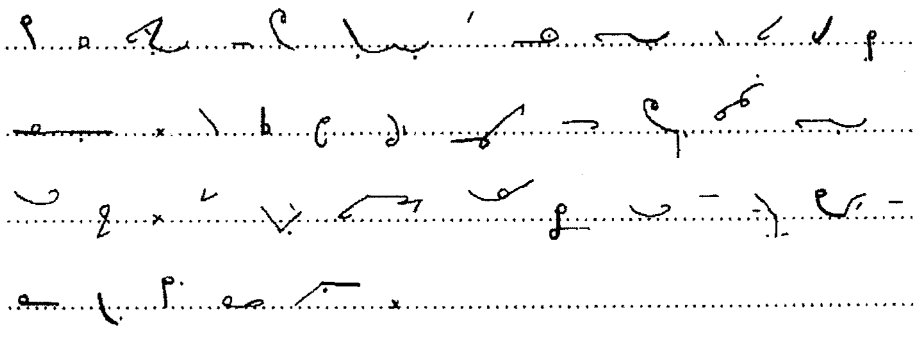

अभ्यास 17.2

देश में सक्रिय अपराधों का वातावरण अपनी चरम सीमा में पहुंच गया है। इसे ठीक करने के लिए हमें सब्र से काम लेना है। सभी दलों के सहयोग और स्वीकृति के बिना इस पर काबू पाना नामुमकिन है। संसार के सभी देशों में तस्करों की संख्या बढ़ती जा रही है। ऐसे लोगों के दिल में कोई सहानुभूति नहीं होती। वह तो कंस की भांति निरंकुश और कठोर होते हैं। उनको निष्क्रिय करने के लिए यदि सरकार, सार्वजनिक संस्थाएं और समाज के सभी लोग आपस में संगठित हों तो यह समस्या खत्म हो सकती है। आज जनता को पुलिस पर बिल्कुल यकीन नहीं है। उन्हें विश्वास दिलाना होगा कि ये सरकारी संस्थाएं उनकी सहायता के लिए हैं न कि उन्हें परेशान करने के लिए। बेईमान लोगों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जानी आवश्यक है ताकि सभी को यह मालूम हो जाए कि बेईमानी अधिक दिन तक नहीं चल सकती ऐसा बैठक की कार्यवाही में उल्लेख है। मुझे आशा है कि सरकार इस बारे में शीघ्र विचार करेगी और कुछ ऐसे नियम बनाएगी ताकि भ्रष्ट आदमी के लिए समाज में रहना नामुमकिन हो जाए और लोग अपराध की ओर जाना छोड़ दें। मुझे आशा है कि देश में फैल रही इस बीमारी को जड़ से मिटाने के लिए आप सबका पूरा सहयोग और समर्थन मिलेगा।

अभ्यास 18.1

1. 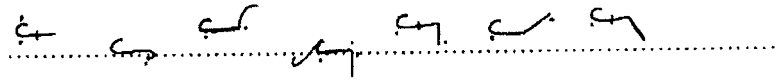

2.

3. 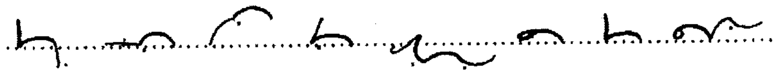

4.

5. 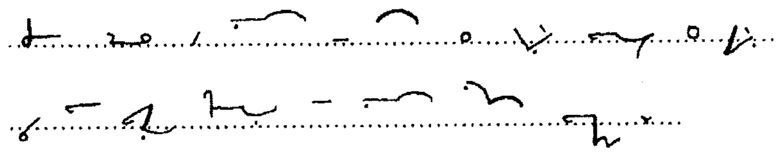

6. 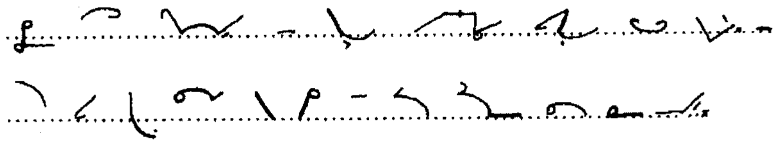

7. 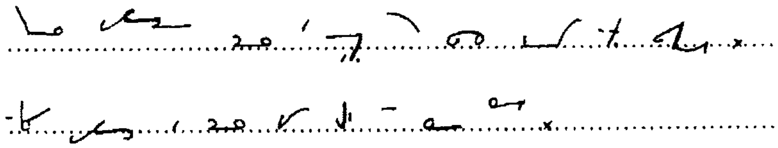

8. 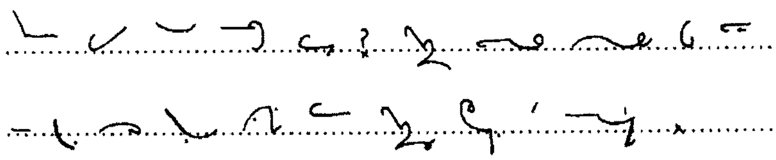

9. 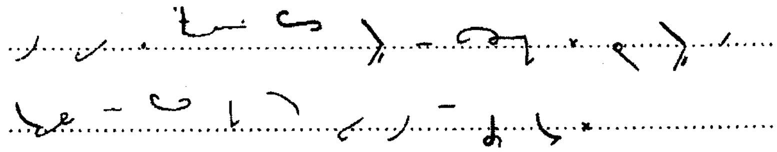

10. 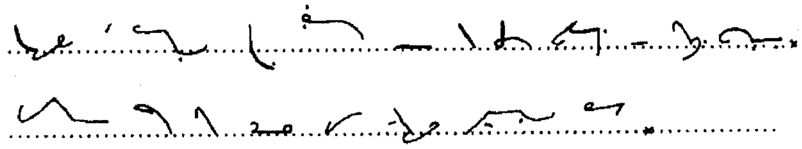

अभ्यास 18.2

क्या उसको इस पुस्तक के सभी पाठ याद हैं? यदि नहीं तो उसे इस विषय में सचेष्ट रहना आवश्यक है। शिक्षा का उद्देश्य बच्चों में वास्तविक ज्ञान उत्पन्न कराना है न कि केवल ख्वाब दिखाना। आज की शिक्षा वास्तविकता से परे है। इस पुस्तक का रहस्य किसी को मालूम नहीं है क्योंकि उसका रहस्य जानने के लिए कठिन परिश्रम की आवश्यकता है। आज परिश्रम से लोग डरते हैं। आपका व्यवहार सभी के साथ समान होना आवश्यक है। व्यवहार कुशल आदमी सभी को खुश कर सकते हैं। सभी लोगों को व्यवहार कुशल बनना होगा। हर दंपती को अपने बच्चों के व्यवहार को ठीक बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए। आज फिल्मों से बच्चों का व्यवहार बिगड़ रहा है। मैंने अपना संपत्ति कर जमा नहीं किया है लेकिन आपने तो अपनी संपत्ति बेच दी है। सभी लोगों के लिए व्यापार करना संभव नहीं है क्योंकि हर आदमी का व्यवसाय उसके आदर्शों पर ही चलता है। आज के व्यस्त जीवन में अपने सभी दायित्व संभालना एक कठिन चुनौती है।

अभ्यास 19.1

1. 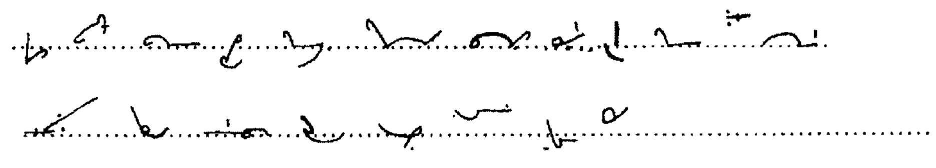

2. 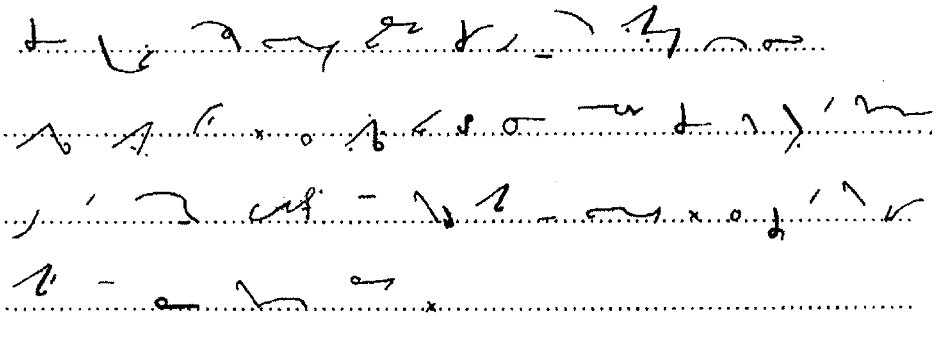

3.

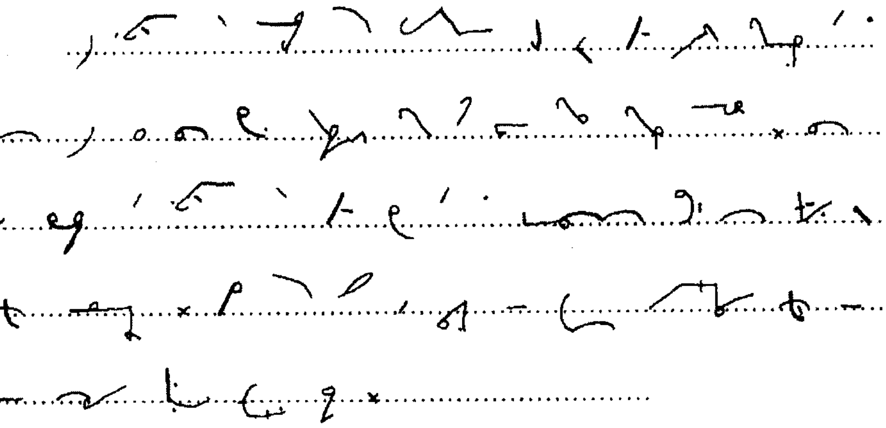

4.

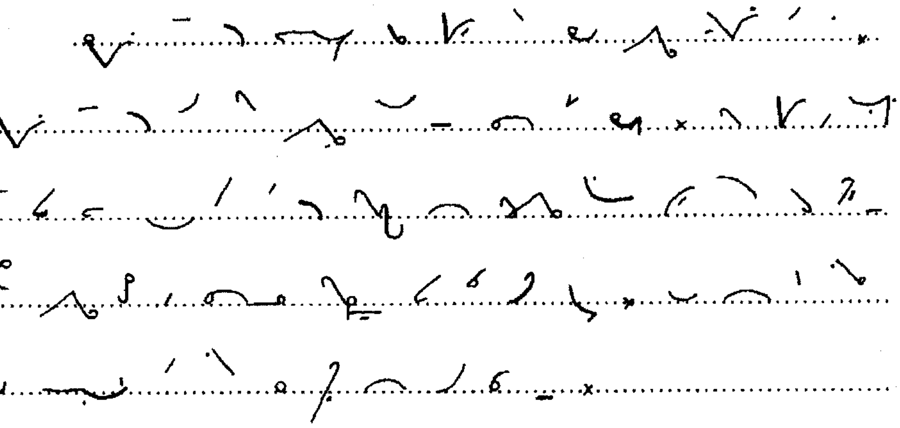

अभ्यास 19.2

आज यह निहायत जरूरी है कि देश में शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए अधिक प्रयत्न किया जाए ताकि शिक्षित लोगों की संख्या में वृद्धि हो सके। शिक्षा से समाज की उन्नति होती है और सामाजिक उन्नति से ही विकास संभव है। लोगों के जीवन स्तर को ऊंचा उठाने के लिए गरीबी के विरुद्ध संघर्ष में सबके सहयोग की जरूरत है। प्रत्येक आदमी का यह कर्त्तव्य है कि सार्वजनिक जीवन में एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करे। समाज की उपयुक्त और पर्याप्त भागीदारी के बिना बेसहारा लोगों को तुरंत राहत नहीं मिल सकती। उस पर अकस्मात एक ऐसी मुसीबत आ गई है कि वह अत्यंत परेशान और दुखी हो गया है। आप भी इस मामले में सम्मिलित हैं अतः तुरंत स्पष्ट करें कि यह कार्य कितने समय के अंदर पूरा होगा। तभी इसकी स्वीकृति पर विचार किया जाएगा। स्वीकृति प्राप्त होने के बाद ही आगे की कार्रवाई हो सकेगी। समाज के सभी वर्गों का यह कर्त्तव्य है कि भूकंप पीड़ितों की मदद करें ताकि इस आपदा से उन्हें बचाया जा सके। उनके लिए पर्याप्त राहत सामग्री के वितरण की व्यवस्था होनी आवश्यक है।

अभ्यास 20.1

1.

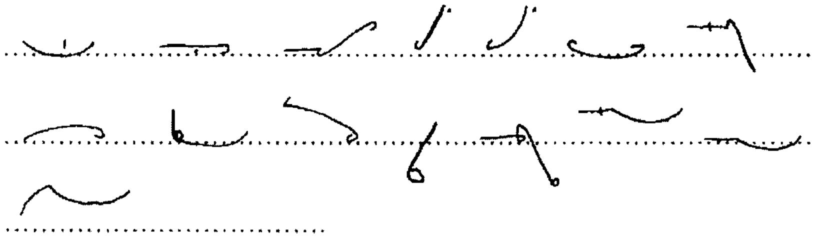

2.

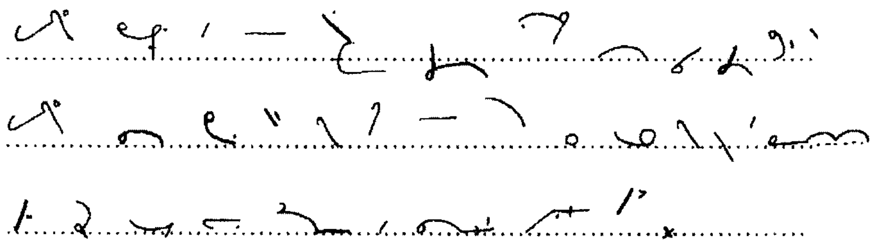

3. 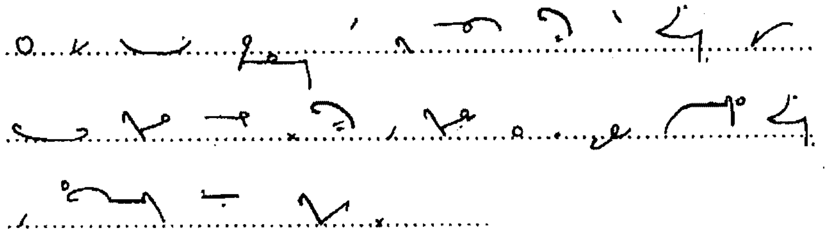

4. 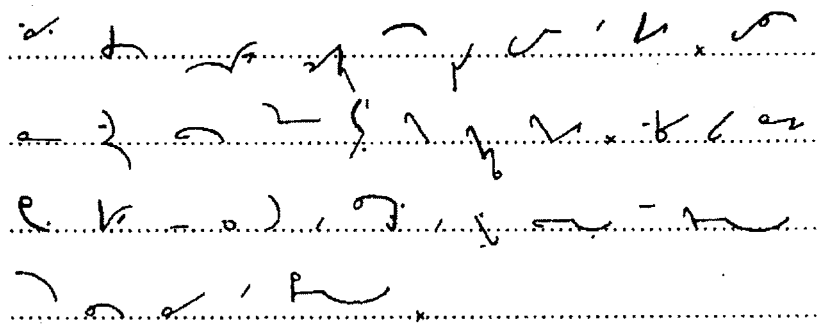

5. 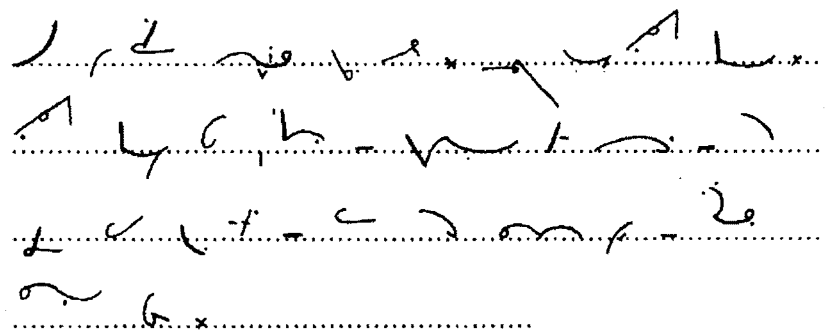

6. 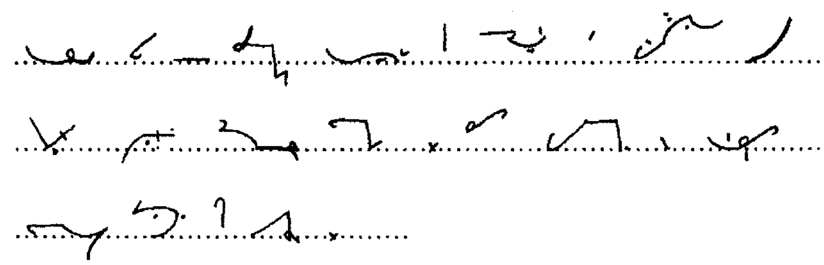

अभ्यास 20.2

यह स्थान बड़ा रमणीय और सुंदर है। यहां ठहरने की व्यवस्था करनी चाहिए। समुद्र की लहरों के बीच वह खो गया और हम देखते ही रह गये। इस देश में अभी कुछ लोग अशिक्षित हैं। उन्हें किसी प्रकार शिक्षित करने के लिए तुरंत प्रयास करने की आवश्यकता है। लोगों को स्वच्छ पानी पीना चाहिए और भोजन भी समय पर करना चाहिए। जिस तरह से यह काम हो रहा है उससे ऐसा मालूम होता है कि इसको पूरा करने में बहुत देर होगी। मैं हर तरह से आपकी सेवा करना चाहता हूं परंतु आपको भी ठीक प्रकार से सहयोग करना चाहिए। आजकल अनेक संप्रदाय ऐसे हैं जो लोगों को हर तरह से गुमराह कर रहे हैं। मैं कार्य करने के लिए वहां गया था और मैंने सुझाव के तौर पर उनसे यह बात कही थी। उन्होंने मेरी बात मानने से इंकार कर दिया। अब इसकी जिम्मेदारी उनको ही दी जानी चाहिए।

अभ्यास 21.1

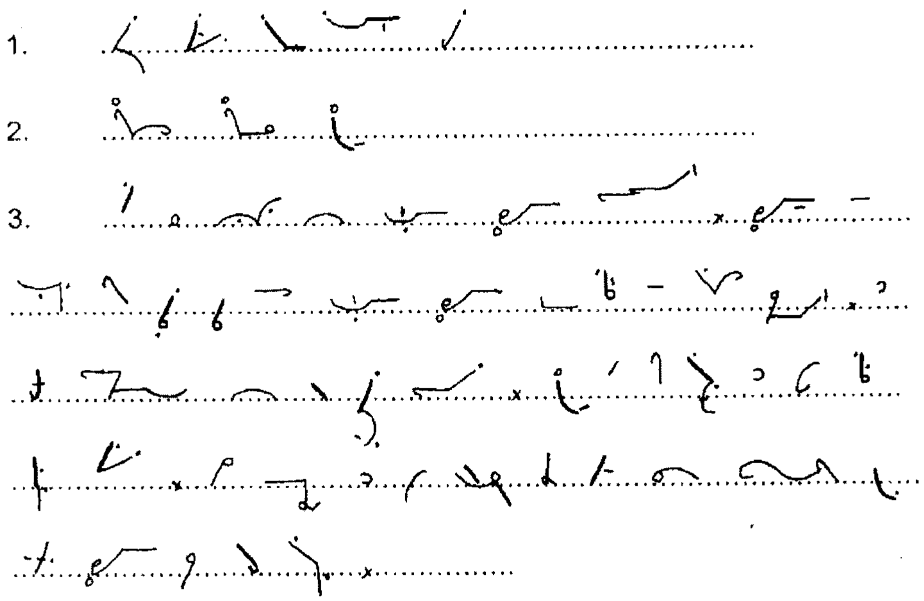

अभ्यास 21.2

एक समय की बात है कि कानपुर शहर का राजा बहुत कंजूस था। यद्यपि उसका राज्य समृद्ध था फिर भी वह अपने स्वयंसेवकों को पर्याप्त वेतन और सुविधा देना पसंद नहीं करता था जिस कारण उसके स्वयंसेवक कामचोर और आलसी हो गये थे। वह स्वयं भी अपने खाने-पीने में कंजूसी करता था जिस कारण शरीर से कमजोर था। वास्तव में आलसी व्यक्ति बदनसीब होते हैं जो साधनों के होते हुए भी उनका उपयोग नहीं करते। राज्य के कर्मचारी और स्वयंसेवक राजा से असंतुष्ट रहते थे और अपने कार्य में रुचि नहीं लेते थे। राजा भी स्वयंभू की तरह बैठा रहता था और प्रजा परेशान व दुखी रहती थी। शासन पर उसकी पकड़ मजबूत नहीं थी। पड़ोस के राजा को जब इसका पता चला तो उसने षडयंत्र रचा और उसकी सेना को अपने कब्जे में कर लिया तथा राजा को बंदी बना कर उसका राज्य छीन लिया।

अभ्यास 22.1

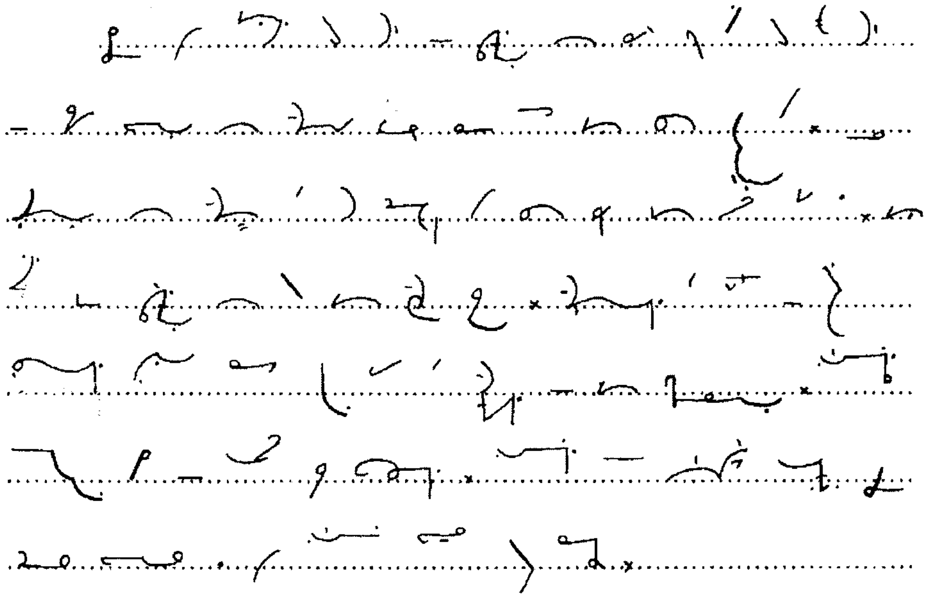

अभ्यास 22.2

आज के समय में यह नहीं कहा जा सकता कि कोई व्यक्ति ईमानदार है या बेईमान है। जिस तरह से हर क्षेत्र में आज लोगों का चरित्र गिर रहा है उससे ऐसा लगता है कि समाज में एक बहुत बड़ा परिवर्तन होने वाला है। आज हर तरह से व्यक्ति धन कमाना चाहता है चाहे वह रास्ता अच्छा हो या बुरा। ऋषि मुनियों का यह देश किसी समय अपनी सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता था परंतु आज इस सांस्कृतिक विरासत की ओर किसी का ध्यान नहीं है। सारे संसार का मार्गदर्शन करने वाला यह देश स्वयं अपने रास्ते से भ्रमित हो गया है। एक ज़माना था जब इस देश के चल-चित्र दुनिया के सामने एक मिसाल के रूप में रखे जाते थे परंतु पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति के जाल में फंसकर इस देश की जनता दिग्भ्रमित हो रही है। त्याग और सादगी का प्रतीक माने जाने वाला भारतीय नागरिक आज संपत्ति के पीछे पागल हो रहा है। ऐसी स्थिति में केवल नैतिक जिम्मेदारी ही इस देश की सांस्कृतिक विरासत को बचा सकती है इसके लिए यह आवश्यक है कि हमें अपनी प्राथमिक शिक्षा में चरित्र और देश प्रेम की शिक्षा पर अधिक बल देना चाहिए। सभी सरकारी और निजी स्कूलों में शिक्षा के लिए एक ही पाठ्यक्रम होना चाहिए।